मुधाधार को हैं। इनके पाछे सब को रस प्राप्ति हैं॥ ताते केसरी भाग
कुलनहू को शृंगार कीये॥ पाछे सगरे प्रकार सहित जसोदाजी पु
त्र को लें शृंगार कीयो केरावलि आरो॥ सो तब की रानि जी ने अ
पनी कन्या पास प्रश्न न को पालना में पोढाये॥ पाछे दूध सो
न्हवावत हैं॥ इन श्री वृषभानजी के यहां प्रागट्य प्रश्न उर
यहें॥ ताते श्रीरसुभस्वरूप को प्रागट्य श्रीवृंदावन के भीतर
मध्यान्ह समय हैं॥ सोयो प्रश्न न सो पंद्रह दिन छोटी हैं॥ तिनको
दर्शन व्रजमें काहू को नांही हैं॥ उहां की लीला मनवां रसों के आगो
चर हैं॥ सो श्रुतिरूपा कुमारिका के भाव सहित सोंनत हैं॥ ताते
तिलक भेट मध्यान समय राजभोग पाछे करत हैं॥ उनको
होइ रसरो स्वरूप श्री व्रषभानजी के यहां प्रगटी है॥ दूधसब
रसनमें मुख्य है॥ रसरूप द्रवीभूत है॥ नित्य रासक तो पाछे
केसरी साड़ी श्री वृंदावन कामरी शृंगाररूप स्यांमचोली तो अं
हृदयास्थित हैं॥ तहां प्रगट स्वांमिनीजी नहीं॥ सो तहां भाव
करि दर्पन में ध्यान करत हैं॥ कहूं जन्माष्टमी को वित कुलनहू
तहां श्रुतिरूपा के भाव तें जिनहू के यहां इसरे उत्सव में के
सरी धरत हैं॥ कबहू राजभोग में पहलो तिलक कहूं राज
भोग पाछे जन्माष्टमी कों पीतांबर ओढ़त हैं॥ दोऊ स्वरूप र
करसरूप हैं॥ ताते गोपी वस्त्र धमें मांखन मिश्री पीरो पान ब
ड़ी मिरच कोरपाक मेदा की पूरी भुजेर पाक सधानो दही खीर
सेव तोन कूंटा मीठो श्रपाक छाछ के वड़ा पंजीरी केल दुपागेंला
बूंदी सेव के लाडू में वाती रुंदी सकरपारा इत्यादि अठ सांमि
ग्री जन्माष्टमी की नांई॥ ओरता पाछे आचमन बीरी पाछें रूपे
के थार में सांथिया करिके कुंभकुंभ को तांमें वृंनके दीवड़ा ध
रीये मुठीया॥ ध मुद्रा धरि दोऊन को तिलक करीये दोऊनको

अक्षत लगाय बीड़ी दोऊ ओर धरि मुठीया वारि आरती करीयें
दंडवत करीये ५ स्त्रीजन भेट करें॥ जो हमारे सगरे घर के अधिप
ति के आधिपति प्रगट भई॥ अब आपने को इन द्वारा नित्यनौतन
रसकी प्राप्ति होइगी॥ ताते श्रुतिरूपा कुमारिका आदि सगरी स्वा
मिनी भेट करत हैं॥ सखी हू ललिता विसाखा आदि अपनी
स्वांमिनीजी करत हैं प्रगटी हैं॥ ताते सगरे मंदिर में हरदी को चौ
कसगरो व्रजहू स्चोमयो रसरूप॥ वृषभानजी इस रो उत्सव की
यों॥ एकु जन्म को एक नेत्र पोलेय हहू इनो भयो ताते गाये हैं॥
जो जैसुनंद भवन में उमग्यो ताते हू नो होत हैं री॥ तथा श्रुति
रूपा कुमारिका को वृंदावन में प्रागट्य हैं॥ सो उत्सव और
वृषभानजी के घर प्रागट्य ये दोऊ उत्सव मानें॥ वृंदावन में प्रा
गट्य तरस रूप नित्यलीला करस्या पे॥ तहां जायवे कौ गम्य
नांही॥ ताते दोऊ उत्सव वृषभानजी के घर सगरी स्वांमिनी
जी मानें॥ सो ताते इनो मुख स्त्र र रास जो ने गायो है॥ सो ता पाछे
इस रे दिन यही शृंगार रहे॥ सगाई व्याह के गाइये॥ अथ दा
न एकादसी न धंवामन द्वादसी को भाव लिख्यते॥ भादों सु
दी॥ ११॥ ओर ता ही दिन वांमन द्वादसी होइ तो मुकट धरे
वस्त्र केसरी धरत हैं॥ कुलनहू इसरे दिन धरत हैं॥ अब जो
एकादसी को तव उत्सव द्वादसी को प्यारो होय तो दान ए
कादसी को नहीं आवे गय है दान एकादसी दोन के मुखी
या श्रीचंद्रावलीजी हैं॥ ताते इनके भावते हैं॥ उही पन भाव
हास्य कला सकरि निकुंजलीला सिद्धि करत हैं॥ दूध श्रीस्वा
मिनीजी को अधरामृत॥ दही श्रीचंद्रावलीजी को अधरामृत
प्रभु दान के मिस मांगत हैं॥ वेणु द्वारा गायन के सुधा को
स्थापन हैं॥ सो दूध दही आयो॥ सो भक्तन द्वारा सगरी स्वांमिनी

सोलेनहे ॥ जन्माष्टमी पाछें राधाष्टमी पाछें दांनयाते नित्यासिद्धावारे
भक्त प्रथम श्रुति रूपाकों सिखावत हें ॥ याप्रकार प्रभु को सबरे
हु ॥ ताते एकादसी को भई जो तो धामकि प्रथम हुती ॥ पाछें नि
त्यासिद्धा स्वांमिनीजी श्रीयमुनाजी आपनो भाव धरें ॥ संयोगर
स वियोगरस ॥ ताते दोउ मिलि जाय सको तो लाभे अंगीकार भ
यो ॥ ताते एकादसी को फलाहार दूध दही मुख्य उत्सव प्रगट की
ये ॥ ताते श्रीस्वांमिनीजी आपने घर में मुख्य एकादसी को उत्सव
श्रीनवनीतप्रीयाजी के संमाषे फलाहार आरोगे ॥ और श्रीआ
चार्यजी नित्यलीलावारे हें ॥ ताते आपने ठाकुर श्रीजी पास नांहि
हे ॥ यह भावते एकादसी को उत्सव क्रहे हे ॥ और रंस संबंध की
श्रृंगार रस की उत्पत्ति हु सार रस को हें ॥ ताते गोरस हू रस रूप हें
सो आज भक्तन सोर समांगत हें ॥ मुकट को प्रथम श्रृंगार हें ॥ जन्म
भये पाछें उद्योधिक मोर कला करें ॥ नवरस देर सो मुकट ध
रि रसदांन करें ॥ तथा मुकट भक्तन के आधीन रूप हें ॥ स्यामता
हे सो अंजन हें ॥ ऊपर छोगा हे सो वरुणी हें ॥ मोर एक कला कर
त हे ॥ और शास्त्र में सोरह कला और शास्त्र में चोसट कला क
हे हें ॥ ताहू ते अधिक जिनतें वन स्वांमिनी हें ॥ तिनतें कला
करि आपा रास वेको दांन करत हें ॥ पीतांबर धरत हें ॥ सो मुख्य श्री
स्वांमिनीजी करत हें ॥ ताते चोटी अपन वट वो छिया सव है धर
त हे ॥ तनिया निज स्यापन लाल सुथन की हरी मुहरी ॥ पीतइ
जार की स्याम मोहरी ॥ याप्रकार चोली की वाह रूप हें ॥ सुथन को
ऊपर को घेर भक्तन के हृदय रूप ॥ काछनी भक्तन के लहगा त
था साड़ी को सुनाव ॥ तथा कुफुदी वांधत हें ॥ काछनी दोइ रंग की
वो ढ़ा नधरें ॥ नित्यासिद्धा के भावते तीसरे श्रुतिरूपा कुमारि
का चोथे ॥ पांचमे सगरी व्रज की सांमिग्री ॥ ग्वासो जांमे मोरत हें

ऊपर सो हृदयरूप ॥ सोना पर कटिल्ल हमा वधत हें ॥ काछनीमें कि
नारी हें ॥ सो भक्तन के लहगा में साड़ी में लगी हें ॥ कुंडल मकराकृत हें
सो राकृत हें ॥ वेसर चित्रुक भमर लटकन कंठमाला वेदी पदिक हार
मणिमाल न्येजती माला वाजूबंद कंकण पोहोची जब रतन चोक
क्षुद्रघंटिका मुद्रका किंकणी नूपुर गुंजा ॥ नेत्रात्र नतां कुलई स्याम हे
भक्तन के भावसों मणिमाला हें ॥ सो भक्तन के भाव की माला हें ॥ गुंजा
हे सो भक्तन के नेत्र रूप हें ॥ विहार समय नेत्र लाल होत हें स्याम
पूतरी हे सो स्वेत गुंजा श्रीचंद्रावलीजी के भावते ॥ कछु श्याम
वरण होइ तो गुंजा पहराई यें ॥ तब सब भक्तन के में उत्तम प्रेम
प्रसंन होइ विराजे ॥ यही भाव चंद्रका में हें ॥ मोरमोर नी वत वे
जे तो माला पांच चंद्रका की माला तथा पांच प्रकार के फूलन
की वन थे भक्त एक में सखी सहचरी सब वनमाला में तुलसी
पात सब फूल सो चरण पर्यंत कंठ में स्वांमिनी कटि में श्रीचं
द्रावलीजी नाभि में श्रीयमुनाजी चरण पर कुमारिका दास्या
व सगरी व्रज भक्त अंग अंग में लपटि रहे हें ॥ वेणु श्रीस्वांमि
नीजी रूप वेत्र श्रीचंद्रावलीजी रूप दोनन में आपने रोकन के अर्थ
राजभोग में मुख्य दही होइ ॥ सेव तीन कूटा मीठा स्याक छाछ केव
ड़ा मीठो स्याक ॥ रीठो राते श्रीचंद्रावलीजी आपने मनोर्थ की सांमि
ग्री करि गोप भायो हें ॥ दही वेचन अर्थ आपने निकुंज में लेके आ
वत भई ॥ आभरण वोड़ा माला अंगराग सगरी सांमिग्री लेके
रामें लेवर सां तेते श्रीस्वांमिनीजी को लेके सधा विलछ वनमें श्रीगिर
राज पर आये ॥ तब श्रीगोवर्द्धनधर आपने अंतरंग सखा लेके दान
घाटी में रोके ॥ कबहू सांकरी खोर में रोके ॥ उगरे कोमिस रसउ
द्दीपन करिके ॥ पाछें निज मंदिर में तथा कुंज में विहार करत
हे ॥ सो श्रीगुसांईजी विस्तार करि दांनलीला में विस्तार करिव

रानिकीरो॥ राजभोगपाछे आरतीमेतीक्ही श्रीचंद्रावलीजीआ
पनोविरहवारनहें॥ न्योछावरकरनहें॥ भादोवदी॥ १२॥ वाम
नद्वादसीकोभाव॥ वांमनद्वादसीकेदिन अभ्यंग धोतीउपरना
कुल्हेकेसरीकटिमेखला॥ क्षुद्रघंटिकाकोअवतार भूमिरूप
कटिनांमे आभरण कर्मरूप कर्मभूमिपर होय॥ माहीतेत्रिया
सकिवरणताकोविस्तारकीये॥ पुष्टिमारगमेयातेउत्सवमांन
तहें॥ विष्णुपंचकवृत वैस्नवकोकरनों॥ एकएकादसीवरस
दिनकीसववारजयंतीमक्तउद्धारकहे॥ गोविंद परमानंद मा
धवंमधुसूदनं॥ निकानि विजागानी पातीहन्यवनः सच॥ इवि
ष्णुपंचकमित्येवंजत्तंसर्वास्वनासनं॥ नित्यंनेमित्तिकेकाम्यंवि
ष्णुपंचकमेवहि॥ २॥ नित्यान्यंसर्वथाप्रास्तेरातिस्यंसर्वथाव
पु॥ रितमुद्राधाररणविनापूजागनिस्फलकहे॥ सोयहांसेवाहे
प्रभुसमयकोदेखिकरे॥ प्रभुबेठेहोयतोरंचतिलककरनगाइजा
इकरें॥ पूजामेसमयघटिवाटितहोय॥ सेवामेएककलेवकौहै
कालंबात्रिकालंवाजितनोसेवाअपनेनेवनें तितनीहीकरें
अधिकनहीइतनेतिलकभगवद्चरणारविंदनेन्यारेकरें
वर्तुलंत्रियगांछिद्रं॥ ह्रस्वदीर्घतरंतनु वक्रविरूपवधाग्रभिन
मूलपदच्युतं॥ १॥ त्रिपुंउविजाछेत्र छोटोमोटोवदेनासिकाजप
तरीलकीरटेटोविरूपउजरोकांकरमांटीकोएकलकीरछोटी
एकवडीवाहोनकीनो॥ कारोऊपरतेवध्योदोऊभांहसोमिल्योहै
नीचेवीनावध्योअेसेकरिघटमुद्रासेवहीमेंसंप्रदायमुद्राजव
मनहोय तवहीधरे॥ मालातुलसीकीसुद्ध काष्टकदेवअर्पिजा
मेअोरदेवताकोवासनांहीं॥ कमलगट्टामेलक्ष्मीजसी
दारकोनिवास॥ तातेपुष्टिमारगीयमेकांमनआवें॥ रुद्राक्षके
[illegible]॥ [illegible]॥ एकादसीकोवि

ष्णुश्रृंखलयोगहोइतोएकादसीकोवृतनहोय उद्वादसीउत्सवसं
गहोये॥ न्यारोहोइतोधोतीउपरणाकेसरीकुल्हे राजभोगमेसेवध्या
छिकेवडामीठेरपाकनोनकूंदा राजभोगआयेपाछेसिंघासनआगे
कोरीहरदीकोचोकपूरे॥ पंचामृतसिद्धिकरि परातमेसाथियाकुं
मकुंमकोवेकीपरवस्त्रविछायसालिगरामजीतथाश्रीगिरध
रजीकोपधराईये॥ जललेसंकल्पकरीयें॥ भगवतश्रीपुरुषो
त्तमस्यप्रादुर्भावोत्सवंकर्तुनदंगत्वेन॥ पंचामृतस्नानकरीये॥ १
दूसरेघरश्रीगोकुलनाथजीकेयहांप्रदर्थेकटिनस्यपुरुषोत्त
मस्यवामनावतारप्रादुर्भावोत्सवंकर्तुपंचामृतस्नानकरिष्येयह
कहिजलअक्षतछोडितिलकअक्षतश्रीसालिगरामजीकोक
रितुलसीचरणारविंदपेवामनमेमहामंत्रसोधरिन्हवाईयेद
धदहीघृतबुरासहदपाछेएकसंखदूधएकसंखसीतलजल
सोपोछिकेसरिहाथमेलेके न्हवायप्रभुपासवेठायपीतांवरदोऊ
ठोरउढायतिलककरिमालापहरायकेकेसरअवीरचोवासो
खिलाईयेगुलालसोंकहूंमंदिरमेवसंतनाहीखेलेउत्सवकोभो
गआवे॥ सखड़ीमेदहीभातसेव॥ अनसखडीमेपनासकरपारा
एकफलारमहरीपाछेमोतीकोआरतीकरीये वडेघरवलेक
हफलारकहूंमहाप्रसादजेसेवडेनकीरीतिहोयसोतेसेहीक
रीये॥ मथुरेसजीकेघरमेश्रीगोपीनाथजीकोउत्सव॥ भादोसु
दी १४ जन्माष्टमीकोंसिंगार॥ सेवसीरादोयसांमिग्रीहोय॥
अथसांझीकीभावना॥ भादोसुदी॥ १५॥ सोदिनपंद्रहतोरूप
हलीलावररानेकीहें॥ सोश्रीठाकुरजीसखीरूपकरिआवनहे
जुगलस्वरूपविनाश्रीस्वांमिनीजीसांझीनांहीपूजनहें॥ यह
नंदगोपकुमारिकानंदरायजीकेघरसांझीधरतहें॥ तहांश्री
स्वांमिनीजीआवतहे॥ सोतहांश्रीस्वांमिनीजीकोसखी

रूपनांहीधरतोपरतहें॥ काहेतेवालभावसोसवनकेसंगपूज
नहें दिन २६ कोखेलहें॥ चास्योदिननित्यासिद्धाकेभावतेसां
झीटीकीकाजरकेसारिकुंमकुंमगुलालअबीरचोवाचंदनअ
छतकुंमकुंमहरदीअनेकफूलअष्टदेवीकोहोयहोयदिन
पूजतहें॥ देवीश्रीयमुनाजीरूपहें॥ तातेसांझीकोभावगोप्यहें
तातेसांझीकीआरतीथारीमेधरतहें॥ चोदसकेदिनकोरबी
बड़ीआरतीहोतहें॥ सगरेव्रजकोअंगीकारहें॥ धूपदीपनैवेद्य
वनासाखूरा॥ पाछेअमावस्याकोकहूंकोटकरें॥ तोपड़वाकोश्री
यमुनाजीमेपधरावें॥ चोदसकोकोटकरेंतोअमावस्याकोसांझी
कोपधरावे॥ अथ नवरात्रीकीविधि॥ नवरात्रकेनोवर्ततांमेपहू
लेदिनअभ्यंग॥ बागाकुलहतणीपेहारगरमीहोयतोखुलेबंद
राजभोगमेसीरासंगमिसरीमुख्यकाहूमंदिरमेयहरीतहेपु
हलेछोटेमोट॥१॥ फेनी॥२॥ सीरेवावर॥३॥ कपूरनाड़ी॥४॥ सखो
री॥५॥ गूंजा॥६॥ सेवाती॥७॥ नपची॥८॥ जलेबी॥९॥ काहूमंदिर
मेफिरतीजोमनआवें॥ सोराजभोगमेकरें॥ पहलेदिनसीरा
अवस्य॥ काहूमंदिरमेपूर्वकेपदमेसांमिग्रीकहेहें॥ सोगा
वतहें॥ सोईसांमिग्रीकरतहें॥ कुलहलालतनथं॥ नोदिनकीभो
सांमिग्रीनवधाभक्तिकेभावतें॥ पड़िवाकोजववोवतें॥ दसपा
त्रमेन्यारेन्यारेनोदिनसावधानकारिदसमीकोनिर्गुणकेभा
वसोमिलेगो॥ व्रजकोदेवीश्रीचंद्रावलीजीश्रीयमुनाजीरूप
हें॥ तातेदेवीकोमिसदनकेकुंजमेरमरगाहें॥ अथ दसरो॥
१०॥ विजेदसमी दसहेराकीभावना॥ तादिनअभ्यंगचीराकार
चोवीनथोंपसमाको॥ बागाकहूजरीकीकुलहसुपेद॥ तथास्व
तवस्त्रपरस्वेतफेटा॥ राजभोगमेसेवछाछिकेवड़ानीनकं
दामीठोरफाकरवीरवड़ापुवाअप्रोरनित्यकोनेग॥ तिवारीकेचोक

मेखड़ीकोचोकपूरनो॥ खडीकेदसकोठाचोकमेकरितिनमे
गोवरकेदसपूवाधरीये॥ एकएकपूवापरसिंदूरकेपांचपां
चटपकाकरीये॥ ऊपरसवनरेपीरेअच्छतडारिये॥ प्रभुको
जवाराधरायभोगकेसमयपीरेउनदसोपूवानपरडारियेर
सोभोगकेसमयचंद्रकावड़ीकरिदसजवकेअंकुरतांमेमेन
लगाइतिलककरिजवाराधरीयें॥ सुदर्शनपावनकीवारिअपरतो
करीये॥ दसपूवापरजवडारि॥ पाछेउत्सवकोभोगदससांटध
रिवागहेरआयघोड़ापूजियेंकहूघोड़ापूजिउत्सवकोभोगसे
दघाभोगसेनभोगसंगहीधरतहें॥ तथारात्रकेसैयामंदिर
मेंजवारासूंहीकेलाडूसेवकेलाडूमोटधरतहें॥ ध्वजाश्रीगो
वर्द्धनधरकेयहांनहोय॥ आसोहेजोश्रीरामचंद्रजीलंकाजी
तिकेआएहे॥ सोताहीदिनश्रीगोकुलतेसातोपालकीगो
वर्द्धनपूजाकोचलतहें॥ दसहेरातेश्रीनंदरायजीकेयहांव्र
जवासीनकेघरअन्नकूटकीसांमिग्रीगोवर्द्धनलीलागीत
गावनकरतहें॥ रासोत्सवनरहटीहोयहेउत्सवआदिश्री
वेद्यवनकोहें॥ आकासीदीवादसहेरातेकार्तिकसुदीपू
नोतांई॥ जवाराधरतसमयकटारीतरवारिपासरहें॥ गो
वर्द्धनमेनित्यलीलाकीसषीरहतहें॥ सोकलसलेआगेआ
वतहें॥ द्वारपरपालकीआवेतववेदमंत्रसोस्वस्तिवाच
नपढाय॥ आमकेपतातेपालकीपरजलछांटतहें॥ मागेते
आरतीतातेआरतीपलनांभोगधरतहें॥ अपनेअपनेमं
दिरमेवहूवेटीचरणस्पर्शकरतहें॥ भलीभईआपपधारे दस
पूवाकरतहें॥ गोवरको॥ ताकोभाववृत्तासुरकीपापिसव
अंकुरितभई॥ तेसेईदसप्रकारकेभावकेस्थापितकीए
सिदूरअच्छतसोपूजनकीये॥ सिदूरश्रीस्वामिनीजीअच्छत

श्रीचंद्रावलीजी इनदोऊ स्वरूपको अनुराग सबरेभक्तन परत्व
दि॥ नवभाव अंकुरित सबतन को होन भयो॥ प्रसिद्धि यह है श्रीरा
मचंद्रजी विजय करि आये हैं॥ ताजदिवसको दिन है॥ परंतु यह
पुष्टिमार्गमे व्रजभक्तनकी प्रीतियामें संभवेनांही॥ नवभावभि
नोदिनके मनोरथ करि दस सो दिन मेल तख्त ताभाके सबोपरि जिन
मेलेके रस मांड भोग धरत हैं॥ सो प्रथम समागमको दिन है
रागकान्हरो॥ सुभगगम हरत विजे दसमी को प्रथम समागम
पीया हुलास॥ इनी विनती करत प्यारी सो वेगि पधारो पिय
के पास॥१॥ मंजन करि आभूषण धारो कनक पाग पटकी
रसुवास॥ धीरधरो वृषभानुनंदनी प्रसन्न करि प्रीतम की
आस॥२॥ नवनागरि संगम नवनागरि नवसंगम वरनन
हरिदास॥ श्रीवल्लभ पद रज प्रताप तें निम्बन वल्लभ हर
यप्रकास॥३॥ मांट दसो केमुखारविंदचंद रूप सो मिनको र
स प्रभु लेत हैं॥ जबको अंकुरधरत है॥ सो जवको चिन्ह श्री
स्वामिनीजी के चरणमे हैं॥ तामें अंकुरधरि इनेनाकरिसा
नमोचन करत हैं॥ वसमाको वागा जरीकी कुल्हे श्रीचंद्राव
लीजीके मनोरथते॥ रागसारंग॥ विजे दसमी परम सुहाई॥
गोधन अगवाती यो पठाई॥ गोपसकल वेठे जो आई॥ कु
शल मनावहु सुभदिन मांई॥१॥ रजरानी रुजराजकुमरको
कीरनित नाति नाम्यो निवुलाई॥ आज हमारे वड़ो परव है तें
मसब वेठो आई॥२॥ करिसिंगार गिरधरन चंद कोले त
फुलेलसर रस सुखदाई॥ सुखनपी तस्वेत वागाधरि जाल
पागसिर पर यहराई॥३॥ काजर आजि मोदू टपकादेत्र
नतोरन अोरते नवलाई॥ रसिकप्रीतम सकल सकी यो वृषभां
नकुमरि जहां मनभाई॥४॥ इत्यादि भाव॥ अथ सरदऋतो

कीभावना रास प्रपोकी भावनां लिख्यते॥ यह उत्सवतो पुष्टिमार
गमे परमफलरूप हें॥ अष्ट भगवत्स्वरूप सोई समके या प्रकार
के अलौकिकमंडल आलौकिक चंद्र लौकिक चंद्र मेजिवे समध
आकासनांई उडराज चंद्रकी गमनन होनांई दोयभक्त एक एक
प्रभु कहु सो उस सह प्रभु॥ यह रात्रपाछे ससांक चंद्रमाकी र
लीलागीत गोविंदवारी अंसावतारकी जहांजितने भक्ततितने
प्रभु यह अलौकिक रात्रकुमारिकाकी चीरहरनमें दिखाये हे
तेसो प्रगट करिये॥ श्रुतिरूपाको पाछे वैकुंठमें दिखाये हते श्रु
तिरूपात न विरहकरिके सिद्धि होय रही हे॥ कुमारिका को अ
लौकिक साधन कात्यायनी पूजन करि सिद्धि भई॥ यह उत्सवमें
रात्रकी प्रपोलेनी॥ तातें निम्पलीला परमात्र नांही॥ जो जबरू
ष्ना होई सो न वही उडराज चंद्रमा प्रगट होई॥ ताहीते श्रीगोव
र्द्धन धरकुंजमे ठाढे हें॥ पाछे भगनि सिंघासन नांही कोहो नहि सम
कहे हस्त ऊंचो करि नृत्य करत हें॥ गिरराजधरे होतेनो राकाउंग
रीयुदे॥ जो रास हे याते परंवो अंगुरी उठाये॥ श्रुतिरूपा कुमारि
काको रस लेन अर्थ यह श्रपोको उत्सव अस्वंगत हो॥ दोनरा
का स्सी में नहीं॥ यह दोई उत्सव नित्य लीलाके हें॥ कहुं अस्संग
होत हें॥ के सर श्री स्वामिनी जीचंद्र न श्रीचंद्रावलीजी ललश्री
यमुनाजी॥ अबलाकुमारिका ललिता सगरी स्वामिनी मुकुटक
ककी नथ हीराकी॥ मुकटके वीच चंद्रकानथा वड़ो नग सो
श्रीस्वामिनीजी चारयो प्रोरसंगहल तम कहें॥ काछनी साड़ी कोरू
नावत न थांल हगा कोधे रस्त्र थन चोली की वांह कुंज उचिलि
नमरिणमाला श्रीचंद्रावलीजी परिकचोकी श्रीस्वामिनीजी
हृदयमे वेठी हें॥ धुकधुकी कुमारिकावनमाला भक्तनके भा
वते॥ पीतांबर रूप श्रीस्वामिनीजी अंग सो अंगवेष्टित हे न

तथा श्रीस्वांमिनीजीकी उनरी साड़ी हो॥ पीनांवरको अंचल फरक
तहो॥ सो यमुनाजी गुंजाभ कनके नेभ रूप वेरणु श्रीचंद्रावलीजी
रूप वेरणु मेर सश्री स्वांमिनीजीको अधरामृत वेभ दूश्रीचं
द्रावलीजी रूप॥ हांनलीताभे सहायक रूप॥ वेरणु रासलीलाद
प मुकुट की टोपी श्रीस्वांमिनीजीकी टीकी रूप॥ टोपीपास
लाल पीनांवर नीचे बांधत है॥ श्रीस्वांमिनीजीके उनरी रूपरा
जभोगमें सेवधन छिके वड़ा डपरेटा मुरीमे दाकी॥ पाछे संध्यका
रतीपाछें श्रृंगारवड़ो न होय॥ सेनभोग आवे नवचांदनीको
साज सिद्धि करीये॥ मंदिरके वाहिर तिवारी भारिके टई कोलह
विछे॥ ऊपरस्वेन चादरिविछाईये॥ तापरासिंघासनधरिस
पेदचंदोवा छपे दहिवाल गीरीतथांछपे दाषि छेंवाईस वसाज
छपेत वंदपाट नही॥ दोऊ ओर तनकीयाखिलोनानकीतत
कड़ी दोऊ ओर धरीयें॥ बांमाहिसासिज्याविछायतहां सामग्री
धरीयें॥ मगदके लाडूकु मनरिका चोरीठा श्रीचंद्रावलीजीवे
सनश्रीस्वांमिनीजीको स्नेह सव भक्तनके हृदयमें आवे॥ तव
प्रभु रमण करे॥ वासनी श्रीयमुनाजी सो पड़माढ़िये दोऊ ओ
रगाटीतकीया पास आरसोधरियें॥ स्वेतफेनीदहीवड़ादही
रोटीचंद्रकला उपरेटा सघोरीमेदाकी पुरीवासोंधी दहीवड़ा
मांखन वड़ा मांखन मिश्री खजाइ दूध खोवा॥ खोवाके लडु वासे
वानरमेवा नित्यवीड़ा धरीये॥ नाते इनीध रीयें॥ इलाइचीकु
मारिकावादामपिस्ता भुंजत हें॥ महारानीजीविर दुमेपरपके
करत हें॥ प्रभु जोग्य होत हे मिरचसीतकारक भुरश्रीचंद्राव
लीजीके श्रीअंगको सुगंध॥ निजमंदिर मेजगमोहनमे चोक
में सांथियाकरत हें॥ मंडला कारत्तां मेगुलालभरत हें व्रज
भूमि अनुरागरूप हरदी चोरीठा कोमडंनपरत हें॥ सोनापरअ

मनको सिंघासन पधरावत हें॥ हरदी श्रीस्वांमिनीजी गुलालकु
मारिका चोरीठा श्रीचंद्रावलीजी जहरवेल श्रीयमुनाजी नवभ्र
भुपर उजियारो आवे॥ तव आरती करि प्रभुको सिज्यामे पोढाई
ये सिज्यापास मुकट काछनी सगरो साज छावमे धरीये श्रीस्वां
मिनीजीको साज सिंगार को मुदा सैयापास धरत हें॥ गुलालशु
वीर चोवा अरगजा केसर घिस के कटोरा पास धरत हें॥ लहगा
जुगरा चोली आभरण तहांव संतषेलतहे॥ मे गला पर्यंत राज
को साज रहे॥ श्रीवृंदावन तीन प्रकार को हें॥ जाको जे सो भावता
कोतेसो फल॥ आदि दैविक तो व्रजभक्तन के संग हृदयरूप तां
गिरराज पर्यंत पवन कठिन कुचरूप उदरनाभि वन कोमल
कं हरानाकी सुष्पसैया॥ ये भाव लीवनकी ललनारूपम क्तनकोपे
मसुरति श्रम श्रीयमुनाजी कुंडल आदि अनेक अंग आभूष
ण पशुपक्षी यह भाव॥ अध्यात्मकमे वृंदावन यह भाव गिरराज
श्रीयमुनाजी व्रज कंदरावन कुंडल आगे लीलाकरी हें॥ सोनी
रथारूप भक्तिमे लौकिक जो निअपराध करे द्वादस अंगरूप वार
ह वन हे॥ तहां नित्यरास हें॥ प्रभु विचारे नवचंद्रमा गिरिराज
सिद्धि होयजाई॥ कार्तिक वदी ॥१॥ दीपदान करनों॥ नित्य ही न
वनेतो दीवा॥ ध घनके करि जल अक्षत छोड़े मंदिर आगे तथां
तुलसी आगे चार चोम कनके हृदय दीपरूप॥ १ कार्तिकवदी
११ को श्यांमजरीको वागा श्यांमचोरागोपी वहत्रम मेंराजभो
गमे नई सांमग्रीरगका दसी श्रीचंद्रावलीजीको मनोरथ हें
आधिपारोपरस हे॥ ताते लक्ष्मी आभि सारकहि॥ उजियारेके
लीरे कुंजमे आकास हदेवा हें॥ यह भाव जताये प्रभुकोस केत
द्वादसी को पीरीजरीको सो श्रीस्वांमिनीजी रूप द्वादसो अंग
प्रभुको विनियोग कीये॥ राजभोगमे कछुसां मग्री॥ अप्रथम

तेरसकोभाव ॥ धनतेरसकेदिनहरीजरीकोवागाहस्योचीराहरेरंग
मेंदोहहें॥ स्वांमप्रभुपीतमकदोऊमिलिकेंहरितभरे॥ दोऊस्वरूप
एकठेभरे॥ नवश्रुतिरूपकहे॥ धनतेरसत्यादिनजाकोप्रभामि
लेगोपीवह्मममेतथांराजभोगमेंसेवपीरीकेनीमाथउह्लोधक
मुख्यसौराधरनों॥ श्रीस्वांमिनीजीकोअधरामृत॥ तथांउदर
रूपकोमल॥ लौकिकमेंधनासालिजीवकोदूधसोधोवमहे
अपनोभाग्यमनावतहें॥ इनभक्तनकोजीवनश्रीठाकु
रजीहें॥ सोभिनकोह्मांभ्रासिंगारकरायसांभिग्रीआरोगायकें
अपनोजन्मसुफलमांनतहे॥ जरीहेसोश्रीअंगकोटिकंद
र्पलावण्यताकोस्तवनकरतहें॥ कार्तिकवदी॥१४॥ रूपचोदस
मंगलभोगनित्यकीरीतिमंगलाआरतीपाछेथारमेंवीड़ाधरि
प्रभुनकोपधराईये॥ ताराकीछांहधनकेदीवाचास्योंओरखवा
रिये॥ तिलककरिअक्षतलगाईवीड़ादोऊओरधरीये॥ श्रीगा
मांनीवारियेतीनवारबालककोरोगहोयनजरिसवजायरोवेन
हीहटकरेनहीतातअर्घजलसोंचररावसिंदपरसमर्पे॥ दीवादो
इचूनकेतेलभरिवातीवारियें॥ हाथधोयकाहूमंदिरमेचून
कोदीवाजहीपुतीयावारियेआरतीकरिहाथधोयअभ्यंगक
रावतहें॥ तमोदकसोन्हवायपाछेंकेसरलगावतहें फुलेल
उवटनाआवलादिलगावतहें॥ तवकहूस्यांमकहूंगोरदर्श
नहोतहें॥ धनतेरसकोएकवर्णहरेभरे॥ सोयासमयदोऊ
वर्णगौरश्यामन्यारेन्यारेदर्शनहोतहें॥ फुलेलस्नेहरूपलगाईये
उवटनारूक्षवियोगरूपहें॥ तातेसंयोगवियोगदोऊरस
कोअनुभवभक्तकरतहें॥ एककालमेंहीदोऊरसनिकुंज
मेंनीकाकांमकोजीतेहे॥ अब्दानपीरेश्रीनकोउह्लोधकही
डाहोऊहिंदिलस्वरूपजुगलकेभावतेंमुठीयावारिवारेअर्थ

धर्मकांममोक्षतथांचारिमुक्त॥ सारूप्य॥ सालोक्य॥ सामिप्य॥ सायुज्य
यहसुखआगेसवतुच्छहें॥ चारिकेउपरिदीने॥ आरतीचारिजोति
कीआरतीउतारिये॥ चारयोंभक्तनकोविरहतापवारे॥ सर्वांगह
र्षितभयो॥ अनुभवकीये॥ छहवारवारेसोषटगुणआश्रयकें
एकिकेबलधर्मीकीलीलारसमेंमग्नहेभई॥ आरतीवेगिकीयेसो
निरावरणकोअवलोकनशीघ्रहोहें॥ तथांवात्सल्यतेसीतको
समयहें॥ तबजलसोंस्नानरात्रकोश्रमनिवारणार्थ॥ तथां
तमोगुणीभक्तनकेभावसों॥ केसररजोगुणीकेभक्तनिनके
भावते॥ तत्पमेसीतलजलसत्वहें॥ पाछेअंगवस्त्रकीये॥ पाछे
निर्गुणभक्तमेलीनभये॥ तातेकोमलअंगवस्त्रतेजलनेकहू
नराषियें॥ पाछेनिर्गुणभक्तमेलीनभये॥ तातेकोमलअंग
वस्त्रतेजलनेकहूनराषीयें॥ पाछेनिर्गुणभक्तपेलीनभयेता
तेकोमलअंगवस्त्रतेजलनेकहूनराषियें॥ श्यामस्वरूपमेके
रितेलसमर्पणाकरनो॥ स्निग्धगौरहरस्पामदलितताजनवि
कनरसउलकेभक्तनकोंगोरस्वरूपभक्तनकेंउपरप्रग
टेहें॥ तातेफेरतेलकोकहाप्रयोजनहें॥ लालनासकोवा
गालालचीराअनुरागयुक्तहें॥ हीराकेआभूषणश्रुतिरू
पाकेमनोरथते॥ काहूमंदिरमेप्रथमतेललगावतहें॥ अंगो
जामेहरदीकुंमकुंमपीरीमिसरवीतुलसीडारतहे॥ श्रीचक्रा
मेपाछेकेसरिसोन्हवाइवागासुनहरीजरीचीराश्रीपादु
काजीहोइतोउनहूकोसियोग अभ्यंग॥ अंगवस्त्रपाछेंफर
फुलेलसमर्पराजभोगमेंधोईदारिरवीरखडासेवतीनकुदा
मोठोसाकप्रबादीवडासंधानकीरवीर॥ पाछेनित्यकीरीति
कार्तिकवदी॥३०॥ अथदिवारीकोपर्वताकीभावना॥ दिवारी
मेंसवकोभावप्रसिद्धहें॥ अभ्यंगलालआरतीमेंमोतीकोश्रार

मीमें कुला कार मंसिर सांथियाको री हरदी को ॥ तांमे गुलाल चोकी
हाकुंमकुंम सिंदूर अंगाली लगावत हैं ॥ मंडुलाकार करि कपूराब
लिखनाय त हैं ॥ कपूर रा भक्तन की कोइनी मंडलाकार मे हा पोजो
रे है ॥ अप्रसंगमे आवलाअ प्रर गजामें हरदी कुंमकुंम ने तपाछे
के सरिलगाई नअजल सो स्नान करावत हैं ॥ अंगवस्त्र करि
स्वे तजरी को वागा ॥ केहं कुलह स्वेत कहुं हीरा की कहू कुल
हलाल ॥ स्याम लाल गो पीवद्ध अभ्भमे रीवड़ा हसत कपोल रूप
कुमारिका के कुचरूप दही है ॥ आड़ा पांवरी अधर पंडनके
भाव सो तीन कुटामें मंगाकी वड़ी बनाई ॥ इम लीमिर च लोन
चास्यो के भावसो ॥ छाछिके वड़ा संजाव की खीर दीवड़ा सेव
मी होरपाक अप्रोरनित्य की रीत मो तीको आरती ॥ संध्यासम
यदीप दांन करत हैं ॥ नई धुजा आछी जो धरत हैं ॥ धुजा के पास
दीवा मारीको हा ऊपर सेयामंदिर ऊपर ॥ जगमोहन के ऊपरसिं
हपोर ऊपर बड़े वाधूके मंदिर ऊपर बेदे रखे रत इ रोपत ही
पक श्री स्वांमिनीजी के भावते ॥ दीवामें सुगंध घृषकमल को पराग
दीवाको जोतो पीरो लाल है ॥ सो भक्तन की प्रीति प्रगट भई हैं दीवा
की जोति ऊंची हैं ॥ सो उछलित भाव भयो हैं ॥ कजल को सलंगऊं
चे चट त है ॥ सो कसी है ॥ जो वनरूपजोतिबटी है ॥ सिखरके दीवा
चारि नांमें वानी चारि चारि चास्यो जूथपति के भावते ॥ चोकके
वीच दीपमालिका कुमारिका के भावते ॥ हरदीको चोक करत
हैं ॥ सोता पर धरत हैं ॥ ऊपर बड़ो दीपक तांमें वानी बतीसो
बेखंड मे सी बाड़ोइ दोइ वाती राकरक द्वार पर मार्ग में दीपमा
लिका श्रुति रूपा के अर्थ कांन जगाइ वेजांत हैं ॥ तहां दधपीव
त हैं ॥ नष्ट रा वकरिके गायन को सोरा बतहै ॥ गुरु कीमेलीरा
रला इरन को खवाइ राकांत मेक हेतहैं ॥ कछिर खेलन को साव

धांनर ही यो ॥ सोन वसि रनाइ के विदा भई ॥ गायन के मिस अग्रे नेरग
भक्तन को रमराके लोरेसावधांन करत है ॥ वागा स्वेत जरी के
स्वेन श्रीवे द्राव लीजो नार सोने के श्रीस्वांमिनीजी पाछे घर स्मा
इ पना अप्रोग त है ॥ अथ हटरी को भावनां ॥ पाछे हटरी सिंगा
रत हैं ॥ हटरी को आभूषण पहरावत है ॥ हार पहरावत हैं ॥ चास्यो
खंभन सो वंदनवार बांधत हैं ॥ केकरा जड़ाऊ कलस धरत हैं
छुद्र घंटिका बांधत है ॥ महाब रत था रंग रंग सो चित्र विचित्र
करत हैं ॥ वस्त्र सगरे आभूषण धरत हैं ॥ प्रभु स्वांमिनी को केम
वा मिठाई मेवा त र मेवा दी वड़ा के सरिक स्तूरीव रासज्जाइफ
ल जावित्री लोंग इलाइची दाना सुपारी के फूल केत रत है
पिस्ता दाख किसमिस छुहारा मखाना नारियल की गिरी
अखरोट बीड़ा तांबूल चोवा अतर कमल गट्टा साकर लाकरी
रैरी के रीपदी खाड़ की ॥ खिलौना माला नीचे कोरी हरदी को चोक तापर
गुलाल हस्यो रंग ॥ कुंमकुंम आदि भरि तापर हटरी धरत हैं ॥ चनाधा
नी सेकी अबीर गुलाल ॥ चोवा सिंदूर रकाज रदीवड़ा गेंद गलाकुमे
वाली सकर पारा आदि सगरी सांमिग्री धरीये ॥ सेयाके पासखि
रवरा वड़ा छाछि के महाराणी जी टहीमत ॥ तहां चोपड़ विछाय
दो ऊ स्रोर गादी तकीया ॥ तहां चास्यो स्रोर दीपमालिका सगरे
भिति के भेटधरे ॥ सो भेट बांटि के चोपड़ के आसपास धरी
ये ॥ जूवा खेलन के अर्थ मोती की आरती करीए ॥ चित्र विचि
त्र रंग सो भरि ॥ आधी पारी रात्रि है श्री नंदरायजी आदि गि
रराज की परिक्रमा को जांत हैं ॥ सोता केली दीवा धरत हैं
तापाछे श्री ठाकुरजी पधारत हैं ॥ सो नहांस्वेत जरी को ऊ
जिया रीभक्तन के निकुंज में पधारत हैं ॥ नव भक्त अपने अपने
निकुंज में पधरायसम रीरात्रि रमण करत हैं ॥ तानेक हुंकी

अगिधायारीरानिहे॥ जोयह रसकोज्ञान का हूको नहोय॥ पाछे सिंगा
रमारी बड़ो होई॥ देऊ नोरके बड़े जड़ाऊ हार पादे क चंद्रकासिंआ
मेखागा सहित पोटे॥ कहूं बागा बड़ो होई॥ पाछे भोर भए पे फेरि वही
सिंगार रहोई॥ चोपड़ मे गोट सोड़स प्रकार के भक्त है॥ सात्विका
दिभेद तो ऊं भरे॥ नमो गुराशि श्यामरंग बस्त्र पहरे हैं॥ रजोगु
णी लाल रंग पहरे हैं॥ सतोगुणी हस्यो त थां स्वेत रंग के वस्त्र
पहरे हैं॥ निर्गुण पीरे रंग के वस्त्र पहरे हैं॥ अथ चोपड़ को भा
व॥ पासा तीन धीरा अधीरा धीरा॥ तथां तीन प्रकार की मु
धा की क्रिया॥ देवाभोग्या मगवद भोज्ञा॥ सर्वभोग्या॥ एक
एक पासा मे चोदह १४ आंक हैं॥ चोदह विधा में निपुन बंध्या
दिक मे तीन्यों मत मुष्य श्री स्वामिनीजी श्री निरूपा कुमारिका
महारानीजी सब मे हो बड़ हैं॥ तामें बंध चोरासी॥ अधर रूप
और द्वादसी साकि हुं पद हैं॥ नीलामोग्री मा पुष्पागिरा का साकी
न्यो मुष्य लयोजया विधा रामरा प्रकाया चलि वेसिता पेद्वाद
समिले॥ ६ ध भरे॥ उडोपत॥ सात वनवि भवारी भाव अनुभा
व ये चारयो लेवे को चाहे॥ नारिकूप॥ रंग कां नरे॥ प्रभुतमक
अनूपमनारि॥ नेन व ने चोवी स चोगुने सोर हवदन चरनहै
चारि॥ १॥ चतुरा नन सो प्रीति पै तीन पति ताके एक पल कई
ननेन॥ श्यामस्वेन आरक हरि न पद चल न वे बोल ननहो
वेन॥ २॥ सात्वक राजस नाम स निर्गुण एक गुन्मद र्सन को प्या
वत॥ मो नमरो साधु ज्य मुक्ति फल त्रिविध रूप देख सुषपा
वत॥ ३॥ पहविधर खेल मच्यो रजमंडल दी पदिक री प्रगट
दिखाई॥ सूर्यरूप केज्यथा विराजत छवि पर द्वारके साव
लि जाई॥ ४॥ हरि मरत हो॥ नहो सोदा दोऊ भाई स्यारेस्या
रे बचन हैं॥ सो नहोंत जभक्त सो दा ले वे आवन हैं॥ अनेकहा

स्य कटा स करि भाव उदीपन करि पाछे विहार करत हैं॥ मेट है
सो है सहो स सो कीड़ा को अत्यंत उन्के हो है॥ आरतो सो अपनो
सर्वांग प्रभु पर वारे॥ अथ संत कूट की विधि॥ मंगला आर
ती को सत्र के सिंगार को तथा बागा को दर्सन न होय॥ ओसे ग
ल आदि के विराजे॥ एक श्री मुष को दर्सन न होय॥ सत्र की
विहार लीला छिपायवे के लीये मंगला आरती मे गुरु जन
दर्सन को आवें॥ तातें श्री ठाकुर जी सर्वांग बागा छिपायसी
न काल के मिस बागा दल आदि के विराजत हैं॥ गहर श्री नेदरा
य जी को हे वो होत बड़ो जमीदार पद रत हैं॥ सो सीत काल मे श्र
मु श्री नेद राय जी के पास गहर आदि के बेठत हैं॥ तथा नेदरा
य जी तो प्रभु के जागे पहले उठि के गृह को काम काज अथ
देह कृत्य करन को अथाई मे जात हैं॥ यहां प्रभु उठि के निजम
क न को प्रभु गदर के भीतर छिपाय के आदि के सवन को द
र्शन प्रभु देत हैं॥ तहां मंगला आरती भई गुरुजन अपने
अपने अर्थ गई॥ नव पन कगद र वड़ो करि भक्त राज के वाग्य
पर फेरि सिंगार करत हैं॥ दिवारो को श्रृंगार स्वेत जरी को वा
गा स्वेत जरी को कुल्लह॥ श्री चंद्रावली जी गोपी के भी तर लाल
है॥ सो मुष्य श्री स्वामिनी जी हैं॥ लाल जरी अनुराग प्रगट भयो
श्री हस्त मे लाल पोतांबर लाल दस्ताई को गोकर्ण कार ताको
भाव यह हैं॥ गाय वन की जहां चित्त को लगन होत हैं॥ सो ता हां के
संपुट मांहि रहत हैं॥ सो तेसे प्रभु के चित्त की लगन एजभक्त
न मे हैं॥ सो गोकर्ण धरि भक्तन के भाव मे मगन होय रहे हैं॥ गो
कर्ण नार ंगी रंग भक्तन को अनुराग कि नारी सो सवन को प्रीति
रूल मलात हो॥ या प्रकार श्रृंगार करि गोपी वर अभमे से वश्री
साई ओर रनिन्य की रीति॥ राजभोग में सेवती न छूटा मोठोरपा

भाव. ५९

छाछिकेवड़ा पापड़ संजावन को रवीर लपसी प्रवा वकुलीसिख
रनवड़ी । प्रोरनित्यकीरीति पाछेमोतीकी प्रारती ॥ पाछेकेरिश्री
हस्तमे पीतांवरधरे ॥ प्रथश्रीगोवर्द्धनपूजा तथांगायखिला
इवेकीभावना ॥ राजभोगधरे तवगोवर्द्धनधरीये । गोवर्द्धनको
वरकोचोकहरदीकोपूरिये । रजरूपतापरगोवर्द्धनसिलाधि
राजिवेके लीयेऊपरकेलानपोलना रोपीये ॥ ताकमेरूऊंलगाइ
गड्डिये प्रजाकोसाजसबपौसेधरीये । कुंमकुंमके थापादीजे
चालनीसोचोक गोवर्द्धनके चारयो प्रोर प्रारिये गुलालहरदी
चोरीठामलराकोहरदीसोरंगिये ॥ मलराके ऊपर कुंमकुं
मके टपका करीये ॥ दूधमांनसीगंगाको जलदही आरगजा
मलरा ॥ २०० ॥ बीड़ा ॥ २०० ॥ इनमोनवनेनो ॥ २२ ॥ तथा ॥ ६ ॥ बा
चवा ॥ ८ ॥ सोपाछिनहीं ॥ मलरामेनोवेसीरा ऊपरमठरी
रतापरलाडू ॥ रा कोरमरंजऊपररहोय ॥ वाहिरसेवकेला
दूतिनकोदर्शनहोइ ॥ सीराअधरामनमोटकेपोलाछतल
दुवाकुचरूपरात्रकोरमरामयो तातेभकमनोरथकरिकु
डवारोकरनहैं ॥ अउपांनरूपसेवकीखरिकुंडवारेमेहें ॥ सब
डीमेदहीभातकोवनेनोकरे ॥ तथांअनसबडीमेखीरऊपर
लोभरिकेधरीये ॥ श्रीमहारानीजीहवीश्रनचामरकुमारि
काद्वराअलिरूपामेंवासुगंधश्रीस्वांमिनीजी ॥ राजभोग
पाछेलालदस्याईकेटेरामापेवांधतहें ॥ यहुगिरराजप्र
जाश्रीठाकुरजीनें । सोजवजसोदाजीकेप्रत्रभयोतब
दजवासोनकेरीतिहें ॥ सोदसदिनलोमांथेसोटे पधरत
हें ॥ तवजसोदाजीदेवीआगिसगरेदेवकीपूजाकोमांन
ताकरी हि । पदिवांदिश्रजनकरोगी ॥ पुत्रकोनीकेराखियो
पाछेनंदरूपमहावनमेहें ॥ ताकेप्रजनमेपदिसगरेनंदरा

यजी आदिगोपवांधेहें ॥ तथां जमुनाप्रजनमेदेवीपूजनमेवांध
तेहें ॥ यहगिरराजप्रजाश्रीठाकुरजीनेसबसोवडोदेवनायेता
योहे ॥ सोताते सगरेव्रजवासीहेरावांधतहें ॥ ग्रथवालालप्र
नुरागरूपपीरोपीतरूप ॥ सोगोवर्द्धनप्रजाके आनंदमेप्र
नुरागप्रीतिहृदयतेउछलितहोयकेंसर्वांगमेफेलिकेमांथे
मेंवाहिरउलरुलात्तहें ॥ वेंधनगांठिहृटसोप्रमपरीति सोवां
धिरहेहें ॥ इजमकनकेवसहें ॥ पाछेप्रभुपधारे तबवालनी
कोचोकप्ररतचले ॥ गोवर्द्धनपासआइविराजे ॥ नवपालनो
अधरामतरूपमोगआवें ॥ मिश्री श्रीस्वांमिनीजीकोल
पनलमहारानीजीकेप्रश्री चंद्राधलीजीमिरचकुमारिकाको
सोनकारमोगसराद्वीशाधरीयें ॥ संकल्पकरनोसकलसोभा
तसिहूचयें गोवर्द्धनपूजाकरिष्ये ॥ यहकहिश्रासनछोड़नों पा
छेसंखहाथमेलेप्रथमजलसोपाछेदूधसोंसगरेगोवरकेगोव
र्द्धनहूसरेस्वरूपकेहृदयरूपहें ॥ तातेश्रीस्वांमिनीजीके हृदवा
ईये ॥ गोवर्द्धनहूदूधसोपाछेचंदनअरगजालगाइपहरायें
न्योछावरकीजे हरदीकुंमकुंमकेथापादीजे ॥ गोवर्द्धनकेऊ
परपाछेउपरनाढायगोवर्द्धनकोउढाईये ॥ पाछेकारीमरि
वांमदिसधरिधूपदीपकीजे ॥ पाछेकुंडवारोभोगधरितुल
सीसंखोदिककीजे ॥ सबड़ीमेदहीभातधीरहहाथ तेराक
रिसमयभरे ॥ आचमनमुखवस्त्रकरीये ॥ बीड़ाधरिआरती
करीये ॥ तापाछेग्वालनथांदूधघरीयाकेमांथेउपरराखकें
धिपाछेपीछेथापिकुंडवारेकोराकहांडीहाथमेदीजेपा
छेकीर्तनीयाकोदीजे ॥ पाछेगोवर्द्धनसिलाकोप्रभुपासप
धरायअपनेश्रीठाकुरजीकोपीतांवरउढायपाछेगायखि
लाईये गोवर्द्धनऊपरजाइकेमानसीगंगापरितिश्रमविहार

रूपीरस हृय श्रीस्वांमिनीजीकेभावते सेषकेठाकुरजी हरही प्रीतम
पकुंमकुंमअनुरागरूप॥ अरगजाविरहताप निवारक उपर
रांगोवर्द्धनओढे॥ सोसाड़ीरूप हस्चारकेपीतांवर गोवर्द्धनसि
ताओर प्रभुदोऊओढे॥ रसगोप्यकरराताथ प्रभुपनाओरे
गे॥ अधरामृतपाछे हंडोनकरि प्रभुकोपधराईये॥ मंदिर
मेंआवनगाईये॥ गोवर्द्धनधुजिकेधरआरे॥ द्वारपरआ
वेतोआंतरग सोस्वास्तिवावनपटाईये॥ आंमकेपत्तासोजल
कलसकुमारिकामेंगलरूपभरिआवे॥ तांमेनेवारि प्रभुको
डापीपरछांटीयें॥ कहद्वारपर आरती श्रीयसोदाजीकेभा
वतेहोतहें॥ कहूंनहीं प्रभुकोसिंघासनपरपधरायभोगधरी
ये॥ पाछेअनकूटभूरि वेकीनेयारीकरीयें॥ मंदिरकेचोक
मेंनथातिवारीमें वाहिरकोरी हरदीकोचोकपूरियें॥ सोनाप
रखीड़ाघासकोधरीयें॥ तापरपातारिविछाईये॥ चांदनीविछा
ईयेनवनेनोअनस्पनहीप्रथमसेवओरघतरंचकडारीये
पाछेभातसनतनरहकेधरीये॥ साठीअवस्यकरीयेदूजके
चांवरसाठीहकुमारिकाकेभावते थोरोसोडारिये॥ औरआछो
चांवरकरीये॥ सगरेभातकोगोवर्द्धनकीनांईपंभीकोहाथ
देदाबिकेऊपरवीचोवीचकधरीये॥ चिन्ह प्रभुकीओरहे
॥अथअनकूटकोभावना॥ पाछेगेरूआचारिचास्चोकोनेखो
सिये॥ चिन्ह प्रभुकीओररहें॥ चक्रमुषरूपाचित्रनासिकाके
नेत्रवेसारिरूप चास्चोगेरूआभुजारूप॥ मातश्रीचंद्रावलीजी
तिनकेसेसभुजादेस श्रीस्वांमिनीजीकीअपवाचास्चोस्वांमि
नीरूप स्वांमिनीजीकेपाछेश्रीयमुनाजीवांमभाग श्रीचं
द्रावलीजीकेपाछेकुमारिकादक्षरारूपकेसारिचंदनाई
छिरकेपाछेंजलसीकीमालापहराइ श्रीस्वांमिनीजीकेअंग

कोगंधरूपचास्चोकोनेचारिहारिचनाकी श्रीस्वांमिनीजीउरहृषु
तिरूपाअरहरमहारानीजी मूंगकुमारिकाठादेमूंगकुमारिका
कोमनोरथहें॥ वड़ामठाकेवड़ानिजभक्तनकेभावकीदीवड़ाहे
डकाररायकेभाव॥ वड़ीमूंगकोउर्दकीव्रजभक्तनकेहृदयरूप
मिरचवड़ीमुष्यकोसीतकार॥ तिलवड़ीश्रुतिरूपाकेअधरपेस
नपापड़हृदयरूपश्रुतिरूपाकोकचरीयानवयरागकेमकाति
नकेकुचरूप दहीभातश्रुतिरूपाकेभावते॥ सिखरनवड़ीश्रीय
मुनाजीसेवअोसाईमुष्यस्वांमिनीकेअधररूप मूंगकीपकोरी
नपांघनकीतरीमाजीदहीमेतपांकवीमेंश्रीयमुनाजीकेकुं
मारिकासेवकीखीरस्वांमिनीजीमानिकाकीखीरश्रुतिरूपा
चामरकीकुमारिकासेजावकोश्रीयमुनाजी॥ तवापूरीश्रीन्ध
सिद्धाचास्चोमेंछड़ीयलदारउर्दकीश्रीयमुनाजीमूंगकीकु
मारिकाकरीपोरीमुष्यकेभाव॥ लोनकेदामेचास्चोचनामुष्य
चोरीठाकुमारिकामिस्चश्रुतिरूपाजनतश्रीमहारानीजीरता
लचकनाश्रुतिरूपाकटीराईकीआमिलाडारीकुमारिका खीर
साठीकुमारिकाघतकेकुडाचास्चोजूथपतिकेस्नेहरूप॥ दक्षरा
दिसवड़ाबांमादिसखीर॥ साकवांमादिसकेदमूलदक्षरादिस
फलमेवातरमेवावांमादिसमोनीभुजीछोकीवेसनकीलपेटी
चकनानीवूआदापाचरी॥ सीतकालपनामिश्रीकोंश्रीस्वांमि
नीजीकेअधरामृत पांडकोपनाश्रुतिरूपाकोअधरामृतपीरो
फेनीश्रीस्वांमिनीजीकेमुष्यरूप॥ स्वेतफेनीश्रुतिरूपाकेमुष्यरू
पकावरपोरेमुष्यश्रीस्वांमिनीजीकेहृदयरूप स्वेतवावरश्रु
तिरूपाकेहृदयरूप॥ सेवकेलाडूश्रुतिरूपाकेकुच देहीसकीकु
मारिकाकेकुच॥ गेरूआगुड़केमरेकुमारिकाकेकंठमालप्रवासपो
नकेहृदयरूप॥ स्वेतसुहार श्रीचंद्रावलीजीकेहृदयरूपआोटा

द्रधश्रीस्वांमिनीजीको अधरामृत॥ खनमंडल मुष्यकेउदर रूप वकु
लीश्रुतिरूपाकेकपोलरूपतिलहैं॥ सोगुंदगुंदो अधर रहरसा
खसखसकेदानालगेहेंउकारस्यकेभाव॥ सकरपारापगेमुष्यके
नेत्ररूप॥ कपूरनाड़ीमुष्यकेहृदयरूप॥ लोगबारिचोलीकी
तनीरूप खरखरीपुरीहरदीरूप॥ मलाईमुष्यको अधरामृत
मांषनमिश्रीप्रभुके आतिनिकटधरीये॥ मुष्यको अधरामृत
मिश्रीअधरखंडनवेसनकोमगरमापुरीऊपरश्रीचंद्रावलीजी
कोहृदयमोनररस श्रीस्वांमिनीजी तथांऊपर श्रीयमुनाजी
मोनरमुष्यसराकोकटोरानिजभक्तनकेउदररूपसधानो
तोमसीनोगराकेमक्तउदररूपसधानो॥ तोमसीनोगराकेम
कदहीश्रुतिरूपासिखरन श्रीयमुनाजी मिठाईकपोलरूप
जल श्रीयमुनाजीसीरामुष्यवरासश्रुतिरूपा॥ कस्तूरी श्रीयमु
नाजीमगदकोलाडूवास्योकेमिलेचोरीहाकोमगदनित्यसिद्धा
कोभाव॥ मोहनलाडूमदरीकूटीकेकरे सखीनकोभावमांषन
वड़ामुष्यकेकपोल॥ सेवकेलाडूश्रुतिरूपाबूंदीकेलाडूमुष्य
केभाव॥ सोमवाकेलाडूकुमारिका॥ मनोहरलाडूश्रीयमुनाजी
इत्यादिअनसषड़ीनिकटसषड़ीदूरसोयाते गोवर्द्धनमेंग
कजनसबपासहें॥ ताते ओटभावकेभक्त आगेहें॥ कोमल
भावकेसकलभक्त उनकेपाछेदूरिहें॥ एककटोरामेंपिर
चपीसिकेंएककटोरामांटीकेमेलोनपीसेदीवउजलेवी
श्रुतिरूपाकेअधर॥ सेववेसनकीमेवानीमांषनवड़ाषी
रिवड़ा॥ अनकूटमेंप्रमाणनहीं॥ जितनोमिलेजितनोवनि
आवेंतितनोकरीये॥ कजलकोरामकटोरासषड़ीमेंनहीं
तथांअनसषड़ीमेरहें॥ श्रीयमुनाजीकेभावतेकटोकेद
यधोईकेखीरसिखरनआदिमेडारे॥ यहभावएकचपाटि

यासोतलजलछांनिकेंसेनकयडासोरांधिकेंरूपेकीकटोरी
तथांतामेपातरिकीतथांमांटीकीआरोगिवेकोदछरादिस
श्रीचंद्रावलीजीकेभावतें॥ जलश्रीयमुनाजीतांमेगुलावज
लश्रीस्वांमिनीजीकटोरीकुमारिकाचपटीयापात्ररूपश्रुति
रूपाझारीवांमदिसतुलसीदलघूपकरिकेधरीये॥ पाछेसेषा
दिककरीये॥ तुलसीस्वांमिनीजीकेअंगकेगांधरूपधूपकुमा
रिकाकोसौंभदीयश्रुतिरूपाआदिगोपभापांकोवोहोतदिन
कोमनोपैहतोमनमें॥ सोप्रभुकोनानाप्रकारकोसांमिग्नीअ
पनेहाथसोकेसेआरोगाईये॥ तवप्रभुभक्तनकेमनोथेपू
रणकरणार्थगोवर्द्धनपूजाकोमिसगोवर्द्धनद्वारासबकेहृ
भावकीसांमिग्नीअंगीकारकीरे॥ तातेदोयकरिश्रुतिरूपा
विरहवारत्तहें॥ सखेदिक श्रीयमुनाजीकेजलकोंआधे
देविकसंपहें॥ रेखाछप्पाकेकेठाकुरहें॥ पाछेवीननीकरी
ये श्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजीआपनेगुरुनकीकांनिकरि
हेंउनेतकरिवाहेरआईये॥ तेरालगायकांनिकहेतेविगरी
सांमिग्नीअधरामृतरूपहोतहें॥ भीलकोबाबाजीसेवकक
रिआपसे॥ सोकूंठिनकरने॥ परंतुकांनकांनकहिप्रभुनकोना
नेकूंठिनआरोगनीपड़ी॥ तातेजहांकांनिकहीये॥ तहेंनि
श्चयप्रभुआरोगे हें॥ यहभावहृदयमेंद्दढराषनों॥ दोयघड़ी
मेंआवमनकराईयें॥ काहेतेंदोयघड़ीकोएकमहूरतहोत
हें॥ दोयघड़ीपाछेदूसरोमहूरतहोय॥ तातेघड़ीएकएकके
(भीतर) ऊपर दोयघड़ीकेभीतरराजभोगसराईयें॥ सोपुष्टि
मारगमेंनेंमनहीहें॥ जितनोसांमिग्नीतितनोसमयजावे
सबकोजेसोभावजानिअपवेगिदूसरावेंभावविनासबवषांए
खकोप्रेम नों॥ पाछेआचमनमुखवस्त्रकरायवीड़ाजितने

वनिस्रावेनिन नेस्रारोगाईये॥ पाछेंदोइ घडी सांमिग्नी सहित दरस
नहोई॥ स्रनकूट को रसोई स्रारोहे रहोई॥ माटी के पात्र मेंन पांपां
नड़ा के पात्रनमें भोग धरीये॥ सातदिन गिरराज धरिवे को पद
माव॥ व्रजभक्तन को निर्भे कीये॥ जो ईद्र सों नेसमुद्र को जल
वरसेगो सोभिनमांही॥ नथांश्री सुबोधनीजी मेंलिखे हे प्रभु
को सात मोव र्षलग्यो॥ सोमव्यवहार वर्तनाई वरूणरागकी लीला
कीयें॥ स्रथ ईद्रको पको माव॥ स्रवसान में धर्म की लीला
मेंईद्र को कहा प्रयोजन॥ स्रंन्याश्रय सगरे भक्तन को मिट
से॥ गोवर्द्धन रूप स्रापनिनको प्रगन स्राश्रय करायेपाछ
कारदर्शन दो इघड़ी होई॥ पाछे मोती की स्रारती रंगभरि
होई॥ पाछे योछावरिकरीयें॥ पाछे मो गसराय जगेधुवाय
उत्थापन को समय होय तो स्रनोसर नहोय॥ वेगि होइ तो
स्रनोसर कराईये॥ पाछे नित्यकी रीति॥ कार्तिक सुदी॥
२॥ भाईदूज को भाव ना॥ भाई दूज को श्रीयमुनाजी-पोने हे
नवजन मराजन ने कही जो तुलारो ना मले इगो जलपांन करे
गो सो मेरे लोक में न स्रावेगो॥ श्रीयमुनाजी को स्वरूप प्रागट्य
केवल प्रभु की लीला जलरमण कराये हे॥ श्रीठाकुरजी
स्रोर व्रजभक्तन को रमण मिलन सिद्ध कराये हें ताते
व्रजभक्त श्रीयमुनाजी को प्रसंन करराखे श्रीयमुनाजी
को स्रंगीकार तरिनजगत श्रीठाकुरजी को पधराय श्रीयमु
नाजी को नामलेव स्रभुपरण॥ स्रन्यंग सांमिग्री स्रारोगा
वत हें॥ तिलक स्रारती करत हें॥ तहां श्रीयमुनाजी नाई
के स्थान हें॥ नवव्रजभक्तन के भाई पिता पुत्र मित्र सुहृद
यत्सर्वस्व प्रभु हें॥ सो पंचाध्याई में कहे हें॥ यत्पत्यपत्या
सुहृदामनुवृत्तिरंग स्त्रीणां स्वधर्म इति धर्मविदात्वयोक्तं स्तव

मेनरूप देसपदे वई ईषेप्रेष्ठो भवांस्तनुभृतांकिलबंधुरात्मा
१ या प्रकार सगरो संबंध प्रभु में हें॥ बच्चलाल पाट को लाल
चीरा नथां लालजरी की कुलह॥ स्रवतार की लामें सिंधुरूप
को कोमल भाव व्यापिवे कुं ठाढवे श्रीयमुनाजी से बंधीना
व॥ जलक्रीड़ा ने सीनवें धौपात को बागा विहार में श्रमनिवा
रीदहीमात स्रादि मंगला स्रारमी मोती के लाल बागा स्रनु
रागरूप कुलह॥ बागा में कि नारी श्रीयमुनाजी को डलक
लाल रहे॥ राजभोग में पहले पीचरी को थार स्रावे॥ स्रनकू
टमें कढ़ी पकी स्रारोगे॥ ताते हलको पोजन दही भात दवी भु
न स्रीपहू रानीजी॥ खीचरी कुमारिका को कोमल भाव घृत
श्रीस्वांमिनीजी को प्रेम है॥ पापरक पोलखें इनसघाना सोन
कार कवरीया स्रादि सब छाछ केबड़ा मोठे रथाक तो नह
दा नित्य को राजभोग कढ़ स्रनकूट को स्रनसब ऐसे सांम
ग्नी या प्रकार सगरी सांमिग्नी सिद्धि करि पाछे तिलक करि
ये फलरिध दावाजे दोय ब तरकुं मकुंम स्रक्षत लगाईकर
बीड़ा॥ धरि स्रारती होत हें॥ सन्तकी स्रारती मुठी पावा
रिवारि के स्रारती मे मुठी पामे कुंमकुंम लगावत हें॥ स्रनुरा
गउमज्यो हे स्रारती की जोति स्रारती हृदयरूप॥ स्यो निफूल
हृदय में ने स्रनुराग फूल्यो॥ पाछे धूपदीप तुलसी संपोलि
कभोग स्रावे कहानि लक कारि भोग स्रावे॥ पाछे राजभोग
की स्रारती होय॥ स्रावस्यडत्सव की इस री स्रारती चहे
यें॥ धरानंद करन कबेटी है सोनाको नाम सहोड़ा है॥ ताके
घर पधारे हे॥ वहिनिने स्यो तो की पो है॥ तथा वर सोने मेए
कउपनंद की वहनि रहेन हें॥ मेनानाम है सो नाहू केघर प
धारे हें॥ नंदजी के कुलकी वहनि हें॥ सो सगरे गोपउ न

कोवहनि कहेतहे ॥ व्रजतहेनि नको नांम सुभद्रा हे नित्य केयर व्या
वतहें ॥ और व्रजभक्त तो मुख्य हें ॥ तहां गोप तो सब भोग करत हैं
पाछे नित्य की रीति ॥ कार्त्तिक सुदी ॥ ८ ॥ गोपाष्टमी की भावना
गोपाष्टमी को अभ्यंग सुकदकाद्य जी को सिंगार कहू अभ्यंग नहिं
सो याते गोपाष्टमी रास पूर्यो दांनलीला की एकादसी में नी
नउत्सव प्रबनार लीला के हे नित्य ही होत हें ॥ दिन कोने मन
हो जो फल नांदिन भरे ॥ ताते छकतकाद्य नीको ने मन ही गो
पी वहत्रम मे सांमिनी को नेम नां हो ॥ ऐसेई अभ्यंग नाहीं ॥ प्रब
नार लीला मे नेम हे ॥ श्रुति रूपा कुमारिका के अर्थ प्रगट हे
नव दांनलीला करी ॥ सो एकादसी व रसके व रस श्रुति रूपउ
त्सव मानत हें ॥ रास पूर्ण्यो को रासलीला करी ॥ ताते वरसो वरस
रासलीला श्रुति रूपा कुमारिका मांनत हैं ॥ उत्सव गोपाष्टमी
को प्रथम गाय चरावन को पधारे ॥ सो वरसके व रस श्रीजसोदा
जी ने दरायजी श्रुतिरूपा कुमारिका उत्सव मानत हें ॥ फेर मरज
हें ॥ ताते अभ्यंग नथां न रखत्र स्वामिनी हें ॥ राजभोग में सेरी रा
र ही भानत सेवा ॥ कछ स्वामिनी पीतांबर की गाती वांधे फेट भरे
मेवा मिठाई मोती की अपार नी होई ॥ पाछे नित्य की रीति काल
सघास वन को पधारे ॥ ताते प्रथम गौचारण के पद गायवे
श्रीसुबोधनीजी श्रीमहाप्रभुजी लिखे हें ॥ तथा प्रभु वन
मे पधारि बंजु रखिध छ रूपायेत थांर सुरमिलिके ॥ रथ को
ह रस की लीला कीये हें ॥ एवं रंदावन ने श्रीमानय इ धर्म जो
व्रज के वन के सबन के मनोर्थ पूरण कीये ॥ प्रभु को मिलन में
सबकी आसक्ति देखिके भई ॥ यह धर्म ॥ १ ॥ कचिद्गाशति यह आ
पो ॥ २ ॥ कहूक गान कीये ॥ तारसकी प्राप्ति भई सबन को प
ह आयेसिद्ध भयो ॥ ३ ॥ कचि नकारतहें साना यह कांम हहैसा

की सी नांई चलिनिक यात्मक वरराहें ॥ ताते ऊपर देवांगनां
इहां भक्ति नि चोगां न कंप्या ॥ तो पो लोकमे कांमको उत्कंठाभई
सो तव प्रभुकी सेवामे सब तत्पर भये यह कांम ॥ ३ ॥ मेघगंभा
रवचावा इह मोद मेघकी नांई गंभीर वचन रसको रुचि प्रथ
रामु नमें सेवककोमनकरि दीये हें ॥ वजके भक्त परस सोक
वहनि किसे यह मोस ॥ गौरज कुरि तकुंतल प्रति सोभा सी
ये ॥ अलक सो रति को उत्पाद कयाते रति को स्थाई भाव ॥ १ ॥ गौ
रज की व्याप्ति मुखपर देखिके गिलानि आई ॥ जो हमारे प्रा
ण पति के मुख पर धूरि हें ॥ सो विनत्सर रसको स्थाई भाव
॥ २ ॥ उहू व हां मोर मुकट अगत भूपर तनिमि लहें ॥ यह वीररस
को स्थाई भाव उत्साह तेभयो ॥ मोर के पंख को मुकट देखि वि
स्मय भये ॥ आश्चर्य जो केसे वनाये सहस्सा आश्चर्य को स्थाई
भाव ॥ ४ ॥ बन्य प्रसून वन के प्रसून धरे हें ॥ मां पे परस नमें
वो होत प्रीति हें ॥ फेरि हू वन में पधारे ॥ यह भाव भयो सो भया
नक रस को स्थाई भाव प्रसून हे प्रसून सूनहे ॥ तत्काल
मिलाय जाई ॥ असे को धारण कहो हमारे यहां धारण कर
यह हास्य भयो ॥ सो हास्य रस को स्थाई भाव ॥ रुचिरे क्षण
सुंदरने त्र कटाक्ष सहित अैसे प्रभु के दर्सन को वन में न ग
ये जाय ॥ ताते भयो सो करुणा रस को स्थाई भाव ॥ ६
चारु हास देखिके भयो क्रोध हमावि रहकरिके न मह हें आ
पुहसत हें ॥ यह रौद्र रस को स्थाई भाव ॥ वेणु को कांम में सु
ध्योनि के घर में कछ प्रयत्न बन्यो ॥ सो थिरभाव अैसे नि
बिद्यये हसानत रस को स्थाई भाव ॥ ८ ॥ अनुगैरनु गीतवकी
र्त्ति ॥ अनुचर करि कें कीर्ति गाइवे को अधिकार हें ॥ अनुच
र होते तो निलज्ज होई सब के आगे कीर्ति प्रभु की गावने यह

किरि स्नेह भयो॥ सो भक्तन को स्पर्श ईभा वप्रगट भयो॥ मनमे जांन्यो नि
कुंजादिक की लीला कर राखे हें॥ यहां मात्र चरणजां ने॥ जो बालक
गोवारन को गयो हें॥ कार्तिक सुदी॥ ८॥ अथ सयनो मीकी भा
वना॥ प्रभु को श्रृंगार करि दर्पन दिखाय सगरे परिक्रमा क
रे सगरे व्रजभक्तन को भाव॥ यही यात्रा तीर्थ प्रगट कछू नोत
न सांमग्री राजभोग मे होय॥ कार्तिक सुदी॥ ११॥ हरिप्रबो
धनी की भावना॥ अपसंग भद्रा टालि के देव उठे मर्यादा की
रीति॥ सो ब्राह्मण श्री राजा बलि को छलि के पाछे वरदान
दीये॥ चारि महीना वसारि तुमे तुम्हारे यहां रहेंगे॥ विष्णुरूप
सो॥ तारीमे सो नंदरायजी सालिगरामजी विष्णुरूप हें ति
नको उठावत हें॥ पंचामृत स्नांन करावत हें॥ रात्र के जाग
रण वेदविधि सों॥ लाल पाट के पुष्प वागा तथा लाल जरी
के पीरे पाट के॥ अलौकिक व्याह हे॥ ताते लाल अनुराग रूप
पीरे पुष्प के श्रृंगवारा पाट पूर्व की कुमारिका के भावको।
किनारी॥ श्री यमुनाजी के ठलक ठलका हट॥ कुलह लाल ज
री को विजय दसमी ने जरी को वागा वीच मे जराव को होय
भद्रा होइ तो सेन भोग संग फलाहार धरिये॥ स्वेत खड़ी
को चोक सगरे मंदिर तिवारी में पूरिये॥ सिज्या मे नहीं मंदि
र की तिवारी मे सांथिया नाना प्रकार के रंग के पूरिये॥ सग
रे व्रज को भाव हे कमलाकार॥ खड़ी गुलाल हरदी हस्वोरं
ग॥ वेलि द सो स्त्रिसा श्री यमुनाजी की लहरि रूप हें॥ ताप
र ईष को मंडप॥ चारि सो रह सो ईस गरे सको मन जन नहें
सो तामे वीच वीच मे गांठि हें॥ सो निकुंज नि कुंज के वीच मे आ
उहें॥ सो याते व्रजभक्तन के कुंज कुंज मे खेलत हें॥ रास खेले
हे॥ विहार हे॥ तहां वीच मे आइ हें॥ सो रसा भक्षन होइ

सो ते से ईईष मे गांठि हें॥ सो नि कुंज नि कुंज के वीच मे आइ हे
एक कुंज की एक लीला नहीं देषे॥ सगरे ईख को ऊपर खांध
देत हें॥ सो सगरे निकुंज गिरराज सो श्री यमुनाजी सो लग
रहे हें॥ ऊपर पत्ता हे॥ सो गिरराज के ऊपर के वृक्ष हे॥ पात
मोल हरि हे सो श्री यमुनाजी हें॥ सो ता कुंज के वीच चोकी धरत
हें॥ होय होय एक एक चारि चारि ईख के दीवा बारचो कोने ध
रत हें॥ प्रभु को रुई के वस्त्र धरत हें॥ रुईमि कन के प्रेम को
पत्र दगुदे॥ अथ व्याह खेल की भावना॥ चंद्रका॥ ४ न थां
७ मुकट के भाव सो अलौकिक मोर वांधत हें॥ गोपी वल्लभ
मे तथा राजभोग में सेव छावि के वड़ा नीन कूटा मीठे रपाक
कछु अन्न सखड़ी नथा षीरि अगी ठी दो यमुनि रूपा रचाषित
पाके होम कुंड हे॥ ताते खड़ी को गेरु सो रंगे हें॥ खड़ी श्रुति रूपा
गेरु भूमि रूपा॥ कचोरि सिंघाड़ा वोर चना को साक वेगन साकर कं
द कचरीया ईष को गड़ेरी॥ सिंघाड़ा श्रुति रूपा वोर कुमारि
का वनाकी भाजी सुष्प के भाव॥ वेगन श्री यमुनाजी के भाव स
करकंद गिरराज के भाव॥ ईष की गड़ेरी सगरे स्वांमिनी को नि
कुंज के भाव॥ कचरीया सषीजन के भाव ते॥ पाछे मंडप के वीच
चोकी पर गादी सहित प्रभु को पधराईये॥ पाछे तीन वार चो
की उठाय यह पढ़िये॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद त्यज निद्रां ज
गत्पते॥ त्वयाचोत्थाय माने न उत्थितं भुवनत्रयं॥ १॥ पर
नमे कुंमकुंम को सांथिया करि चोकी धरि सालिगराम सिला
तथा श्री गोवर्द्धन सिला को पंचामृत स्नांन कराईये॥ पंचामृ
त को साजसिद्ध करि संकल्प पढ़िये॥ भगवतः॥ श्री [illegible]
नमस्य देवोत्थापन पंचामृत स्नांन करिष्ये॥ पाछे जल अ
स्नान छोड़ि सालिगरांम जी को तिलक अक्षत लगाई पंचामृ

नतुलसी महामंत्र सो समर्पिये ॥ इथ दही घन बूरा सहन पा
छेरा कसंब इथ पाछे रा कसं ष सो जल जल पाछे केसर सो
हाथ मेले अंग वस्त्र करि प्रभु के पास बेठारि प्रभु को सालिगरा
म को माला पहराय तिलक करीयें ॥ पाछे रेफ रगुलेंद रस ना
ईदेइ होरधरीये ॥ केसरि चोवा अबीर गुलाल इत्यादिक फरा
ल भोग धरीये ॥ बंदी मांट सकरपारा सिखरन बड़ी मिश्री को
पना नरमेवा बेगन सकरकंद कचरीया तेरई बकी गड़े रीये
राम को भजी एक टुलिया मे पास धरीये ॥ धूपदीप तुलसी सें
बोरि करि पाछे भोग धरि समय भये भोग सराय आचम
न मुष वस्त्र करि बोड़ा धरीये ॥ मोती की आरती रूपे के दीवड़ा
की करें ॥ हरी की आरती रंग भरी मोती में मुठीया धवरि ॥ पर
ती करि परिक्रमा ४ करीयें ॥ पाछे दंडोत करि प्रभु न को सालि
गराम जी को निज मंदिर मे सिंहासन पर पधराईये ॥ ईष को मे
ड़प उठाय सिंघासन पर चारचो ओर धरीयें ॥ तेन आरती रा
कम हर रात्र गए होय ॥ पाछे जागरन के कीर्तन ब्याह खेल केरा
म के कुंज के गाईये ॥ एनको तीन भोग तीन आरती ए कमंड
प में भोग आयो ॥ आगे दीपमालिका को करीये ॥ तामें एक बड़ो
घृत को दीपक धरीये ॥ आगी ही होय छो दीवड़ी सगरी रात्र
रहे ॥ जागरन होत में सिंघासन को पेड़ो बिछो रहे ॥ त
व प्रभु को राजभोग आवे तब खेल के ठाकुर तथा राजभोग
पहले प्रभु को छोटे सिंघासन पर पधराय तुलसी पास पध
राय तुलसी के आगे एक संष जल को आरि पाछे संकल्प क
रीयें ॥ भगवान श्रीपुरुषोत्तम स्य तुलस्या विवाह करिष्ये म
जस्य सत्पष्टे फल हर मेवा भोग धरि ॥ आचमन मुष वस्त्र
करि बोड़ा धरि मोती की आरती करि ॥ पाछे प्रभु को तुलसी

परिक्रमा ४ करि दंडवत करि प्रभु को मंदिर में पधराय राजभोग
आदि सेन पर्यंत नित्य की रीति करीये ॥ तीन भोग रात्र के चौथे
मंगल भोग ॥ तीसरो बड़ो भोग होई ॥ बोहोत सामिग्री नाही भोग
के संग मंगल भोग हे जाय ॥ बूंदी पागी सो प्रीति पाग्यो हैं ॥ कुमा
रिका के कुच रूप बुंदी सकरपारा पगे सो मुष्प के नेत्र रूप स
गरे भोग में धूप दीप कुमारिका के अंग को जानि ॥ तुलसी पुष्प
के अंग को सुगंध ॥ सखे वादिक आय सुनाजी ॥ घेला सो कंकरा
नूपुरादिक को नाद भोग में देह र बड़ो इथ भात हर स रूप हैं ॥
प्रति भोग पाछे आरती की आरती ॥ आरती हू दव रूप मो तो गो
गार रूप दीवड़ा कुच रूप ॥ आठ दिना अष्ट सखी अष्ट श्री
रैरव वा सुख को आज वार न हें ॥ मुठीया ॥ ध चारचो नूपुप
निवार ना लेन हे ॥ कुमकुम अरु सनवोड़ा के सरि सिन्या मंदि
र में धरन हें ॥ कुलदेवी के पूजन की भावना ॥ देवी के नाम का
त्यायनी जोगमाया ॥ संकेत देवी ॥ वृंदा देवी ॥ चंद्रावली देवी
विमला देवी ॥ वनदेवी इनके आठ प्रभाव महादेव ॥ गोकु
लेश्वर ॥ गोपेश्वर ॥ कामेश्वर ॥ नंदीश्वर ॥ चकलेश्वर ॥ कुंडे
श्वर ॥ रुद्रेश्वर ॥ पूछरी को लोठा ॥ रासलीला सहायक हैं तें
दीस करपारा मांट में बासी सेव केल डुवा ॥ मोंटरा कसक
भोग के दस ह सधरीये ॥ दस प्रकार के भक्ष्य हे वीड़ा धधरी
ये ॥ चारचो जूथ पति के भाव ने राजभोग में ॥ सेवा बड़ा तो
न कूंदा मी होरप के उत्सव को अंग है ॥ तथा ईष में को मंडप
ई स रूप धराम न गंगादि हैं ॥ सो खेडि नाके व
न भोग है ॥ सोगि हार पाछे अनुपान हें ॥ सो रह ईण सो ईडा
२१ ॥ पंचमहाभूत सो सो रह भये ॥ तथा सोरह कला स्वरूप
पुरुषोत्तम की लीला रूप तथा आठ इध रत हे सो

अष्टविधनायका हैं॥ खंडिताविप्रलब्धा च वासकसज्जोत्कासि
धारिका कलहंतरिता चैव तथैवोत्कंठितापरा॥ स्वाधीनपति
का चैव तथा प्रोषितभर्तृका संयोगे विप्रलंभेता इत्यसो नायका
स्मृता॥ २॥ या भाव ने ईष को मंडप करिये॥ भक्ता चतुर्विध है चास्यो
जूथपति तथा तीन सो तीन्यो गुराकें राकनिर्गुरण तातें चास्यो के
हू मंडप करीये॥ सो चोसट कला है॥ तथा चोसट विद्याधारे
विकस्वरूपात्मक तातें चोसट हू करीये॥ बतीस सोडस कला
युक्त प्रभु सोडस कलायुक्त श्री स्वामिनीजी या भाव सो मंडप क
रीयें॥ चास्यो कोने आठ दीपक घृत के तथा चारि दीपक तथा
सोरह दीपक रस उद्दीपन सो धनहमें हरूप॥ दीपकु चतुरूप
ज्योति प्रगटकी कांति॥ चारि चास्यो जूथपति के अष्टनाय
का तथा अष्टसखीके सो रह कला श्री स्वामिनीजी प्रगट होई
रस उद्दीपन करत हैं॥ पंचामृत सो ह्मांन सो पंचामृत अष्टस
खहैं॥ ता करिके प्रभु विशेष निर्दोष भावको स्थित रहें॥ फल
दिकको वेधरते॥ सो अब होय फकन को घोवन पर पछुनाहि
भयो॥ प्रभु अंगीकार करेंगे सो तासमय परप्रगट होइ गो अ
अब ही अंकुरित हैं॥ तुलसी को विवाह भक्त ने मिलिके
कीयो है॥ रात्रके तुलसी ने चास्यो जूथपति को विवाह की
यो॥ चास्यो भाग है॥ सो ब्याह पाछे भोजन कीयो॥ रात्रके जागर
न सो रास विहार अथवा रत्नीलाविषे कुमारिका को पति
भाव नंद गोप सुत देव पति मे कुरुते नमः॥ तातें तुलसी
के मिस इन ह को विवाह हैं॥ इनको केवल पतिभाव हैं ता
तें इनके द्वारिकालीला को ह अनुभव हैं॥ पे भक्त उभय ली
ला विशिष्ट हैं॥ किन ने कभक्त न को व्रजलीला में ही प्रकास
हैं॥ श्रुतिरूपा अपोरम्पस्वांमिनीजी वृषभानजी नंदरासिक

को द्वारिकालीला को जानत नांही॥ किनने कभक्त को व्रजली
लामे ही है॥ व्रजलीलामें नांही॥ रुक्मिण्यादिक वसुदेव आदि
किन ने कभक्तन को दोऊ लीलामें अंगीकार हैं॥ व्रजलीला
द्वारकालीला में जैसे श्री यमुनाजी उभय लीलाविशिष्ट ता
तें तुर्यप्रिया जे कालिंदीजी जे चतुर्थप्रिया हैं॥ तैसें ई कुमारि
काराधामसहचरी हैं॥ तिन हू को जे उभय लीलाविशिष्ट हैं॥ ता
ही तें गोपीचंदन द्वारिका में हैं॥ यहां इनमें रासलीला नित्य
सिद्धाके नित्य हैं॥ अब नाम लीलामें श्रुतिरूपा कुमारिका
कें अर्थ वरदान दीयो है ते॥ तातें सरद पूंन्यो को करी॥ तातें
तहां श्रीभागवत में कहे हैं॥ योगमायामुपाश्रितः॥ भगवान्
योगमाया को आश्रय कीयो॥ तहां रासलीला भई॥ काहे ते
रासलीला के पति श्रीस्वामिनीजी हैं॥ इनके संबंध आश्रय
होइ नहीं॥ तातें सुकदेवजी राजसभामें अनेक प्रकार के भ
खि वेठे हैं॥ वेद स्तवो कर्मकांडी जोगाभ्यासी सो तिनके आ
गे श्रीस्वामिनीजी को नाम लीयो न जाय॥ तातें जो रासको प्रसं
ग उछलित रसमयो॥ सो रह्यो न गयो॥ तातें जोगमाया को है
मायाप्रभु की दासी हैं॥ एक अजोगमाया रिविकररात्र थे
सो दासीरूप आज्ञाकारी हैं॥ एक जोगमाया में लक्ष राध
कि रूप॥ सो जैसे प्रभु तैसें ई जोगरूप माया॥ तातें गोपाल
दासजी गाये हैं॥ भक्ति सुंदरी माया दासी वेणु रतिप्रगटावी
तें माप हली न रवासि रवस्थ भगा श्रीहरि ने मन भावी॥ यह स्वां
मिनी रूप तिनको आश्रय प्रभु कीयो॥ तब रासलीला भई र
सो प्रथम उडुराजकी लीला नित्यसिद्धा वारी तिनको रस श्रुति
रूपा कुमारिका डेल न सपी मानादिक गर्व भयो॥ तातें पाछे
ससांक चंद्रमा की छह महीना की रात्र करि श्रुतिरूपा कुमारि

काको नहीं होय॥ ताते सरद समय प्रकट धरत हैं। रास करत है सो उद्दर राज की लीला नित्य सिद्ध वारी॥ जिर राज के आसपास रासोली चंद्र सरोवर इत्यादि कवी बमेसी न काल सो कंद राम रजमे कनित्य सिद्ध होके रमरग॥ पाछे वैसाख सुदी पून्यो को छप्पन होना सरद ने होत नहें॥ ताते फागुन चैत्र वैसाख मे प्रकट धरत हैं॥ सो श्रुति रूपा कुमारि का कीरा सलीला स शंक चंद्र मागी लगो चिंद मेंगार होे॥ वंसीवट वृंदावन आन्दिमान सरोवर की वसंत रितु की रास लीला प्रकार अनेक भाव हैं॥ श्रीयमुनाजी दोउ लीला संबंधी याते हैं॥ जोर नविना जल स्थल विहार न होई॥ ताते प्रबोधनी को विवाह खेलत नहें॥ ताते लाल वाग अनुराग ई खको रसरूप भाव हैं॥ मंडप चोरी रूप परिक्रमा व्याह पाछे करत फिरावत हैं॥ कहूं स्वेत कुल हूं श्रीचंद्रावली जीके भावते॥ पाछे द्वादसी॥ कार्तिक सुदी॥ १२॥ श्रीमि रघ रजी श्री रघुनं थजी को जन्मोत्सव की विधि॥ ताते राजभोग आवे नव वधाई गाई ये॥ राजभोग मे श्रीगिरिधारी जी के बड़ा तीन कूंडा जलेवी सेवके लाडू मे वाली बुंदी सकरपारा मी ठेरा पाक सिखरन वड़ी सो रावा सो ही बिलसारु आरोगनित्य को नेग॥ श्रीमि रधर जी की पादुका होय॥ तथा श्री रघुनं थजी की पादुका होइ तो आपपंगन्या रो प्रभु के बराबर राज भोग आवे॥ श्रोटनो दूध एक कलोरा मे॥ तामे स्वेत तिलग उ केहू कमोल धरि मा केद पूनाके भावते॥ राजभोग सरेपा छे आरती चुन के दी वड़ा धारी मे धरि मुठी या धारि आरती करीये॥ श्रृंगार प्रबोधनी को रहें॥ श्राधि की मेरा कसे हराध रे॥ पाछे नित्य की रीति॥ द्वादसी को भोर ही राजभोग आरती होई॥ कार्तिक सुदी॥ १५॥ यज्ञपत्नी की भावना॥ सो नगहिन

यज्ञपत्नी न की सामग्री अंगीकार कीरे॥ प्रथ्वी पर ऽ मत धृत है॥ मृत्युलोक में अक्षरा राजा रु कमंगल को छल न आई हैं॥ रा काद सो के हूं रनाये नयां प्रथ्वी के पास आई॥ नव घृत पीये आ र क छनां ही॥ ताते होम मे घृत होमत हैं॥ नव देवतन्न को पो होवत नहें॥ मर्यादा भूमि मे वालक आरो नव अपराध कीये॥ न व प्रथम रिषि पास पठाये॥ उनसो नां हीं कहू काई उनको भा यो पास मगरा य बाल कको पोषे॥ सो चीर हरन के ले अप्रपार सो लपंग्यो प्रप्रा पा यरिषि पत्नी को हे॥ ताते कुमारिका रिषिप त्नि के भाव सो प्रभु को सामिग्री नित्य नई लिवाव न हें॥ कार्ति क हूं दोन हें॥ ताते श्रोग सांई जीने व्यर्थ ग ही मे लिख हें॥ नवस रद मे रास लीला कीरे॥ न व पुष्टि पुरुषोत्तम बाहर प्रगट है इ लीला कीरे॥ नव कुमारिका के पाछे रिषिपत्नी आई है॥ ता प्र थ रिषिपत्नी की भावना॥ सो इन हकों दान दीये हैं॥ ताते वत्त व र्प सो लग्यो रिषि को अपराध है॥ श्रीगुसांई जी सम यभा योमें श्रीमथुरा के स्वरूप के ऊपर आग्या कर हें॥ मर्यादा पुष्टि को ताते व्रजभक्तन की सामिग्री नित होती रे॥ व्रजभक्तन के रस के भोका पुष्टि पुरुषोत्तम ही हें॥ मर्यादा मे पराई स्त्री को विहार नि सिद्ध है॥ ताते रिषिपत्नी के घर विहार कीरे॥ पंचाध्याई मे पु ष्टि समय सब को अंगीकार कीरे॥ ताते पुष्टि मार्ग मे पूनो के दिन राजभोग में एक नई सामिग्री नित्य धरोधरीये॥ पाछे नि त्य की रीति॥ मार्गसिर वदी ने तीन न सी त काल की सामिग्री आ रोगत हे॥ कहूं पौस वदी १ ते सामिग्री आरोगत हे॥ कहूं आदि न ते संक्रांति धन की होत हें॥ नव ते आरोगत हे मुख्य पक्ष यह हें मार्गसिर गोप्यम होत नाहे॥ मार्गसिर सुदी २॥ श्री गुसांई जी बे की भावना॥ नादिन श्री रघुराय हे॥ ताते मार्गसिर वदी १ ते क

व्यांतरमें ऐसेहे॥ मार्गसिरमें कात्यायनीदेवीकोपूजन स्वामिनिरूपा
कोरूपपोसके महीनामें भद्रकालीकोपूजन श्रीयमुनाजीरूप भद्र
मेबीरहररागकोहे॥ पाछे वसंत हे तोकेमिस पूजाकरन लागे॥ का
त्यायनीदेवी श्रीचंद्रावलीजीनेप्रगटी हे॥ रजमें प्राधिदैविक सो
रूप जाको आराधना प्रभु हु कुमारिकासोमिलिके पूजनकरत हें॥ ये
देउकारसके रहवेहें॥ सो श्रीचंद्रावलीजीके स्वरूपको जानत हें॥
ताते पूजनकरि यह दरसमांग्यो॥ जो श्रीजी हमको प्राप्ति करेंग
व अपनोनाम छिपाय वे केलीऐ श्रीचंद्रावलीजीने कही॥ उमन
कात्यायनीदेवीके नामनेप्रगटकरो॥ तत्लारे मनो थेसवपूरन
होइगे॥ तव आनंद पाय उछाहपूर्वक गावत श्रीयमुनाजीकेउप
केठमेजाय रतनको प्रारंभकीनें॥ सोरात्रघड़ी रहें॥ तवतें दोय
घड़ीताईउस्मकालकहीये॥ तामसमय पूजाकी सांमिग्रीसिद्ध
करिलेजांनहें॥ जलसों दलसों हट भक्तिको दानां केसरिघसि
केलेजांतहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीके भावतें॥ हरदीकी गांठ
धरेहें॥ सो सुभ हे॥ कपूर श्रीचंद्रावलीजीके श्रीअंगकोसुगंध
हें॥ जल श्रीयमुनाजीके भावतें धूपदीप घातिबंधको नासक
हें॥ कुमकुमसों अनुराग रूप हें॥ तथाविवाह प्रबोधनीकोभय
सोवर अंगीकार कीयो॥ अवरमरण करिवेको अनुराग प्रगट
भयोहें॥ अक्षत पोरे रंग हें॥ सो शुद्ध सत्वगुणस्वरूपको रस
मेरहेगा॥ चमेलीके फूल श्रीचंद्रावलीजी पीत चमेली श्रीस्वांमि
नीजी॥ इत्यादिग्वालियाप्रभुकीलीलागानकरतहैं वाहजोरे
कोउगलवाहीदोरे मनमेंभावनासोप्रभुसंगलबांईसोयेहैं या
भावमेंमग्न होइ चलतहें॥ तहां श्रीयमुनाजीकेउपकंठ ये स्वा
मिनीजीकी श्रीचंद्रावलीजीकुंजहें॥ सोतहां देवीमें प्रभु प्राय
वेठिकें कुमारिकाको सांमिग्री अंगीकारकरतहे॥ तहांसो

तकालमें मार्गसिरमें मंगलासमे दूसरो भोग आवेहे॥ अथ शीत
कालकी सांमिग्रीकोभाव॥ प्रबोधनीको वारचोज यपानिको विर
वाहभयो॥ तामें सगरेव्रजकी स्वांमिनी हेतिनको भयो॥ सो व्याह
भरोपाछेवरकी ओरकोदुलहनिकी ओरको भोजभयो चहीये
प्रथम जब सांमिग्रीको प्रारंभ करत॥ तब बालभोगके संग
पास॥ तथा सषड़ी रसोईपास दोऊ ठोर आपको परोसिके॥ कोरी
हरदीको चोकपूरे॥ भावनासो श्रीस्वांमिनीजीरूप श्रीआचा
र्यजी महाप्रभुजीहें॥ सो तिनकोस्वरूप विचारिके दंडौत करियह
बीनतीकरें करिवे वारे आपुहें॥ सो परिक्रमा करिके सगरीव
स्तु अंगीकार करीये॥ निर्विघ्न यह मनोरथ सिद्ध होय॥ पहले
दिन खनमें डाहोइ॥ सोसेनमें आरोगे॥ सो याही दिन सांमिग्रीघ
सा दीभे उसमे रहें॥ परोसनामे नाही आवे॥ पाछे दूसरे दिन
मेगला श्रृंगार राजभोग तोंप्यो मे खन मेड़ा आरोगे॥ रात्रके
श्रीस्वांमिनीजीके मनोर्थकी॥ मंगला श्रीयमुनाजीके अंग
रमे कुमारिकाके॥ राजभोग मे सगरी श्रुतिरूपा गोपभार्या
याके पाछे परोसनामें वास्यो वेरकीरकठोरी॥ निकसे॥ तब
मेड़ाकेसंग बड़ा न थां सूरन कोसाक घी में भुन्यों॥ सधानो अ
ई॥ रतालू टेटी आंबनी कुकरोदा इनकी कटोरी॥ अनसषड़ी
मे पहले दिन मे दासे रा॥ बेसनसे रा॥ दोऊ न्यारे न्यारे घी में
भूजे दूराव रावर मे वाडारि मगद बांधियें॥ मिरच डारि लाडू
करीयें॥ वे सन मुष्प मे सा श्रुतिरूपा श्रीयमुनाजी ब्रजकुमारि
कामिरच सीत कारवि वाह मे भोजहें॥ सो प्रभु के भोज की सांमि
ग्री॥ श्रीचंद्रावलीजी अपने घरते करिके ले आवत हें॥ दूसरे दि
न बरि सांमिग्री होइ॥ खनमें डाभाटधीके घरनकी रोटी मिली
सांके परोमा लिति आसि हा श्रीस्वांमिनीजी॥ खनमेंडा श्रीय

मुनाजी। मांटश्री चंद्रावलीजी॥ रोटीकुमारिका इत्यादिकेभावसोदे
इदिनसांमिग्रीकरि॥ तीसरेदिनकुइवारोश्रीगोपीवदत्रमयेंन
थांराजभोगमेंसुरोमंडलमलरासोरहकोहोय॥ तथांवारहकोभ
रे।तथांस्राठकोकरें॥तथां।धा।कोकरे॥ याते घाटिनहीनीचेसीराऊ
परमठरी॥सोताकेऊपरसेवकेलाडू॥ सोमजराकेऊपरकाने
नते रंचकरहें॥ सोभक्तनकेडाधिालितभावकुचरूपहें॥ मलए
श्रीअंगरूपहरदीलगावतहें॥मुष्यकेभावमेसवमांटहें ताते
सवमेस्वांमिनीप्रवेसकरे॥ तवप्रभुअंगीकारकरे सखडीके
मजडा॥१६॥सोसोरहहोई॥तथांवारहतथां-स्राठतथां चारिहु
ई॥दोइमेदहीभात दोइमेखीर साठी चोखाको दहीभातश्रीचं
द्रावलीजी॥ खीरिकुमारिकाताामेहुराश्रीस्वांमिनीजी॥ श्रीयमु
नाजीहूवीभक्तकवह॥धा सखड़ीके॥ वारहअनसखड़ीकेकवह
सोरहसखडीकेसोलहअनसखड़ीकें॥दहरीत॥ सखडीनेअ
नसखड़ीवदेपरिघतेनही॥सखड़ीसहितहोयसोदोहरोकहा
वें॥अग्रकेलेअनसखड़ीको एकलोकहावे॥अनकूटमेकुंइवा
रेकेमलड़ा॥२०१होय॥ताकोयहभावहें॥संप्रदायरजनेदरा
यजीवद्धमानजीसगरेगोपगोपीकोग्वालकीतेनीयाहृथ
घरीपाकीपीठिथापिकेदेतहें॥ सोताते श्रीदामासषान्सा
दियहतजभक्तनकोलीलामेसहायकहें॥ ताते वृजभक्त
प्रसंनहें॥मांथेतेपीरेछोरकोउपरराग वांधिअपनीप्रीति
वांधतहें॥ पीठिथापिकेयहपुष्टिरसकोस्थापनकरतहें
पाछेमलड़ाअधरामृतकोरसतांमेरसरूपकरतहें॥या
प्रकारकुंइवारोस्तुतिरूपाकरिसभनकोप्रसंनकरतहें॥स
षड़ीकेतथांअनसपड़ीकोसीतकालमें॥४॥करतहें॥ वारिवा
स्योजूथपतिकेभावते॥ एकमेसगरीस्वांमिनीसषीजनअ

रआधिकीवनिआवेतोसुखेनकरीये॥ पाछेनित्यप्रतिरतीसांमिग्री
मेंगलामें॥पीतमाानलोगमातवेगनभानगेहूंकीरोटीउर्दकीरो
टीनित्यमंगलामेंछोरआरोगे॥ सीतकालमेनहीनित्यनईसांम
ग्रीआरोगे॥ मांड़ावार॥५॥आरोगे॥ स्वनमंडाकोनईसेनमेमंग
लामेंसिंगारराजभोगफेरदूसरेदिनमंगलामेंवड़ाकचोरीको
पीवहत्रमनें॥ सखडीमेहोय ताकेसंगमुज्योसाक तथांरगईके
कटोरासखड़ीमेंतवाघरीहोयदुलहनिकोओरतेखांडकीहोय
दूलहकीओरकीपीठिमुष्यकेभावसोपीरी तामेंगुड़मिलाइ
तरभारिकेकरें॥ तथांचनाकीदारिकीपिठीकोरेघड़ातांमेगड़त
थांमुजेसाकयहधरीये॥ स्वनमंडायेवलवांनहें तथांपुष्टिहे
वोरखूटेहांतहें॥ सोव्रजकोभावहें॥श्रीस्वांमिनीजीकोउदरस्थ
जरूपमाड़ातथांघीतायोहानेदार॥सोभक्तकोस्नेहरूपधरत
हें॥खीरिवड़ाइथमेचोरीठाडारियें॥ वेसनकीनांईगादोकरिवा
कोमेदाकीलोईमेधारिकेंवड़ाकीनांईकरिघीमेतरिकेऊपरबू
राभुरकावे॥ कपोलकहतहें॥ दूसरीरीत॥ खीरियालीकारिपा
छेमिलपरपोसिवड़ाकरिकेघृतमेतारिकेंवूराभुरकावें॥त
थांतवापररंचकघीडारिमेंदअंगसोसोकिवूराभुरकावेंसा
ठीचामरकीसोनिजभक्तनकोभाव॥चीलड़ावेसनकेतथांउरदकी
पिठीके॥ ताकेसंगघृतदांनेदारधरनो॥ संजावगेहूकेकनक
की॥ सोताकीखीरनिजभक्तनकेभावसों गेंडावड़ीकेभरो॥ घह
लेवडीकोघीमेतारिकें॥पाछेपांनीडारिकेऔटावें॥ पांनीडारि
केपरातमेधारिकेंपांनीस्राकि॥पाछेमेदाकीपूरीकेपाछेवड़ी
मारिकेंगररा पारिघीमेधारिकेतरें॥ सोमुष्यभक्तकेकंठरूप
गेहूकीरोटीनिजभक्तनकेभावसो॥ उर्दकीरोटीश्रीयमुना
जीकेभावते॥ वाजरेकीरोटीसषीजनकेभावसो॥ वाजरेकीरवी

बरी सखीजनके भावसों ॥ चांमरकी रखे चरी श्रुतिरूपा मिहै चांम
रकी कुमारिका ॥ मोटे सो धीच भ्रमरकी खीच री कुमारिका रोटीके
संगधी गुड़ धरनो ॥ रोटी है सो भक्तनके मंडलाकार हैं ॥ धोवेका
उर्दके सो श्रीयमुनाजीके भाव ते ॥ गेहूंकी खीचरी मे चनाकी हारी
हैं ॥ सो मुख्य गेहूं श्रुतिरूपा तामे धी स्नेहरूप ॥ वरा श्रीस्वांमिनीजी
जल श्रीयमुनाजी ॥ वेसनके खड़रा करत हे सो मुख्य श्रीस्वांमिनी
जीके हृदयरूप ॥ तथा जड़रुड़ चोकी रूप ॥ गेहूंको खीचड़ा गुड़ मिलो
सो कुमारिका हवी भक्त श्रीयमुनाजीके भावसों ॥ कचोरी श्रीयमु
नाजीके कपोलरूप ॥ आखे उर्द पांनी डारि जब पांनी जारि जाय
मूंगकी नांई ॥ तब कडुवो तेल डारत हैं ॥ श्रीयमुनाजी तथा एक
दिन चोरा सो ऊखास्य श्रुतिरूपाको जोबन चलायमान ॥ अपनस
खड़ी मे सेवके लडू ॥ श्रुतिरूपा न थाव रव धदो ऊसो रको मोज
हैं ॥ वेसनके मगदके लडुवा श्रीस्वांमिनीजीके कुचरूप ॥ अपके
लो वेसन धी मे भुंजि तामे बूरा रंच कमिरच डारिये ॥ सीनकार
के लडुवा बाधिये ॥ चोरीठाके मगदके लडुवा सो कुमारिकाके
भावरूप ॥ साठी चामर ली जरंग अनुरागरूप ॥ दे हरवड़ी चो
रीठा मे मेदा डारत हैं ॥ पुको ड़ीकरिके पकवान हैं ॥ श्रुतिरूपाके भा
व पपची मे दाको पगी श्रीचंद्रावलीजीको भाव ॥ श्रुतिरूपाके
दा मुख्य हैं ॥ उपरेठा मुख्य श्रीचंद्रावलीजीके भावरूप मुख्य
पीरी फेनी श्रीस्वांमिनीजीके मुख्यरूप ॥ खेनफेनी कुमारि
काके मुख्यरूप नाड़ी सामिग्री उर्दके बेनकी जलेबी करे ॥ सो
तापर बूरा भुरकावे ॥ तथा चासनी मे पगे श्रीयमुनाजीके
अधररूप ॥ चंद्रकला मेदाको पगे श्रुतिरूपाके मुख्यरूप
मोंधन बड़ा ॥ श्रीस्वांमिनीजीके मुख्यरूप ॥ दही बड़ा पगे श्रीचं
द्रावलीजीको मुख्यरूप ॥ मनोहरके लडुवा दूध पारिकें तामे पो

गी

रीठाको चून डारि लडुवा होई ॥ सो कुमारिकाके भाव मोहनलाडू मधी
केरिके बांधे ॥ सखीजनके कुचरूप ॥ कपूरनाड़ी श्रीस्वांमिनीजीके
हृदयरूप ॥ लोग चारितनी रूप ॥ तथा जोग दंत सनन वसन धाव
रखे न बूरा कहे ॥ सो कुमारिकाके करकराहट रूप घेवर श्रुतिरूपा
के उदरके चुनवटें ही धांसके लडुवा ॥ तामें मिश्रीकी कनिका
रकराहट सीतकार श्रीयमुनाजीके कुचरूप ॥ पेंडा मे बूरा भरि
के पागे पगे श्रीस्वांमिनीजीके मुख्यरूप कपूर राईंदर शीन वेसन
की बूंदीके लडुवा मुख्य श्रीस्वांमिनीजीके भाव ते ॥ चकुलीमिल
डारिके करें ॥ सो श्रीयमुनाजी सखी री कुमारिकाके भाव ते रख
न मंडप ह लो दिन करत हैं ॥ सगरे व्रजको भाव चोरखते हैं ॥ हृ
दय कमलरूप बूरा श्रीस्वांमिनीजीको रस सगरी स्वांमिनी
मे हैं ॥ ताते श्रीजी अंगीकार करत हैं ॥ भोजन मोन समयको घृ
धरायत हैं ॥ ताते प्रभुको अति प्रीय हैं ॥ धनुर्मास मे सगे संबं
धीको भोजन करावत हैं ॥ व्याह पाछे भोजन होत हैं ॥ पाछुलीमध्य
मे होई ॥ तब मंगला मे कुमारिकाके भाव ते आरोगे ॥ सिंगार
मे गोपीवल्लभ मे श्रीस्वांमिनीजीके भाव ते ॥ राजभोग श्रुति
रूपाके भाव ते श्रीयमुनाजी सब मे हैं ॥ तथा राजभोग मे सगा
री सखी स्वांमिनीजीके भाव ते ॥ ग्वाल मे श्रीचंद्रावलीजीके भा
व सों ॥ भोग ता मरम राग मे हैं ॥ ताते आरोगिवेको नांम भोग धरे
हैं ॥ सखड़ीके संग का चो आरोगत हैं ॥ सखड़ी श्रीस्वांमिनीजीके
भाव सो हे ॥ श्रीस्वांमिनीजी पाछे सबको सुगम सुखकारी र
सकें फेन होई ॥ अनसखड़ी श्रीचंद्रावलीजी वल्लभ नहे ॥ सो
श्रम साहित विहार हैं ॥ कोरे को रे बड़ा तामे लोन डारिके सीत
काल मे धरत हैं ॥ संग गुड़ धरत है ॥ जोरावर हैं ॥ श्रीयमुनाजी
रूप तिनके संग साक धरत हैं ॥ तथा चारि कोमल कुमारिका

रूप॥ सांघनमिश्री कृष्णको अधरामृत दही वध्यो श्रीचंद्रावलीजीके
अधरामृत वीड़ा सबकी चर्वित वीड़ा श्रुतिरूपाको अधरामृतरूप च
र्वित नई सांमिग्री होय॥ तादिन लुचई नही लुचई सब भोजनको
हृदयरूप हैं॥ सखडीकी कचरीया सब तरहकी तरिके धरत हे उ
परको छीलका हारि नांही करत हें॥ सुत सिद्धि फलरूप हें॥ प्रथ
मधाम को विरह रूपमे स्वलि गई॥ पाछे तेल तथा घीसे हरूप पा
यके प्रभुके जोगमई॥ करकरा हट हें॥ सो सीतकार रूप हें॥ मेवाम
ठाई लडुवा गुंडा चास्योज्यु थपत्तिके भाव ते॥ कोरीलो नकीवे सन
कीसेवा पान समयको अधर सुष्पके भावते॥ पीतके नो सुष्पके
भाव विहारमें लकीर रसारीत कार समय परत हें॥ यामकरम
गसिरके महीनामे कात्यायनी देवीको अर्चना॥ सो श्रीयमुना
जीको कालिंदी नाम हे॥ भई जो कल्यानक तो हें॥ तथा कल्यानतर
मे प्रेसेह हें॥ पोस सुदी पून्योको॥ चीरचोरिक दमपरधिराजेता
कोभाव॥ सो थोरो सो कुमारिकाको भाव फूल्यो॥ रस पायवेके अ
पे॥ संपूर्ण रास पंचाध्याईमे फूलेगो रस पायकें॥ कदेवको रस
भक्तरूप हे॥ तथाको मरूप हें॥ कुमारिकाको नग्न प्रभु देखि
के सर्वांग अलौकिक करि दीये॥ पाछे कुमारिकाके पुरुषार्थ
प्रभाव अपने हृदयमे रहें॥ पूतनाहारा लीने हते॥ सो वस्त्रमे
नपट अलौकिक दिव्य वस्त्र करि दीये नमी जेनमे लेहोयज
नविहार यो सनमेयह जतरये॥ फागुन श्रीगोवर्द्धननाथको
निमदे रवनहें॥ जब प्रभु कृपा करिके देखतहे॥ तब अलौकिक
देह होइ जाइ॥ सो तब सगरो प्रपंच भूलि जाय॥ पाछे आगें
दैविक अलौकिक रात्र श्रीचंद्रावलीजी हारा रासको वृंदा
वन श्रीयमुनाजी श्रीगिरिराज द्रुमलता कुंज सब कुमारिका
को दिखाये॥ पाछे कहे मेरो गुरगंगन सेवा करिके हृदहोइ॥ परप

कसरद में तिहारो मनोरथ पूरण करेंगे॥ तब कुमारिकाके आसा भई
या प्रकार मंगलाते सेंन पर्यंत राजदिन॥ रमरचीताको भाव विच
चारे॥ अब या समय श्री आचार्यजीकी कृपातें पाभाव सो रमरा
हें॥ तपांच रसहिनके सब उत्सवमें रमरनको प्रकार हें॥ सो विचा
रे पो सब दी॥ १॥ नानिम्यासिद्ध भेकुडवारोक स्यो हें॥ श्रुतिरूपामेंकि
ननेक भक्तको गोनो मार्गसिरमे प्रभु सो होतहें॥ सो पुष्टिस्थित
मयो हें॥ तातें गोनाको कुड़वारो करत हें॥ तातें वैस्नवकुलके प्र
स्याव में कुडवारो परत हें॥ मलड़ा॥ २॥ चतुर्विध भक्तमेरा कर
कर्के चारि चार हरहीसो रंगत हें॥ कोनेपर कुंम कुंमके चारिचा
रि तपका लगावत हे॥ हरदीको साथिया हू करत हें॥ मलराचा
रि रही मात्त के श्रुतिरूपाके भावते॥ मलरा ध स्वामिनीके भाव
ते॥ मलरा॥ र॥ अन सखड़ीमे नीचें सोरा ऊपर मठरी॥ ऊपरको
नेसो ऊंचे सेव के लाडू॥ मलड़ाके कोने नतेकुंम कुं मलयारये श्री
जीके अनुराग मेभरे हें॥ हरदी लगावत हें॥ सो विरह करिके
भक्तनके अंगपीरे भये हें॥ कोरी हरदीको साथिया अनसाग्रके
रत हे॥ सो तापरभोग धरीये॥ पाछे वीड़ा धधरीये॥ चारिके भा
वनेउपर रागके छेड़ा रंगिके ग्वालनको देतहें॥ लीलासहायक
ग्वाल हें॥ महाप्रसाद योगहें॥ तातें रागक रागक मलड़ा देतहें॥ क
बहू ग्वाल हू ग्वालिनीको रूप धरत हें॥ भक्तजनको सेकेता सिद्धि
कर राग पश्री जीके यहां पात्र धोकमे सजतहें॥ लीलागो प्यके
र राग धपात्र सुह ऊजरे करत हें॥ तातें मलड़ा उपर नाचोक
मे देतहें॥ धोकमे हू अनेक प्रकारकी लीला हें॥ सखडीमे श्रुति
रूपाके मंडल॥ अनसखड़ीमे कुमारिका सुष्प श्रीस्वामिनीजी
केमंडल श्रीयमुनाजी तो सैंव नमे हें॥ सखड़ी अनसखड़ीके दो
उ करे तो दोहरो कहावे॥ नीचे सीरा ऊपर मठरी ताके ऊपर

सेवकेलडुवाकोंनेलोसिंघासनआगेहरटीकोचोकमंडलाकारधरे
सेवकेलडुवाकोंनेलोसिंघासनअागेहरदीकोचोकमंडलाकारपरमभक्तनकेमंडलजपा
रो॥तापरभोगधरो॥ रसरूपव्रजभूमिनापरभक्तनकेमंडलपा
प्रकारमाहसुदी॥५॥वसंतपहेलेसीतकालकीसामिग्रीहोई
कोईभक्तकोमनोर्थरहिगयोहोई॥तोवसंतमेहोरीमेंइंडेसके
पहलेहोय॥पाछेनहीं॥कुंडवारोजववनेतवहीकरें॥मगसिर
मेकुमारिकाकरें प्रथमकेवलशुद्धहासभावहें॥पतिप्रेमन
हीहें॥पतिव्रतावनप्रसमेंश्रुतिरूपाकरे॥गोपभावतोईहेपरि
क्रियारसकीकरनवारी॥ताहीतेश्रीगुसांईजीश्रुतिरूपन्के
गुखीयाधेसमेप्रगटे॥मार्गशिरसुदी॥७॥श्रीगोकुलनाथ
जीकोजन्मदिनकीभावना॥ श्रीगोकुलनाथजीकेजन्मदिन
नपाडुकाजीकोअभ्यंगराजभोगआरोपारीकीआरती॥पा
प्रकारसातोबालकहें॥जन्मउत्सवसातोमंदिरमेबैसववके
घरहोई॥तथाओरवालककीपाडुकाहोइसोउनकेजन्म
दिनकोअभ्यंगआरो॥राजभोगआरतीपारीकीहोय॥पौष
वदी॥९॥श्रीगुसांईजीकेजन्मउत्सवकोभाव॥श्रीमहाप्र
भुजीकेप्रगटेपाछेश्रुतिरूपाकेभावसोंसेवाकोविस्तारवटयो
तातेपुष्टिमारगमेश्रीठाकुरजीकेनामअष्टमंदिरआदि
मेकृष्णनामनाही॥तेसेईवल्लभकुलमेसातस्वरूपमेंकेष
नकृष्णनामनाहीधरो॥सोयातेपुष्टिमारगमेभक्तिमुख्यहें
प्रभुआपकेलेरगकृष्णराइनाहीरहतहें॥तातेलीलासाहितना
महें॥बालकृष्णनवनीतप्रीयाकहे॥ताहूमेभावपहहें॥बाल
जोव्रजबालभक्तसाहितहेकृष्णनवनीतस्वामिनीजीकोअध
रामृतजिनकोप्रीयहे॥तातेलीलासहितनाममेकृष्णआपरे
हृदयतेभक्तकृष्णनामकीरटनकरतहें॥ऊपरभेदसोप्र
कारनहेसेवाग्रहकार्यकरतगुरुजननेंदजसोदावालकृष्ण

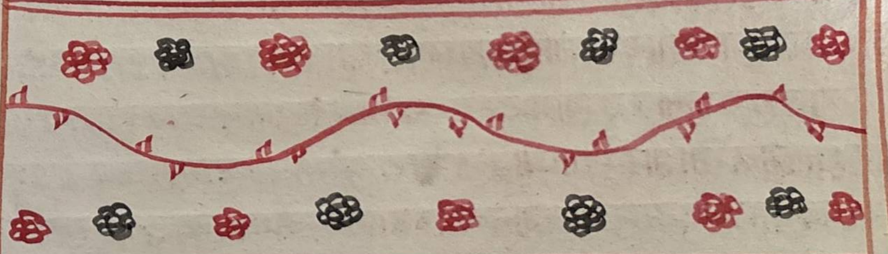
नवनीतप्रीयाजीकहेलीलाकहिप्रकारनहे॥मातापिताकोलेनो
पुत्रकोउचितनाहीहें॥भक्तदामोदर॥गिरधरवंशीधर॥मुर
लीधरमदनमोहन॥व्रजनाथगोकुलनाथइत्यादिलीलाके
भावमेप्रकारनहे॥चिनमेअष्टप्रहरकृष्णनामकोरटनकर
तहें॥ऊपरश्रीकहिकेप्रकारनहें॥परमवल्लभहे॥तातेयहां
वल्लभनामश्रीआचार्यजीकोहे॥तातेश्रीकृष्णकहीये॥तव्यु
गलस्वरूपकोनामभयो॥तेसेयहांश्रीवल्लभकहीये॥श्रीठाकु
रजीकेवल्लभप्राणप्रीय याहूमेयुगलस्वरूपसगरोव्रजकी
स्वामिनीसगरेव्रजकीलीलारूपनामहें॥तातेप्रभुमहावन
श्रीगोकुलमेप्रगटे॥श्रीस्वामिनीजीरावलिमेंप्रगटी॥सोतिन
केबीचोबीचगायपीवेकीपोषरिहें॥सोतहांतेदोउनकीसीम
आइमिलीहे॥तहांचंद्रभानरीठोरातेरावलिमेंआपनीस्रोप
रकरसहितवृषभानकोवरसानेतेसववृषभानजीकोप्रस
रारहेंरावलिसोभोजनकोआरेहे॥तथांकेसीदानवकोभय
वरसानेमेभयो॥तववृषभानजीकीरानीजीरावलिमेरहे॥चं
द्रभानपरकरसाहितपोषरिहंपेकवेघरवनाइकेरहें॥तथां
पोखरपरश्रीस्वामिनीजीसोदोयवरसपहलेश्रीचंद्राव
लीजीप्रगटीहें॥ताहीतेउहांनंदगाममवरसानेकेबीचोबीचरी
ठोरागांमहें॥तहांश्रीचंद्रावलीजीप्रगटीतवभयमिटिगयो
वृषभानजीबरसानेगये॥चंद्रभानपरकरसाहितवेटीकोले
केठौरीहीरेगये॥पाछेकीरानीजीकोजवगर्भरह्यो॥तबआपने
पीहरआई॥सोतवरावलिमेबेटीभईप्रस्तावमेआईहती याप्र
कारश्रीचंद्रावलीजीकोजन्म॥युगलस्वरूपकीसेवाअर्थतेसे
ईयहांश्रीगुसांईजीकोप्रगटनयुगलस्वरूपकीसेवाअर्थप्र
भुकोअभ्यंगश्रीगुसांईजीकीपाडुकाजीकोअभ्यंगपाडुकाजी

आरोगत राजभोग॥ प्रथम पादुकाजी को तिलक आरती पाछें प्रभु को क
हूं संग ही प्रभु के तिलक आरती होत हें॥ तो श्री को दिन प्रगटे सो
तिनको भाव यह हें॥ जो तो को अंक सब तें वड़ो हे॥ श्रीठाकुरजी और
श्रीस्वामिनीजी॥ अष्टमी को प्रगटे॥ और नोमी को प्रगट होय श्री
गुसांईजी यह जताये॥ श्रीगुसांईजी के हृदय में दोऊ स्वरूप हे तेसे
नोके मीन र आठ होय॥ श्रीपादुकाजी चरणारविंद साधन भक्ति
रूप हें॥ सो तिनको दरसन करि फलरूप श्रीगुण ताही को भाव
विचारतें॥ तातें भोग धरत हे तिलक करत हें॥ श्रीगुण को भाव
तातें ताते वाग्या पाग्या न पहरें॥ उस काल में ओट नी रीत काल में
रजाई॥ सो याते प्रसिद्ध दरसन चरण को हें॥ तातें जहां मुख्य भ
गवद्स्वरूप विराजत होई॥ सो तहां श्रीपादुकाजी पालिंग पर
विराजे॥ तहां मुख्य पादुकाजी होय॥ तहां सिंघासन पर विराजे
पोटे पलंग पर सो याते तहां प्रसिद्ध प्रभु विराजे॥ सबको दर्श
न देहि तहां केवल श्रीस्वामिनीजी रूप हें॥ सिज्या पर विराज
तहां॥ तहां पादुकाजी विराजत हें॥ सो मुख्य हें॥ सो तहां सिंघासन
पर वेठिके रूप होइ दरसन देत हें॥ तहां श्रीगुसांईजी उ
दीपन भाव श्रीआचार्यजी आलंबन भाव अभ्यंग कोय हम
वहें केसरि मुख्य के अंगवर्ण॥ कपूर चंदन श्रीचंद्रावलीजी
के श्रीअंग को सुगंध॥ आंवला और जल श्रीयमुनाजी हरदी
कीलकनी कुमारिका के अंगरूप॥ तुलसी कीभ कनी मुख्य के श्री
अंग को सुगंध॥ तपांहर दीमें गलादियहें॥ व्याह होइ गयो तो हरे
तव हूं हरदी लगावत हें॥ तेल फुलेल सगरी स्वामिनीजी को सेह
रूप॥ नमजल नहे॥ सो भक्ताविरह करिकें नमहें॥ तातें श्रमजल
होत हें तातें प्रभु न्हांत हें॥ तामें सो तल उजल मिलत हें॥ सो श्रीय
मुनाजी को वियोग नाहीं हें॥ तातें येसो तल हें॥ पाछें अंगवस्त्र अ

पने अंचल सो पोंछि शुद्ध करत हें॥ पाछें श्रीगुसांईजी के उत्सव ते
ठाडे स्वरूप डोलत नांई केसरी तनी याप हरत हें॥ सो भक्तन के
निज अंगवर्ण पाछें सूथन लाल हरी किनारी भक्तन के वांहत
प पाट की कुलही वागा रंग केसरी वा ताके भीतर रुई को वागा
श्रीस्वामिनीजी को अंगरूप गदगदा केसरी श्रीअंगवर्ण किना
री श्रीयमुनाजी भक्त को पाय प्रभु फूलत हें॥ रुई के वागा में सं
जाप श्रुतिरूपा मगजी कुमारिका वागा में वाक हें॥ सो भक्तन की
साड़ी को घेरा हे॥ दोऊ ओर भक्त लपटि रहे हें॥ पटुका लाल अनु
राग सो प्रभु वांधि रहे हें॥ भक्तन की नीवी डोर रूप पटुका को अं
चल हें॥ सो नीवी को उवा हें॥ वेत्र श्रीचंद्रावलीजी के भाव ते रष
का मालिंद स सार हे॥ मर्यादा पुष्टि वे राग केवल पुष्टि स्वामिनी नीके
प॥ तहां मर्यादा रंच कन रावें॥ फूल की माला कोमेत मई सगरे
भक्तन के भाव सो सव ठोर जत फेल्यो॥ राजभोग पाछें वड़ो होहे
पसर हें॥ काहे तें जो श्रीस्वामिनीजी को विहार होय॥ तव नेक
दूरि रहे॥ उत्सव के दिन अनोसर भए पाछे वड़ी होई॥ माला हे सो
कुंज लता द्रुम वेली वन सव को सुगंध नाना प्रकार की स्वामि
नीके अंग को सौरभ॥ आरसी दिखावत हें॥ श्रीस्वामिनीजी
के अंग में तथा नपमे अपनपे को देषि॥ अत्यंत प्रसन्न होत हें
पाछें आरसी हृदया सो लगावत हें॥ ललितजी को भाव जेसे
प्रसन्नता पूर्वक दोऊ स्वरूप॥ ललिताजी अपने हृदय में रा
षत हें॥ वंदनवार तोरण वाजंत्र यह उत्सव के दिन हेत यां
अंग हें भक्तन के हृदय को भाव उछलित होई वाहिर पेल्यो रा
जभोग में सेन ध्या छि के वड़ा तीन क्रू दामी ठोरा कये उत्सव चारो
के भाव ते॥ सिरतरन वड़ी श्रीयमुनाजी धोई दार मूंग की सिखर
रन भात पापड़ वड़ी कासोंदी तरमेवा सकुंकेमे वाविल सारु वो

होत भांति के॥ जलेबी श्रीचंद्रावलीजी के अधररूप॥ श्रीगुसांईजी श्रीगो
कुलहते॥ यहां आठमी को श्रीगोवर्द्धनधरनेकही॥ रामदास कुंभ
नदास सो कहें॥ सवेरे श्रीगुसांईजी को जन्म दिन हैं॥ सो जन्माष्ट
मीकी नांई मानो जलेबी करो॥ सो तब सगरे सेवकनि मिलिकें श्र
मकी नांई मानो जलेबी करो॥ इतनेई में श्रीगुसांई
को जलेबी करी॥ तब सवेरे राजभोग आयो॥ इतनेई में श्रीगुसांई
जी श्रीगोकुल ते पधारे॥ सो भोग सराये तो जलेबी हें॥ सो पूछे तब
सेवकनने कही॥ जो प्रभु आप मनोर्थ करि के कराये हें॥ तातें श्री
जहू सेवकलोग श्रीजी के यहां सामिग्री को देत हें॥ इंद्री सक
र पारा वृंदी के लाडू में वातीग्रंडा सीरा मांपन मिश्री॥ पाडु काजी
को इतनो प्यारो राजभोग॥ कोरी हरदी को चोक पूरि ताप रपाट
दूध को कटोरा गुड़ स्वेत तिल यह धरोये॥ मोतीकी आरती
न कोदीवड़ा धरि तिलक करिये॥ यह ले श्री पादुकाजी को पाछे
प्रभु को धीहू सो स्नेह हें वातीवारत हे॥ सो भक्तन के हृदय को
विरह रूप दीवा हें॥ देहरूप प्रभु पर वारत हें॥ था री हृदय रूप
पमोती आभूषण कुंमकुं म अष्ट उत्थापन साथिया मंगल रज
रूप॥ वृंदन के आठ दीवड़ा भक्तन के मंडल रूप॥ अष्ट कला
करि अष्टविधि ऐश्वर्य दें दीप्यमान हे॥ अष्टसिद्धि वार
त हे वीचमे दीवड़ा हे॥ सो मुख्य श्रीस्वामिनीजी के भाव ते
पूछो या॥ ध॥ वास्चोल्य पपानिअपनो वारत हें॥ श्रीचंद्रावली
जी रूपे की आरती करत हें॥ कुमारिका सोने की आरती
करत हें॥ न्योछावर होत हे श्रीगुसांईजी प्रगटे पाछे निकुंज
लीला कंदरा के सिसर रितु पर्यंत॥ अथ छेरितु को भाव॥ मा
हे सुदी॥ १२॥ हां न लीला तें सरद प्रबोधनी ते हेमंत रितु श्रीगु
सांईजी के उत्सव ते सिसिर रितु माह सुदी॥ ५॥ तांई दिन॥ ५०॥ के भी
नर लीला हें॥ सो नाहीं ते वीच में उत्सव कोई नांही माह सुदी ४॥

ते वसंत रितु॥ वैसाख वदी ३॥ तें ग्रीष्म रितु॥ आसाढ सुदी २
ते वर्षा रितु॥ या प्रकार पुष्टि लीला में हे दोय होय महीना को के
मन ही॥ अष्ट प्रगीकार करे तब रितु होई॥ मकर संक्रांति के पह
ले दिन भोगी कहीये॥ अथ मकर संक्रांति को भाव॥ प्रभु भीतर
निकुंज में भोग करें॥ तातें श्रुतिरूपा ऋषिरूपा वर्षा मांनत हें॥ वे
श्रुति है वे ऋषि हें॥ तातें प्रभु संग राजभोग में वे सन के चीला
मुख्य को और कुमारिकान को मिल्यो भाव॥ उर्द की पिठी के चीला
श्रुतिरूपा श्रीयमुनाजी को मिल्यो भाव॥ सेव आछि के वडा
तीन कुं डा मी ठो स्वाक॥ दूसरे दिन सवेरे होय तो श्रृंगार में सांग
को होय तो सेन भोग में खीचरी तिलवा सं कल्पे॥ प्रभु सेन में पी
चड़ी तिलवा आरोगे॥ तथा खीचड़ी राजभोग में होई॥ तिलवा सेन
भोग के संग आरोगे॥ राजभोग में प्रवाहोय॥ तहां तांई तिलवा
नांही आरोगे॥ तहां तांई भूषेर होये॥ श्रुतिरूपा ऋषिरूपा पेसे
वतकरत हें॥ माह सुदी॥ ५॥ को सब साजजरी को हिपारो धरें
उदीयन भाव दिन॥ ४०॥ खेल नो होइगो॥ यह भावको जताये
सावधान रहीयो॥ राजभोग में कछु सामिग्री निकुंज में विहार क
रि अब सगरे वृज मे करेंगे॥ तातें नरीरूप हृदय को भाव बा
हिर ठलठलात हें॥ इति श्रीहरिरायजी कृत श्रीगुसांईजी के
उत्सव तांई को माह सुदी ४ तांई को भावना संपूर्णम्॥ ७॥



श्रीकृष्णायनमः॥ श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥ अथश्री
हरिरायजीकृतवसंतहोरीकीभावनालिख्यते॥ अबवसं
तपंचमीकेदिनप्रथमकांमकोजन्मभयोहे॥ तातेवसंतरि
तुअरकांमदेव आपुसमेपरममित्रहें॥ जोजहांकांमदेवप्रथ
मप्रगटहोवेकोजांनतहें॥ सोतहांवसंतरितुकोप्रथमप्रकासकर
तहें॥ तातेवसंतपंचमीतेखेलद्वाराकांमकोप्रागट्यहे॥ तातेदू
रीमेसवकोमनमत्ताहे॥ जहांवसंतकेप्रथमखेलदिना॥४०॥ कांम
होना॥१॥ ताकोअभिप्राययहहें॥ जवबसंतदसदिनमेउदीपन
कोजाहें॥ अरसमहोना॥१॥ आलंबनकीडाहें॥ तहांवसंतकेदि
नदसमेंदसप्रकारकेभावहें॥ तथांवसंतहे॥ सोकांमकोप्रज
नकरतहें॥ बोहोतकांमलौकिकविषेहें॥ जोअध्यात्मकको
देव मकोभीमहाप्रेमकेजीनरायदीरोहें॥ अरआधिदैविककांम
श्रीठाकुरजीआपुहें॥ जोसाक्षात्मन्मथकेमन्मथ॥ तातेद
सदिनचारन्योमकेकेमनोरथहें॥ ४०दिनतामेवसंतकेदिनद
ससात्वकीकहें॥ अरफागुनवदीतांईदिन॥१०॥ राजसके॥ पाछे
दिनदसतांमसके॥ फागुनवदी॥५॥ तांई॥ तापाछेदिनदसनिर्गु
णको॥ तातेवसंतनेमारीखेल॥ जाकेगुनकहेनजाय॥ डांडेरो
पनोसोकंदर्पकोआरोपन॥ सोआगेकहेंगे॥ फागुनवदी१
तेउतरेदिनपंद्रहतांई॥ क्रमक॥१॥ नेत्र॥२॥ अधर॥३॥ कपोल४
कंठ॥५॥ कुच॥६॥ युग्म॥७॥ उरनाभि॥८॥ कटि॥१०॥ गुह्य॥११॥ जंघा
॥१२॥ घोटू॥१३॥ चरण॥१४॥ पादांगुष्ट॥१५॥ यआंगतेउतरे॥ अर
फागुनसुदी॥१॥ तेचढे॥ पादांगुष्ट॥१॥ चरण॥२॥ घोटू॥३॥ जंघा४
गुह्य॥५॥ कटि६ नाभि॥७॥ उर८ युग्म॥९॥ कुच॥१०॥ कंठ॥११
कपोल॥१२॥ अधर॥१३॥ नेत्र॥१४॥ मस्तक॥१५॥ याप्रकारअलौ
किकभावात्मकहें॥ जोलौकिकबुद्धिसर्वथांनराषीये॥ आलंब

नक्रीडाहे॥ तामेमहोना॥१॥ धमारिगावतहें॥ अरद्वपहरकेसम
यपासकेसरगुलालअबीरइत्यादिपासरहें॥ चोवानहीजहां
तांईचोवाभक्तकेआधीनहेंतो॥ सेवापासक्रीडाभगवदभाव
तातेचोवाकेसबवस्त्रसिनयाते॥ जोमुख्यनिर्गुणकोकहीहे
पाछेअलौकिकगुणसंयुक्तकेमनोरथतेभरगेदिन॥१०॥ वसंतडा
रीमेवनाइधरतहें॥ सोप्रबोधनीतेअंकुरितहें॥ भक्तमरगेसो
तकालमेअनेकमनोरथकरतहें॥ अबवसंतमेपुष्पनौतन
फलसंयुक्तभरगे॥ होरीमेअंगीकारभयो॥ वसंतरितुअलौकि
कसोमिल्योसोकांमकोपूजनकरतहें॥ सोवसंतरितुभक्तहेको
मरूपप्रभुकोपूजनकरतहें॥ तातेसांमिल्योकहतहें॥ खिला
यवेकोगुलाल॥५॥ प्रकारको॥ लाल॥ स्वेत॥ पीरो॥ हस्यो॥ श्यांम
श्रीस्वांमिनीजीकेअंगकोवर्ण श्रीस्वांमिनीजीअंगमुखचंद्रते
प्रगटेहें॥ तातेश्रीचंद्रावलीजीनांमहे॥ तातेस्वेतवर्णअबीर
गुलालकोश्रीस्वांमिनीजीकोहास्यरसकहेतहें॥ यहभावहे
हस्यो श्रीगोपीजनको श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजीमेभावहे
तातेदोऊनकेवर्णरूपहें॥ श्यांमश्यामलाजीअपक्षपीतमें
परंतुभगवदसंबंधीमेप्रभुकेपक्षपातीहें॥ श्रीस्वांमिनीजी
केकाकाजीवेटीहें॥ परमचतुरचोलासेवधमेहें॥ चोवाश्रीय
मुनाजीकोअंगवर्णहें॥ जिनकेप्रबोधतेखेलमेविरोधता
नहीहोई॥ परमस्नेहपरस्परवटे॥ नानाप्रकारकीकंचनकी
रत्ननजटितकीछोटीबडीपिचकारीहें॥ तातेजिनकेकेसर
रंगहें॥ तातेश्रीस्वांमिनीजीकेहृदयकोनिर्मलाप्रेमहेंसो
जिनकोभिजावतहें॥ सोप्रेममेमस्तहोय॥ परस्परचलतहे
कुंमकुंमहे॥ सोकांमकोअंकुरहें॥ जांमेगुलालभरिकेमारतहे
सोतिनकोकांमरूपसनेहहें॥ सोश्रीठाकुरजीमेकेहोतहेंअर

रोरीहै सोहोरीमेमुषमांड़ेनहे॥ ब्याहकृतकरिकें तातेंश्रीस्वांमि
नीजीकी सखीविसारवारूपहे॥ औरहरदी पीसिकेलगावतहें सो
ऊब्याहसंबंधिनीहैं॥ सोभामासखीरूपहैं॥ औरतेलफुलेल श्री
स्वांमिनीजीको लेह सखिकन औरजोगेंद फूलनकी अपने अ
पनेजूथमेहू होतहैं॥ सोपरमचतुरजहांजांनतहैं॥ सोतहांखे
लकीयरस्पर आनंदरूपलराईकरतहे॥ औरकरावतहे॥ और
नवलासीहैं॥ सोपरमकोमलसुकुमारताकीअवधीहैं॥ सोऊने
लनमेअरूढ़हैं॥ फूलनकोछुजोरैंदाहैं॥ सोपरमनिकट श्रीअंछु
रजीहृजमकनकेंजूपराकठोरहोतहैं॥ तबतिनकोकांमप
रतहैं॥ परस्परकुमारिकाकेधंसमचावतहैं॥ औरदृजमतके
नकेहाथमेंधसंतहूहै॥ सोवड़ेषड़ेजोधागोप हैं॥ सोहाथमेंडे
रीलीरोठाटेहैं॥ सोरंगापिचकारीगेंदछड़ीनेरंचकनांहींडरपत
तिनकोबांसलेकेंतिनमाधिकोभजायदेतहैं॥ सोयाप्रकार
जिननीकोरीसांमिग्नीहैं॥ सोसवभावरूपहीहैं॥ परमअलो
किकपदार्थहैं॥ अवअनेकबाजेनकोभावकहेतहे॥ अथवा
जेनकीभावना॥ बीनश्रीस्वांमिनीजीकेसंयोगसमेकुंजहे॥ १
मुरलीश्रीस्वांमिनीजीवियोगसमें॥ अमृतकुंडलीश्रुतिरूपा
वियोगसमें॥ ४॥ जलतरंगश्रीस्वांमिनीजीकोवियोगसमें॥ ५
मदनमेरिश्रुतिरूपाराजसी॥ ६॥ धोसाश्रुतिरूपानांमसी॥ ७
इंदुभीश्रुतिरूपासात्वकी॥ ८॥ निसानकुमारिकासात्वकी॥ ९
नगाराकुमारिकाराजसी॥ १०॥ संषकुमारिकातामसी॥ ११॥ घंटा
कुमारिकासात्वकी॥ १२॥ मुषचंगकुमारिकासात्वकी॥ १३
अंगमारसात्वकीराजसी॥ १४॥ खंडरीकुमारिकाराजससात्व
क॥ १५॥ तालकुमारिकाराजसतांमस॥ १६॥ कठमालकुमारि
काराजसराजस॥ १७॥ मजीराकुमारिकातामससात्वक॥ १८

महुवरकुमारिकानामसराजसकुमारिकामेतांमसनांही॥ १९॥ था
रीश्रुतिरूपासात्वकराजस॥ २०॥ कालरश्रुतिरूपासात्वकसात्व
क॥ २१॥ ढोलश्रुतिरूपासात्वकतामस॥ २२॥ डफश्रुतिरूपा
सात्वक॥ २३॥ डिमडिमश्रुतिरूपाराजससात्वक॥ २४॥ झांझिश्रु
तिरूपाराजस॥ २५॥ गिरगिरीश्रुतिरूपातामससात्वक॥ २६॥ पि
नाकश्रुतिरूपातामसतामस॥ २७॥ रबावश्रुतिरूपातांमसरा
जससात्वक॥ २८॥ जंत्रश्रुतिरूपातामसराजससात्वक॥ ३०॥ मृ
दंगललितारासलमें॥ ३१॥ सहनाई श्रीयमुनाजीमधुरेसु
र॥ ३२॥ सुरमंडलीविसाखाजीसुरदेतहैं॥ ३३॥ इधरारूपा
मलाजीसषी॥ ३४॥ सारंगीचंपकलतासषी॥ ३५॥ करनाल
भामाजी॥ ३६॥ उरहीकांमासषी॥ ३७॥ किनरीसहचरीआदि
याप्रकारअनेकबाजेलीलासंवेधीहैं॥ होरीमेसववस्तुभाव
त्मकहें॥ महारसरूपअलोकिकहैं॥ जोकोऊसषीश्रीनंदरा
यजीकेघरवसंतकोसाजलेकरआवतहैं॥ कोऊसषीश्री
वृषभांनजीश्रीकीरतिजीकेजाचतहैं॥ तहांश्रीकीरतिजी
पासजायललितावि साखाआदिअंतमधुरवचनसो
कहेतहैं॥ जोकीरतिआजवसंतकोदिनामथमषेलकोहै
सोअपनेअपनेघरतेहमजुहारेपासवीनतीकरनआई
हैं॥ तातेंआपनीवेटीकोहमारेसंगदेऊतोहमपरस्परहोरी
षेलें॥ सोतवश्रीकीरतिजीअत्यंतप्रसंनहोयश्रीस्वांमिनी
जीकोअभ्यंगस्नानकरायो॥ पाछेनौतनवसनआभूषणप
हरायपाछेनानाप्रकारकेभोजनसषीनसंगकरायआर
तीकरायषेलनकोसाजगुलालअबीरकेसरकेरंगआदि
पिचकारीसवनकोकही॥ पाछेललितादिकअष्टसषीनने
कही॥ जोदेषियोमेरीवेटीपरमसकुमारअत्यंतभोरीहैं षेल

जेकहैं अकेलीमति छोड़ियों॥ तब सबनने कही जो श्रीकीरतिजी
यह तुम्हारी बेटी हैं॥ सो हमको प्राणप्रिय है॥ तातें तुम रंचक
हू वेटीकी चिंता मति करो॥ हम अपने प्राणकी नांई आंषिमें
निसो राषेंगी॥ याप्रकार श्रीकीरतिजीको भलीभांति सो समाधा
न करत हैं॥ पाछे श्रीस्वामिनीजीको लेचलीं॥ सो वसंतको सा
ज सिद्धि करिकें॥ श्रीनंदरायजीके घरको समाज सहित लेचली
सो वसंतको साज सिद्धि करिकें॥ एक कंचनको कलस सो तामें
जल कुंजरूप॥ तापर खजूरकी डार सो हस्तरूप तामें बोरसो
आभूषणरूप सो तापर सरस्योंके फूल गुलाबार विंद रूप रस
मे फूल हैं॥ सो फूल आदि डारी मतरूप॥ और ऊपर गुलाल अ
बीर अबिरके हैं॥ ऊपर पीरो वस्त्र अपने अंचल सो कुचरूप पठा
रेहें॥ केवल प्रभु अंगीकार करिवे योग्य हैं॥ यह वसंतकी सांमि
ग्री प्रभुको दिखाय अपने हृदयको अभिप्राय जनावे॥ याप्र
कार गोपीजन श्रीस्वामिनीजीको आगे पधराय श्रीनंदरा
यजीके घरको चली हैं॥ सो तहां रोहिणीजी पहलेंही ते हती जो
आज गोपी वसंत खिलायवेको आवेगी॥ सो तातें रात्रिमें उन रा
ज भोगकी सामिग्री करि राखी हैं॥ सो प्रातःकाल श्रीयसोदाजी
श्रीठाकुरजीको बहोविधसों जगाये॥ लाल मोर मपोहे पिरे
यावोली॥ गाय वछरा सब वासवनु हारे मारग देखत हैं सो सुं
दर वदनकमलको दिखावो॥ नानाप्रकारकी मंगलाकी सांमि
ग्री सिद्धि करि राखी हैं॥ सो अरोगे अपने कच्छन करो॥ परंतु श्री
ठाकुरजी जागे नाहीं॥ जो आज वसंत पंचमी है॥ सो गोपी वसं
त खेलनको आवेगी॥ तातें बेग उठो स्नान करो सिंगार करो
सो इतनो सुनतही श्रीठाकुरजी बोलेंपरे॥ सो उठिके बैठे अ
रके हे॥ जो मैं या गोपीकेव वसंत षिलायवेको आवेंगी॥ तब श्री

यसोदाजी आपु भगवानको गोदमें उठायकें हृदयसो लगाय मुष
जेवन करि सुंदर सिंघासन पर पधराय मंगलभोग आगे राषें
पाछे सामिग्रीकी त्यारी करी॥ सो ताही समय श्रीस्वामिनीजी स
मस्त व्रजभक्तनके जूथ सहित आई॥ तब श्रीयसोदाजी तथा
श्रीरोहिणीजी अत्यंत आनंदसो परमप्रीति सो सबनको अ
पने घर पधराये॥ पाछे श्रीस्वामिनीजीने अपने श्रीहस्त
सो श्रीठाकुरजीको अभ्यंग करिकें स्नान कराय पाछे कोमल व
स्त्रसों श्रीअंग अंगोछि नानाप्रकारके शृंगार धराये॥ स्वेत पाग
कुलह पाग उनके आभूषण पहरें॥ सो या प्रकार शृंगार करि
पाछें शृंगारमें गोपीवछराभभोग॥ अपने अपने मनोरथकी सा
मिग्री आरोगे॥ पाछे ततकाल रोहिणीजी राजभोग सिद्धि क
रिके लाईं॥ सो तब श्रीयसोदाजी बोहोत प्रसन्न भई॥ और कही
जो तुम्हारो स्नेह हमारे कान्ह पर बोहोत हैं॥ सो मैं जानत हों॥ पाछे श्री
नंदरायजी॥ श्रीठाकुरजीकों श्रीबलदेवजीको गोदमें ले ना
नाप्रकारके मनुहार करि जिमावत हैं॥ और नंद उपनंद आ
दि गोप सब श्रीनंदरायजीके संग भोजन करत हैं॥ सो या प्रका
र भोजन करि हाथ धोय बीड़ा आरोगत हैं॥ पाछे श्रीयसोदाजी
श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी तथा सगरे व्रजभक्त भोजन कर
अचवाई बीड़ा देत हैं॥ पाछे आरती करत हैं॥ पाछे श्रीनंदराय
जी आप वड़े आभूषण रतनन पचित हैं॥ और श्रीनंदरायजीको
आंगन रतन नरवचित हैं॥ तब श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी श्री
नंदरायजी श्रीयसोदाजी अपने पुत्रको गोदमें लीये हैं॥ और
श्रीस्वामिनीजी अपने संग अष्ट सखी आदि वसंतको साज ले
श्रीठाकुरजीको खिलावत हैं॥ सो तब श्रीयसोदाजीके आगे रं
गके वागा सो खिलाय कुंमकुंमको तिलक कीयो हैं॥ सो पाग पर रं

चकगुलालछिरकायकछूथोरोसोश्रीयसोदाजीकोछिरकेहै
तवश्रीयसोदाजीनेकही॥ जोआजप्रथमखेलमेरेआंगनमेहोतो
तवश्रीवलदेवजीसहितनंदरायजीआदिजोनंदआनेकगोप
गोपीश्रीवलदेवजीकोआगेकरिखेलनलागे॥ सोश्रीयसोदाजी
सवसोवचिकेन्यारीठाढीभई॥ सोएकछोटोसीकनिकाषिचकाई
रंगसोभरिकेश्रीठाकुरजीकेहाथमेदई॥ सोसषीनकोनिकट
वुलाइकेश्रीठाकुरजीसोछिरकाई॥ सोतवश्रीठाकुरजीकहेजो
मेयामेसवगोपीनकोछिरकिवेजाऊ॥ सोतवश्रीयसोदाजीने
वरजे॥ औरकही॥ जोपुत्रभीरवोहोतहें॥ सोयाभांतिसोश्रीय
रासे॥ पाछेश्रीनंदरायजीतथासवगोपगोपीआछीभांतिसोव
संतखेलनलागे॥ तवश्रीललिताजीनेश्रीस्वांमिनीजीसोप्र
छी जोतुमन्यारीक्योंठाढीहो॥ जोवसंतखेलोगे॥ तवश्रीस्वांमि
नीजीनेललितासोकही॥ जोमेतोजवहीवसंतषेलोंगी जोमेव
पेश्रीनंदरायजीकेपुत्रश्रीयसोदाजीकीगोदमेहेसोखेलेंगे
सोगोपिनकेसंगमेखेलोंगी॥ जोरजमेचलोंगी॥ तववसंतहोरी
कोसुखहोइगो॥ तवललितावीसाखादोऊसखीश्रीयसोदा
जीकेनिकटआयहाथजोरिवीनतीकरनलागी॥ जोआजव
संतकोप्रथमदिनखेलकोआरंभहें॥ तातेहेश्रीयसोदाजी
प्रथमहमतुमकोछिरक्योचाहतहें॥ काहेतेजोतुमनेऐसो
पुत्रजायोहें॥ जोयहतुम्हारोपुत्रसवनकोप्रांणप्रियहें॥ और
परमसुकुमारहें॥ औरहमारीराधाअत्यंतसुकुमारपरम
सुधीभोरीहें॥ जोकछूछलचतुराईनांहीजांनतहें॥ सोमेआछी
भांतिसोजांनतहुं॥ तातेतुमअपनेपुत्रकोमोकोदेऊ॥ तवतुम
कोछिरकेगो काहेतें॥ जोकहूंतुम्हारेपुत्रऊपररंगपरेगो तोइ
नकोसोतलगेगो॥ सोयहसुनिकेश्रीयसोदाजीकोहोनप्रसंनभई

औरकहीजोललितातुमेरेमनकीजांनतहें॥ औरमेजांनतहो
जोतुमेरेपुत्रकोआछीभांतिसोराखेगो॥ तवश्रीयसोदाजीनेल
लिताजीकीगोदमेश्रीठाकुरजीकोदीये॥ सोतवललिताहरिले
केठाढीभई॥ पाछेसवसषीनसहितश्रीस्वांमिनीजीनेश्रीयसोदा
जीकोआछीभांतिसोछिरके॥ सोतवनंदरायजीप्रसंनहोयस
वगोपीनकोमेवामिठाईवस्त्रआभूषणपहराय पाछेश्रीयसो
दाजीअत्यंतप्रसंनहोइकेनानाप्रकारकीमेवामिठाईवस्त्रआभू
षणश्रीस्वांमिनीजीकीसवसषीनकोपहराई॥ तहांश्रीवृष
भांनजीकेगोपहुते॥ सोश्रीनंदरायजीकोवोहोतआछीभांति
सोछिरके॥ सोइननेमेललितानेश्रीयसोदाजीसोंवीनतीकरी
जोआजवसंतपंचमीकोपरमउत्सवकोदिनहें॥ तातेतुमअप
नेपुत्रकोआज्ञादेव्रजमेवसंतषिलावो॥ औरतुम्हारेपुत्रकोरे
चकहूश्रमनहोइगो॥ सोऐसीभांतिसोराखेंगे॥ काहेतेतुम्हा
रेपुत्रतेहमारीपरमसोभाहोतहे॥ तवश्रीयसोदाजीनेप्र
संनहोइकेकही॥ जोहेललितातुमकोपरमप्रियहे तातेतेरे
वचनटार्योनांहीजातहें॥ औरयहमेजांनतहो जोमेरेकन्हैया
कोआछीभांतिसोराखोगी॥ सोयाभांतिश्रीयसोदाजीनेललि
तासोकह्यो॥ पाछेश्रीठाकुरजीकोमुखचुंवनकरिपूछी॥ जोअप
होमेरेलालप्रांणकेजीवनमेरेहृदयकेभूषणमेरेनेननकेता
रे॥ मेरेगृहकेदीपकआपहोव्रजरखवारे॥ यहललितावसंतषे
लिवेकीव्रजमेकहेतहे॥ जोतुम्हारोमनहोइतोमेरेपासरहो
औरतुम्हारोमनहोयतोललिताकेसंगवसंतषेलिवेकोव्र
जमेजाऊ॥ सोतवश्रीठाकुरजीकहे॥ जोमैयामेललिताके
संगवसंतषेलिवेजाऊंगो॥ जोमोकोललितावोहोतआछीभां
तिसोराषतहें॥ सोयहश्रीठाकुरजीकेवचनसुनिकेश्रीयसोदा

जीनेश्रीठाकुरजी औरश्रीवलदेवजीकोनिकटबुलायकेकही जो
तुममेरेकन्हैयाकेसंगजाऊवनमेगोपीवसंतखेलिवेकोजातहे
सोतुममेरेकन्हैयाकोप्यारेसलीसेठाढेरहीयो॥ जोवडेवडेगोप
गोपीखेलेगे॥ सोतहांभीरमेलेकेतुममातिजेयो॥ तवश्रीवलदे
वजीनेकही॥ जोमेकन्हैयाकेसंगजाऊंगो॥ तुमकछुचिंतामतिक
रो॥ जोमेआछीभांतिसोराखोंगो॥ पाछेश्रीयसोदाजीअपनीअं
तरंगसखीकोबुलायकेमेवामिठाईदेकेकहें॥ जोउहांमेसेपुस
भूषेहोइतवआरोगाईयो॥ औरआछीभांतिसोराषीयोजोमेतु
म्हारेभरोसेअपनेकन्हैकोपठावतहों॥ पाछेश्रीयसोदाजीनेवडे
वडेगोपनकोबुलाइकेकही॥ जोमेराकन्हैयाव्रजमेवसंतखेलन
जातहें॥ सोगोपीनवजोवनउन्मतहें॥ औरमेरोकन्हैयापर
मसकुमारहें॥ अत्यंतचंचलहे कहंभोरमेनजाय ऐसेराषि
यो॥ जोकोउगोपीकोनिकटमतिआवनदीजो॥ जोमेरेपुत्रकीर
साकरीये॥ जोतुमगोपीनकेसंगषेलियो॥ सोयाप्रकारश्रीयसो
दाजीनेसवनसोकही॥ पाछेश्रीनंदरायजीअपनेशस्त्रधारी
गोपश्रीठाकुरजीकेसंगदीये॥ सोरक्षाकररखाथें॥ सोयाप्रकार
गोपगोपीसषाश्रीठाकुरजीश्रीवलदेवजीसहितगोकुलकीग
लीनमेपधारे॥ सोकिलकारशुनतहीं अपनेअपनेघरतेश्रीयु
ठयावसंतखेलनकोनिकसे॥ तवश्रीठाकुरजीललिताकी
गोदमेसोउतरे॥ सोउतरिकेश्रीवलदेवजीकेपासआइकेक
ही॥ जोअरेभैयाहोमेरेनंदवावाकीओरकेसषाहो॥ सोसव
मेरीओरआवो॥ औरवृषभानुरावाकीगोपीहोउ सोएकओरहो
इवसंतषेलो॥ सोइतनोसुनतही श्रीस्वामिनीजीअत्यंतप्रस
नहोई अपनीसषीनकेझुंडसहितश्रीठाकुरजीकेसन्मुषठाढी
भई॥ औइतमाऊश्रीठाकुरजीश्रीवलदेवजीसषासहितअपने

जूथमेठाढेभएरे॥ तवश्रीठाकुरजीप्रथमकेसरिकीपिचकारीभरि
केचलाई॥ पाछेअबीरगुलालकीपोहरीचलाई॥ पाछेश्रीवलदे
वजीसषानसहितगुलालउडायो॥ सोगगनमेमानोअरुनतासेत
पीरेश्यामवादरछायरह्येहें॥ ऐसेगुलालउडायो॥ सोसूर्यछिप
गयो॥ तवश्रीठाकुरजीअपनेहस्तकीछोटीसीपिचकारीश्री
यसोदाजीनेदईहें॥ सोभरिकेश्रीदामाकेहाथमेपिचकारीहती
सोलेकेगोपीनकेझुंडमेपेठिगयो॥ सोकाहूकेहारतोरेकाहू
कीचोलीफारी॥ औरकाहूकीघुंघटमरोरी॥ औरकाहूकेकपोल
चुंबनकीये॥ औरकाहूकेकपोलनपेगुलालमललगायो॥ औरका
हूकेपेंचलउलटेकीये॥ औरकाहूकोकेसररंगसोभीजोयदीये
औरकाहूकोआलिंगनदीये॥ औरकाहूकोअधरामृतपान
करायो॥ पाछेअपनेजूथमेंफेरिआयठाढेभए॥ जोगोपीननेके
होतजतननकीयो॥ परंतुकाहूकेहाथनआए॥ सोअत्यंतचंच
लश्रीवलदेवजीकेपासआइकेठाढेभए॥ तवश्रीवलदेवजीने
प्रछीजोतुमकहांगरोहते॥ तवश्रीठाकुरजीकहे॥ जोश्रीदामा
पासमेरीपिचकारीहती॥ सोलेनगयोहतो॥ सोयहसुनिकेश्री
वलदेवजीचुपहोयरहे॥ सोगोपीजनचातुरीसुनिकेमुसिकानी
तवश्रीस्वामिनीजीनेकही॥ जोदेषिललितायानंदकोवेटाअ
त्यंतचंचलहें॥ जोअपनोदावयहदेगयोहें॥ अवऐसोजतन
विचारो॥ जोश्रीठाकुरजीकोतथाश्रीवलदेवजीकोसंगपक
रिलाईयें॥ सोयहसुनिसगरीगोपीकोपी॥ सोयहांश्रीठाकुरजी
नेश्रीवलदेवजीसोकह्यो॥ जोहेदाऊजीअवतुमसावधानरहीयो
जोहमतुमपरगोपीकोपीहें॥ जोकहूंगोपीपकरेगीतोअनेक
नाचनचावेगी॥ तवश्रीवलदेवजीनेकह्यो॥ जोमेतोसावधान
हो॥ परंतुतुमअपनेकोसावधानरहीयो॥ औरयहांश्रीस्वा

मिनीजीकीएकसषीसुवलकोभेषवनी॥सोसषीसुवलहोयश्री
वलदेवजीकेकांममेंजायकेकह्यो॥जोतुह्मारेऊपरसषीआवत
हैं॥सोतुमश्रीकृष्णकेभरोसेमतिरहीयो॥यहवडोछलीहेतुमको
पकरायकेआपुभागिजाइगो॥तातेतुममेरेसंगचलोतोमैंतु
मकोवचाऊं॥सोतवश्रीवलदेवजीनेकही॥जोअपरमैंयातुव
लतुमकोवचाय॥जोश्रीकृष्णवड़ोछलीहें॥सोमोकोपकरायके
आपभाजिजाइगो॥सोतातेमोकोअपनेसंगलेचलोमेंवस
रावीमेंमनहोनतश्रीवलदेवजीकोसषीननेयाप्रकारअपनेमं
धमेलेजाइकेपकरे॥ओरयहांश्रीठाकुरजीश्रीवलदेवजीकोदू
ढनलागे॥सोइतनेमेंललितापरमचतुरअपनेतंत्रचलेहें॥सो
पाछेतेपकरिकेअपनेजूथमेंश्रीठाकुरजीकोलेगई॥ओरस
षासवभागिगये तवश्रीस्वांमिनीजीनेश्रीठाकुरजीकोसुषपु
लालरोरीहरदीसोमल्यो॥सोऐसेमुषमांड्यो ओरकसकेवंदी
दीऐ सर्वांगपरसकेरोजोएकसषीनेश्रीवलदेवजीकोमुष
मांड्योकेसरिकेरंगसोछिरके॥पाछेश्रीचंद्रावलीजीनेश्रीस्वांमि
नीजीसोंकह्यो॥जोआजकोपहलोदिनहेसोप्रथमषेलकोइ
नानेछिरकोमतिवोहोत॥जोकहूंश्रीयसोदाजीसुनेंगीतो
कालिहू खेलनकोनपठावेगी॥सोतवयहसुनिकेश्रीचंद्रावली
जीश्रीस्वांमिनीजीवोहोतप्रसंनभई॥पाछेश्रीमुषमांड्योहे
सोअपनेअंचलसोंपोंछ्यो॥जोएककुंमकुंमकोतिलककीये
जोवस्त्रवागोछिरक्योहतो॥सोसवदूसरेपहराये॥सोजेसे
प्रथमपहरेहते॥सोतेसोशृंगारकरिश्रीस्वांमिनीजीकेमनो
र्थकीसांमिग्रीसोश्रीठाकुरजीकोआरोगाई॥सोताईभाव
सोवसंतपंचमीकेउत्सवकोभावन्यारोआवेहे॥पाछेसिंघा
सनषिलावेसोयहभावहे॥जोइतनेमेंश्रीललिताजीआइकेए

कओरश्रीठाकुरजीकेवांमओरश्रीस्वांमिनीजीकोगोदमेंवेठारि
लीऐ॥पाछेसषनसोंकही॥जोअवहोतवेरभईहे॥सोश्रीय
सोदाजीषीजेंगी॥जोसवेरेफेरिखेलनकोआवेंगे॥ऐसेकहिपा
छेश्रीयसोदाजीकेपरमप्रेमसोंहोलेहोलेचलतहें॥ओरश्री
स्वांमिनीजीपरस्परमंदमंदमुसिकातहें॥ओरसषीआगेन
त्यकरतजातहें॥ओरअपसपासषीगारीऊंचेसुरसोंदेत
हें॥ओरखलीजातहे॥जोदोऊओरकेवागीजा तालमृदंगकोटि
सहनाईढोलडुंडुभीवांसुरीमुषचंगनफेरीसोइत्यादिकवाजे
वाजतहें॥सोपरमआनंदकेरसमेंदोऊसगरेवृजकेलोगछके
हें॥सोयाप्रकारश्रीनंदरायजीकेघरपधारतहें॥सोकेसीउपमा
भईहें॥जोमांनोएककनकेतनकोलालनकोटिस्वांमिनीनेचेइमांधे
स्योहे॥सोकुलाहलसुनिकेश्रीयसोदाजीपरमआनंदपायके
आरतीउतारी॥पाछेराईलोनउतारअपनेकन्योछावरकरिआ
रतीवारतहें॥जोअनेकआभषणवस्त्रजाचकनकोदेतहें॥पाछे
श्रीठाकुरजीओरश्रीस्वांमिनीजीकोगोदमेंलेश्रीवलदेवजी
कोगोदमेंलेमंदिरमेंपधराये॥सोसुंदरसिंघासनपरश्रीठाकु
रजीश्रीस्वांमिनीजीकोपधरायदोऊनकोनानाप्रकारकीस्वांमि
नीप्रेमपूर्वकआरोगाये॥तवताहीसमयश्रीयसोदाजीतेल
लिताजीसोंकह्यो॥जोहेजसोदाजीमेंतुह्मारेपुत्रकोवोहोत
आछीभांतिसोंराषततहे॥जोदेखोसवकेवस्त्रभीजेहें ओर
तुह्मारेपुत्रकेसूकेहें॥सोतवश्रीयसोदाजीप्रसंनहोयकेवो
लीं॥जोहेललितामेंतुह्मारेभरोसेअपनेपुत्रकोपठावतहों
जोमेंजांनतहों॥जोतुह्मारोस्नेहमेरेकांन्हपरवोहोतहें॥तवश्री
वलदेवजीवोले॥जोहेश्रीयसोदाजीहमारेपुत्रकोतोमेंने
आछीभांतिसोंराख्योहो॥ओरयेललितनाइंगेघींहसोंमोकोअ

रश्रीकृस्नकोहूपकरिलेगई॥ सोवोहोतछिरकेओरसुषमाउनोऽधे
रअनेकभांतिसोखोटीखोटीगारीदीनीहें॥ तातेयहलालितानोंदु
टीहे॥ जोउहातेंआगेवातवनावतहें॥ तबश्रीयसोदाजीनेल
लितासोकही॥ जोतेनेमेरेकन्हैयाकोवोहोतश्रमकरायोहें॥ जोमे
तुमकोंअपनीजांनिकेंइनकोतुम्हारेभरोसेखेलिवेकोंपठावत
हो॥ अबमेंअपनेपुत्रकोंकबहूनपठाउंगी॥ मेरोसकुमारभोरो
हे॥ अबमेंअपनेपुत्रकोंकबहूनपठाउंगी॥ मेरोसुकुमारभोरो
वातकहें॥ तबललितानेश्रीठाकुरजीकीओरदेषिसेनमेंहेकु
होंं॥ जोअबतुंमहमकोंसांचीकरो॥ नहीतोअबकालितेहोरीखेल
केसेबनेगो॥ तबश्रीठाकुरजीकहे॥ जोमैयाजीदाऊजीनेंदुं
टेहें॥ जोदाऊजीसोऔरगोपीनसोखेलबेडगरोभयोहें॥ ताते
लिताकोंदुंडेईदोषदेतहें॥ इननेमेमधुमंगलबोल्योजोहेश्रीय
सोदाजीतुमनेश्रीबलदेवजीकेवचनकोंमलोविस्वासकीयोइन
कोंअपनेसरीरकीतोसुधिरहेतनांहीहें॥ श्रीललिताजीतुम्हारे
आगेश्रीठाकुरजीकोंगोदमेलीसेआईहें॥ इननेमेंऔरसषीगो
पकहेजोललितादिकगोपनसोंतोनिहारेपुत्रकोंवोहोतस्नेहहे
ताते ललितासांचीहे॥ तबश्रीयसोदाजीनेललितापरवोहोतप्र
सेनभई॥ पाछेमेवामिठाईवस्त्रआभूषणनानाप्रकारकेगो
पीगोपनसहितनपहरायबिदाकीये॥ औरबोहोतबीनतीकी
रे॥ जोधेन्यहमारोभाग्यहे॥ जोतुमसगरीगोपीहमारेघरआवत
हो॥ मेरेकठिनबचनकोतुरोमतिमांनियो॥ मेसबनकीतुम्हारी
आसाकरराखीहो॥ कालिफेरिइनगलीनखेलनवेआईयो॥ कीरति
रानीवृषभांनराजासोहमारोपालागनकहीयो॥ तबश्रीस्वांमि
नीजीश्रीयसोदाजीकेपायछूकेउठी॥ तबश्रीयसोदाजीआ
सीसदीरे॥ जोतुम्हारोअचलसोभाग्यहोई॥ याप्रकारश्रीस्वा
मिनीजीसषीनसहितअपनेघरपधारी॥ सोतबकीरतिजी

हारपरआयआरतीकरिघरमेपधरायनानाप्रकारकीसांमि
ग्रीआरोगायकेसेंनकराये॥ यहांश्रीबलदेवजीश्रीठाकुरजीसो
कहे॥ जोतुममेंकोंश्रीयसोदाजीकेआगेंडठकीये॥ मेतुम्हारेसं
गनबलोगगोखेलिवे॥ तबश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीसोकहेजो
हेदाऊजीतुमतोसदांसांचेहो॥ परंतुतुमघरकेहो तातेहोइवा
नकहीतोविंतानांही॥ परिबकहिरसोआवेतोताकोसन्मानक
ह्योहेंचहीये॥ मोकोतोतुमहीआछेरापवतहो॥ हमतुमतोसदांरा
कहीहे॥ यहसुनिकेश्रीबलदेवजीमुसिकाये॥ पाछेश्रीयसोदा
जीसषागोपनकोंभोजनकरायविदाकीये॥ अबसषीआदि
श्रेनरंगपासरहें॥ ताछेसुंदरसिज्याबिछायकेंश्रीठाकुरजीको
गोदमेलेबेठी॥ तबअनेनरंगीसषीनकोंवोहोतसन्मानकीये
पाछेश्रीयसोदाजीश्रीठाकुरजीकोंसुखबुंबनकरिअनेक
प्रकारसोंपालनकरिपूछेहें॥ जोतुम्हारोमनगायचरावनको
हे॥ केहोरीखेलनकोहें॥ श्रीठाकुरजीबालभावसोंश्रीयसोदा
जीकेग्रीवामेलिकेकहे॥ मैयामेंबसंतहोरीखेलोंगो गायचरा
वनकोबसंतहोरीकेदिनमेंनजाउंगो॥ तबश्रीयसोदाजीश्रीठाकु
रजीसोंमुखचुंबिकेबोली॥ जोबोहोतआछो॥ गायहोरीतोरईकोई
औरचरावेगो॥ तुंमललितासंगहोरीखेलियो॥ तबश्रीठाकुरजी
बोले॥ जोमैयाजबगोपीजनबसंतहोरीखेलिवेकूंआवतहें॥ सोतब
मोपेफगुवामांगतहे॥ सोमेरेपासतोकछूहेनहीसोउनकोदेउं
सोमोकोंबोहोतखिजावतहें॥ जोराजानंदजसोदाजीबडेराजाहो
हावतहे॥ परंतुबडेकृपनहें॥ एकपुत्रबडेभागिनतेंपायोहेसो
ताहूकोंकछूदेतनांहीहें॥ याप्रकारतुमकोंओरबाबाकोंगारीकौ
देतहें॥ औरमोकोंबोहोतखिजावतहें॥ सोतबश्रीयसोदाजीमेंआ
रकीकूंचीलेश्रीदामाकेहाथमेंदेकही॥ जोहोरीबसंतमेंमेरेकन्हैया

कछु कहे सो मेरे बिना पूछे आप पराव रूप मे वामि ठाई जो वहाँ
ये सो बिना पूछे लेजैयो॥ सो तब श्री ठाकुरजी और श्रीदामा सषा
श्री यसोदाजी पर बोहोत प्रसंन भए॥ पाछे श्रीदामा अपने घर आ
ये॥ श्री ठाकुरजी सयन कीये पाछे रात्र को कुंजन मे बसंत होरी
खेलत हें॥ यह मन में अनुभव करनो योग्य हें॥ तातें प्रकास नांही
कीयो॥ व्रज खेलन बनक हे तहें॥ पाछे फेर प्रातः काल भयो तब
सगरी सषी व्रषभांनपुरा की इकठोरी होय के श्री कीरतिजी के पा
स गई॥ सो तब कीरतिरानी सषीन साहित मिलि के अपनी बेटी के
स्नांन कराय नाना प्रकार के सुंदर सिंगार कराय नाना प्रकार की
सामिग्री सषीन साहित आरोगाई॥ पाछे परम आनंद सो सषी
न के संग खेला करी॥ तब श्री स्वांमिनीजी सषीन सहित श्री नंद
रायजी के घर गई॥ सो तब श्री यसोदाजी मंगल भोग आरोगाय
आरती कीनी॥ पाछे सषीन सहित श्री स्वांमिनीजी मिलि के सिंगा
र कराय अपने हाथ को सिंगार बनायो॥ पाछे राजभोग आरोगा
य श्री यसोदाजीने आरती करि खेलन को साज सब सषीन को
सोंपि के कही॥ जो मेरे पुत्र अत्यंत सुकुमार हें बालक हे कछु षि
लपनु रहें नांहीं हें॥ तातें याको बोहोत सावधानी राषियो तब
ललिताने श्री यसोदाजी सो कही॥ जो तुम अपने पुत्र की चिंता
मति करो मे आछी भांति राषोंगी॥ सो तब श्री यसोदाजी ने प्रसं
न होय बिदा कीयो॥ सो तब श्री ठाकुरजी व्रज मे आय के कहे जो
आज माह सुदी ६ हे॥ सो छे ओरि तु बसंत संयुक्त श्री वृंदावन
मे खेलेंगे॥ सो तब सगरे वृंदावन मे पधारे॥ सो तहां नाना प्रका
र के फूल फूले हें॥ भमर गुंजार कर रहे हें॥ गिरराज मे अनेक क
रनाद कर रहे हें॥ सो तहां सदाई बसंत रितु हें॥ सो तहां बसंत रितु
कहावत हें॥ जहां की महिमा ब्रह्मा शिव इंद्र नाहीं पावत हे

सो तहां श्री ठाकुरजी पधारि के यह मनोरथ कीयो॥ जो दाव पाऊं तो अ
रगजा लगाऊं गोपीन के मुष पर पोतो॥ श्री राधा हे तिन के मुषार
बिंद मे लगाऊं॥ और श्री स्वांमिनीजीने अपने मन मे मनोरथ की
यो॥ जो आज दाव पाऊं तो श्री ठाकुरजी के मुष मे पीरो गुलाल
लगाऊं॥ या भांति दोय मनोरथ करि पाछे मिलि के परस्पर बसं
त खेलिबे लागे॥ इतने ही मे श्री रेवतीजी अपनी सषीन सहित पधारी
सो तहां यह संदेह होय जो इनको आवनो द्वारिका लीला मे भ
यो हें॥ यहां व्रज मे केसे हे॥ तहां समाधान करत हें॥ जो यहां ब्र
ज मे सगरो आधिदैविक पधारे हें॥ यहां को छटा ते सगरे ले
लोकों मे पदार्थ भयो हें॥ श्री ठाकुरजी अंतरध्यान लीला कर
पाछे वज्रनाभ द्वारिका के भक्तन को ले के आये हें॥ तब श्री कालि
न्द्रीजी द्वारा सब को आधिदैविक स्वरूप देषत हें॥ उद्धव कुं तमो
खर पर प्रगट होई॥ श्री भगवांन ने कहे॥ सो व्रज मे आधिदैवि
क उद्धव जी हे॥ अध्यात्म बद्रकाश्रम गरो॥ तेसेई पुष्टि भ
क्ति जन भक्तन श्री ठाकुरजी के भोग और मरजादा भक्ति व्रज
मे हे श्री बलदेवजी के भक्त नाते रेवतीजी द्वारिका मे हें॥ तिन को आ
धिदैविक श्री रेवतीजी अपने यूथ सहित मर्यादा भक्ति व्रज मे
हें तिन सो नित्य श्री बलदेवजी सो विहार हें॥ और सब नारादि
क आधिदैविक हें॥ नरसिंह सिंह पानी पर श्री रामचंद्रजी स
वन करमाय वेमें॥ बांमन सब हर लीयो॥ या भांति द्वारिका के
हें॥ तातें गारी मे सर्व द्वारिका की लीला कहि के गारी देत हें तो
हू मे संदेह न करनो॥ इहां सुभद्रा इत्यादि अर्जुन सब हें॥ सत्तभा
मा रुक्मिणी रस रूप हें॥ तब श्री ठाकुरजी श्री रेवतीजी को दे
षि के दाऊ ह्राय सो तारी बजाय के कहे॥ जो आछी भई भाभी होरी
षेलन आई हें॥ अब दाऊजी भाभी के संग बसंत खेलेंगे॥ और

मेवजभक्तनकेसंगवसंतषेलोगो॥ सोयाभांतिश्रीठाकुरजीकहे
सोतवयहवांराणीसुनिकें॥ सगरेगोपगोपीहसे॥ सोतवश्रीव
लदेवजीक्रोधहोयकेंबोले॥ जोहेमुग्धकृस्नताकोतोलजाभो
हीहें॥ औरयमेरीहहांसीकरतहे॥ तबश्रीठाकुरजीनीबोषु
नकरिमनरायकेकहे॥ जोमैयाजीमेतेतुमारीहांसीकहाक
रीहें॥ जोमेतोविवाहभयोहोततोतोमेंहूअपनीवहूकेसंगखेलत
तो॥ यांमेहांसीकाहेकी॥ यांमेतोहमारेउत्सारीपरमसोभाहे॥
यहसुनिकेश्रीवलदेवजीकृस्नकोभोरोजांनिहृदयसोलगाई
लीयो॥ तबसगरेगोपगोपीहसे॥ सोतवश्रीरेवतीजीसंकोच
पायकेन्यारीठाढीभई॥ सोतबललिताजीनेश्रीरेवतीजीकोनि
कटजायकेकह्यो॥ जोवसंतहोरीकेदिननमेंऐसीलाजनच
हीये॥ जोआछेखुलकेप्रसन्नतातेहोरीवसंतषेलो॥ सोतव
श्रीरेवतीजीसखीनसहितअनेजपमेंआयहोरीषेलनल
गी॥ तहांकोईसखीसखागोपनानाप्रकाररंगसोंपिछेराकिउ
लालतगाइनांवनचाइछोड़तहे॥ औरकोईगोपसखीनके
कुंडमेजायपरेहें॥ जिनकोगोपीगुलाललगायवस्त्रछीनिके
साड़ीलहंगापहरायनेत्रनमेंअंजनदेछोड़तहें॥ सोताहीस
मयमधुमंगलहोरीषेलसमाजदेषिप्रेममेंउन्मत्तहोयतांभ
ततांवनगोपीनकेकुंडमेजायपरयो॥ तवसवगोपीप्रसंनहो
इमधुमंगलकोअपरयजायगुलालसोछिरकनलागी॥ तवएक
सखीवोली॥ जोयहमधुमंगलतसाषाघड़ाछेलाहें॥ याकहेअप्र
गजासोक्योछिरकनहो॥ इनमांपनचोरीलीलामेश्रीठा
कुरजीकेधेंसंगहमारेघरनमेंवोहोतवेगारकीयोहें॥ ता
नेयाकोदेहमेघीमांषनइन्याहेजगावो॥ सोतवसवसखी
हसिकेमधुमंगलकेकपड़ाछीनिघीमांषनदेहसोपोन्त

लागी॥ सोतवमधुमंगलसषानेश्रीठाकुरजीसोपुकारिकेकही
॥ हेमैयाश्रीकृस्नतुंममोकोछुड़ाईयो॥ मोकोगोपीघीलगावतहें
तवप्रेममेंदृढिगयो॥ सोकही॥ जोमोकोघीखवावतहें॥ तवश्री
ठाकुरजीपुकारिकेकहे॥ जोभलेमैयागोपीतोकोघीखवावत
हें॥ तोआछीभांतिसोखाईयो हमकोअसोधीनाहिचहीये तव
मधुमंगलअपनेमनमेविचारयो॥ जोयेसवमेरीहांसीकरत
हें॥ औरयेमोकोछुड़ावेगेनांही॥ तामेमेहीकछूअपनेछुटिवे
कोउपायकरुं॥ तवमधुमंगलवोल्यो॥ जोतुमतोगोपीहोजेममो
कोछोड़ोतोमेंश्रीकृस्नकोतिहारेकुंडमेंलायदेऊं॥ इतनीसुनि
केश्रीस्वांमिनीजीनेहसिकेछोड़िदीयो॥ औरमेवामिठाईपाय
वेकोदेकेकही॥ जोतुमब्राह्मणहो॥ सोसांचेवचनवोलियोतो
कछुऔरदेऊगी॥ अवजाइकेश्रीकृस्नकोतातनमेंलगाइपक
रायदेउ॥ पाछेमधुमंगलश्रीठाकुरजीपासआयसगरीअप
वनीवातकहिकेकह्यो॥ जोमैयाश्रीकृस्नसगरीगोपीननेति
हारेपकरिवेकोविचारकीयोहे॥ सोतुमसावधानरहीयोमैयामे
तुमकोवचाउंगो॥ औरश्रीवलदेवजीकोंआगेकरिपकराय
देउंगो॥ तुमकोंकांधेपरचढायलेभगोगो॥ याप्रकारमधुमं
गलचतुराईकरिश्रीकृस्नकोअपनेकांधेपरचढायदेऊह
यानसोपकरिहोरिकेगोपीनकेकुंडमेजायकेवोठिगयो॥ सो
तवसगरीगोपीननेहोरिकेश्रीकृस्नकोपकरिलीयो॥ सोत
वश्रीठाकुरजीनेमधुमंगलसोकह्यो॥ जोअरेमैयामोहिसो
छलकीयो॥ तवमधुमंगलनेकही॥ जोतुममोकोछुड़ायोनो
ही॥ उलटीमेरीहांसीकरिकह्योघीखाऊ॥ तातेमेतुमकोप
करायो॥ सोतुमहकोमनमेभावतहे॥ तातेछलकीयोहे॥ पाछे
गोपीनचारयोऔरनेघेरिलीयो॥ आसपासतोसवगोपी

तिनकेमध्यमे श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी आपनेमनोर्थको
पीरेगुलाल आपनेहस्तकमलसो भावपूर्वक श्रीठाकुरजीके
मुखारविंदमेलगायो॥ सोतब श्रीठाकुरजीवोहोतप्रसंनहोई
आपनेमनमेविचारें॥ जोइननेआपनोमनोर्थकीयो॥ परंतुआ
वमेरोहूमनोर्थमयोचहीये॥ तातेगुलालकीपोटरीजोपीनके
फुंदुमेंबांध्यो औरचलाते॥ सोऐसेगुलालचलायो जोस
गरेगोपजोधीम्मारेहारिठाढेभरे॥ औरअंधारोहोइगयो
कछूसूझेनांही॥ तब श्रीठाकुरजी आपनेपीतांबरको अंचलवि
छाय॥ सोतापरगुलालबांहीदेकें श्रीस्वांमिनीजीकोवेठारेपा
छेआपुनेंतंआठरागगुलालहतो॥ सोआपनेहस्तकमलसोश्री
स्वांमिनीजीके मुखारविंदमेलगायो॥ औरवोहोतगुलाल
उड़ाय अंधारोकरि विहार आदि परस्पर अधरामृतपांन
हूकीये॥ दोऊस्वरूपपरस्परवोहोतप्रसंनप्रेममगनमनम
ये॥ ताहीसमय श्रीस्वांमिनीजीने श्रीठाकुरजीके हृदय
मेंआपनोप्रतिबिंब देषिमांनको अंगीकारकीयो॥ सोरुठिके
क्रोधसहितबेठी॥ जोतुमतोपरमकपटीहो छलसोभरेहो
मोकोऊपरसोसन्मांनकरतहो॥ यहकहिआपनेमांननिकुंज
मेमांनमंदिरहें॥ सोतहांताहीसमयपधारी॥ सोश्रीठाकुरजीप
कतेहोयरहें॥ भयकरिकछूवावनिकस्योनांही॥ विरहवसहो
इकेहृदिसाभूलिगये इतनेमेगुलालकीअंधियारीमिटि
गई॥ सोतब श्रीवलदेवजीसषांनसहित श्रीठाकुरजीकेनि
कटआइकेकहे॥ हे श्रीकृष्ण तोकोकहाभयो॥ सोउदासहोइ
केमुषसूकिगयो॥ सोतब श्रीठाकुरजीकहे॥ जोहेदाऊजीमे
कोखेलमेगुलालकीपोटरीवोहोतलगीहें॥ तातेमेरोमनअ
वहींठिकांनेनांहीहें॥ अबहीतुममोसोंबोलोमति॥ तबसषान

व आइकेकोऊनेहाथ सांपनलागे कोऊपांवचांपनलागे॥ औरक
हेभैया श्रीकृष्णपोढ़ें टरोलागीहें॥ अबआछेहो॥ तब श्रीठाकुरर
जीतोकाहूसोबोलतनांही॥ इतनेमेसुबलसषानेजांन्यो जोयह
सहजकीपोटरीनांहीहें॥ सोसुबलसषाने श्रीबलदेवजीसो
कह्यो॥ जोतुमसगरेनेकदूरिठाढेहोऊ तोमे श्रीकृष्णसोपूछोंजो
कहांपोटरीलागीहें॥ तुमनेबांस्योऔरतेंघेरिलीयोहें॥ तातेय
हखरोईघबरायगयोहें॥ तब श्रीबलदेवजी औरसगरेसषा
न्यारेठाढेभये॥ तबसुबलसषाने श्रीठाकुरजीकेकांनमेकह्यो
जोआपनेहृदयकोदुषमोसोकह्योजायतोमेजतनकरो॥ तब
श्रीठाकुरजीकहे॥ जोभैयातोसोकहाकहीये॥ तूतोसबजांनतही
हें॥ मेरेविनाअपराधवेमांनकरिकेउठिगईहें॥ अबमेतोतेके
हाकहोंमोपेतोउनविनारह्योनांहीजातहे॥ सोतबसुबलनेक
ह्यो जोतुमचिंतामतिकरो॥ जोमेंऔरललिता दोऊमिलिकेअ
वहीलिवाइलावेंगी॥ सोतबसुबलसषासषीकोभेषवनाइल
लिताकोसंगलेकेंदोऊमिलिके श्रीस्वांमिनीजीकेनिकटगये
सोतबसषीननेललितासोंकह्यो॥ जोतुमपहेंभयोआइहे॥ तबइन
कह्यो॥ जोसषीननेश्रीठाकुरजीकोघेरिलीयोहें॥ सोयहांनेमां
नकीयोहें॥ जोकोईसषी श्रीकृष्णकोबुलायलेजाइगी॥ एकवे
रकोमांनहोयतोसमुझे॥ यहांतोघरीघरीमांनहोतहे॥ सोक
हांतांईसमुझाईये॥ तबललितानेकही॥ जोमेरीस्वांमिनी
परमाहेतकारनीहे॥ तातेमेइनकीसषीहो॥ एकवारविन
तीकरोचहीये॥ श्रीठाकुरजीश्रीराधाजीविनाऔरकाहूसो
बोलतनांहीहें॥ सोमोकोंवीनतीकरनपठाईहें॥ यहसुनिके
श्रीस्वांमिनीजीसोरह्योनगयो॥ सोतबआपनेनेत्रकमलषो
लि श्रीस्वांमिनीजी ललिताकीओरमुसिकाई॥ तबललितास

नमेप्रसंनजांनिपासजायअनेकभांतिसोसन्मानकीयो॥ जोहेमेरीप्रां
णप्यारीतुमबिनाश्रीचंद्रबदनकोकछुसुहातनांहीहे॥ औरतुम
बिनाचलेउहांअनेकस्वांमिनीलागिरहीहैं॥ जोयहभलीभईमां
नकीयोहमअपनीकुंजमेपधरायलेजाइगी॥ तातेअनेकजत
नकरिश्रीठाकुरकोअनेकसोहादिवायमेतुम्हारेपासआईहे
सोऐसेअनेकचतुराईकेवचनकहिकेंजायकरिउठायलेके
अपनेषेलकेजूथमेलेआई॥ सोतबसुबलसषाकोभेषकरि
श्रीठाकुरजीसोकांनमेकह्यो॥ जोमांनछुडायखेलमेपधारे
जारेहो॥ अबबिरहक्योकरतहो॥ तबश्रीठाकुरजीनेउघा
रिदसोदिसदेखे॥ सोपहलेश्रीस्वांमिनीजीकोदेखिकेसुबल
सषाकेऊपरबोहोतप्रसंनहोयकेअपनेकंठमेंसोंहीरा
मुक्ताकीमालाहती॥ सोउतारिकेंसुबलकोपहराई॥ फेरपरस्प
रखेलहोनलाग्यो॥ सोतबएकसषीश्रीदामाकोस्वरू
पकरिश्रीबलदेवजीकेनिकटआयकह्यो॥ जोहेदाऊजीतु
म्हारेऊपरगोपीकोहोतकोपीहे॥ सोतुमसावधानरहीयो
तबश्रीदाऊजीबोले॥ जोहेश्रीदामातुममोकोबचाईयो॥ तब
इननेकह्योजोतुममेरेसंगचलोतोबचाउं॥ सोयाप्रकारस
बीहती॥ सोश्रीबलदेवजीकोबातनमेलगाइराष्योसोखेलि
केरेवतीजीसोजायमिलाये॥ सोतबश्रीरेवतीजीतोलज्या
पायबेठिगई॥ सोतबसगरेगोपीग्वालहसे॥ सोश्रीबलदेव
जीतोसकुचपायकेभागिआये॥ सोतबगोपीननेजीतके
बाजेबजाये॥ बडोकुलाहलभयो॥ सोश्रीयसोदाजीनेसुन्यो
सोतबएकसषीकोभेजिबुलाईसांझिभईकेकही॥ जोमेरो
कन्हैयाभूषोहोइगो॥ तुजायकेआगेल्यायआउ॥ औरजो
बसंतकोखेलहोइचुक्योहोइतोश्रीठाकुरजीकोपधरायला

वो॥ सोउहसषीसांझिमेग्वालकेचली॥ सोश्रीठाकुरजीकोश्रीब
लदेवजीकोअत्यंतप्रेमसोआरोगाई॥ सोवहसषीभोरीहती
सोकह्योजोमोकोगोपीछिरकेंगीतोनांहीमेगोपीनकेजूथमे
जाउं॥ तबश्रीठाकुरजीकहे॥ जोतुमसुखनजाउ॥ तुमकोगो
पीनांहीछिरकेंगी॥ काहेते॥ जोतुमश्रीयसोदाजीकेपासकीहे
सोतातेआनंदसोगोपीनकेघरजाइकेमिलिआवो॥ तबव
हसषीगोपीनकेजूथमेगई॥ तहांश्रीस्वांमिनीजीनेपूछीजो
तुमकहांतेआईहो॥ तबवासषीनेकही॥ जोमेश्रीनंदराय
जीकेघरश्रीयसोदाजीकेपासरहतहो॥ सोश्रीयसोदाजी
नेसांझिग्वालपठाईहती॥ सोश्रीठाकुरजीकेपासलेआईहे
सोयहसुनतहीसषीजननेएककरिकेछिरकी॥ तबउनबी
नतीकरी॥ जोश्रीयसोदाजीमोपरक्रोधकरेगी॥ जोतूंयह
कहाकरिआईहैं॥ इतनीसुनतहीललिताविसाषासब
साडीचोलीलहंगाछिनायलीनो॥ पागपटकाबागापहरायग्वाल
कोस्वरूपबनाइकेंछिरकीआछीभांतिसुखमाडिगुलाल
लगायकेंकही॥ जोजाउश्रीयसोदाजीसोमेरोनामनक
हीयो॥ सोतबवहसषीअत्यंतडरपतलाजसहितअपनेदी
नहोयकेंश्रीठाकुरजीसोंकही॥ जोतुमनेमोकोपठाईसोमेरी
यहदसाभई॥ अबमेश्रीयसोदाजीकेनिकटकेसेजाउंमे
रेऊपरक्रोधकरेगी॥ (जोतूयहकहाकरिआईहे॥ इतनीसु
निसबललिताविसाषा) तबश्रीठाकुरजीश्रीदामासोंकहे
जोभंडारतेसाडीलहंगाचोलीलेआवो॥ सोतबश्रीदामा
लेआयो॥ सोतबश्रीठाकुरजीअपनेहस्तकमलसोंवागोपी
कोपहरावनलागे॥ सोतबवहसषीप्रेममेबिह्वलहेगईसो
देहदिसारहीनांही॥ तबश्रीठाकुरजीलहंगासाडीचोलीप

हराय वा गाम पर उतारि लीसे ॥ और फगार हू नहीं हे ॥ और मुषमडो
रहन दीरहे ॥ और कही मेदाऊ जी वसंत खेलि के आवत हे ॥ मैया
जी सो कहि दीजो ॥ सो वह सषी प्रेम मे मगन है ॥ श्री यसोदा जी
पास आई ॥ तब श्री यसोदा जी वा सषी को और देखि चकत हो
रर ही ॥ जो को न आई ॥ तब वा सषी ने कही ॥ जो मे तुम्हारे अप
को आरोगाय आई हो ॥ अब कोई घरी मे वसंत षेल होयगो के
गो ॥ तब श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी साहित घर को पधारेगे
यह सुनि के मुसिकाय कें श्री यसोदाजी ने कही जो तुम मेरे
कन्हैया के पास तो गई नही ॥ जो तुम अपने पति के पास गई हे
सांझिम्नी हू अपने गोप को खवाइ आई हे ॥ तब वह सषी
बोली ॥ जो श्री यसोदा जी तुं मम मोको गारी देत हों ॥ सो जब श्री ठा
कुरजी श्री बलदेवजी पधारेगे ॥ तब पूछ लीजिये ॥ मे कब ह
तुम्हारे आगे झूठ बोलत नहो ॥ और तुम कहो तो मे सोह देऊं
तब श्री यसोदा जी बोली ॥ जो तू सोह कहा देइगी ॥ गोप की
पाग मांथे पर रषह रे हे ॥ सो तेरी चोरी प्रगट करत हे ॥ सो तब स
षी मांथे पर हाथ डारि के देखे तो सांची वात हे ॥ तब तो अप
ने लाज पाय के पायन परि के कही ॥ जो श्री यसोदा जी ये तुम्हा
रे घर को कांम हे ॥ सो पाको वस कीनी ॥ और मेरी लाज रह
नी ॥ तब श्री यसोदा जी ने कही ॥ जो मेरे कोई ऐसी सषी ना
ही हें ॥ जो मेरे कन्हैया को सांझिम्नी आरोगाय आवे ॥ सो तब स
गरी सषी सो रह हजार मिलि के कही ॥ जो श्री यसोदा जी ऊह
भीर वो होत हें ॥ सो रा कहो यस षी को कंमनी ही है ॥ जो सगरी
सषीन को पठावो तो ऊइ जाय पल की संतति कराय ॥ उन्हारे
घर को सांझिम्नी आरोगाय आवे ॥ और श्री रमे एक दोय
की वात को न मांने ॥ यह सुनि श्री यसोदा जी वो होत असंनइर्इ

पाकासिद्ध करिके सषीन के हाथ पठाई ॥ सो तब सब सषी छाक
लेकें श्री ठाकुरजी के सन्मुख आई ॥ सो जा सषी को जेसो मनोरथ
हतो ॥ सो ताको ताही भांति मिले ॥ पाछे श्री ठाकुरजी ग्वाल मंड
ली करिकें बेठे ॥ सो तब श्री ठाकुरजी मधुमंगल सो कह्यो ॥ जो हे
भैया हम आप के ले के से भोजन न करें ॥ उहां सगरी गोपी भूषी हे
उनहू को बुलाय लावो ॥ तब मधुमंगल आनंद पाय गोपीन सो
जाय के कह्यो ॥ जो तुम सगरी वेगि चलो ॥ जो श्री यसोदा जीने
छाक पठाई हे ॥ सो तुम बिना श्री ठाकुरजी आरोगत नाही हे ॥ यह
सुनि के गोपी वो होत आनंद पाय के कही ॥ जो श्री ठाकुरजी हु
मसो ऐसी प्रीति राषत हें ॥ सो तब श्री स्वामिनीजी सषीन स
हित तहां पधारे हें ॥ अपने जूथ साहित तब रावर मे उत्ताकार
नमध्य में श्री स्वामिनीजी तिन पास अष्ट सषी आदि अष्ट स
षा ॥ और इस रे मंडल में श्री बलदेवजी और श्री रेवतीजी
उनके संग सषी सखा सबन साहित आपनी आपनी फेर मेंपि
चकारी धरि कें बेठे मानि कोई ले जाय ॥ या प्रकार परम प्रीति
सो भोजन करन लागे ॥ पाछे भोजन करि आचमन करि कें सब
नने बीड़ा आरोगे ॥ तब ललिताजी ने कह्यो जो अब सांझ को
समय भयो हे ॥ तातें वेगि चलो नाहि तो श्री यसोदाजी वो होत
खीजेगे ॥ सो तब दोऊ सुष आनंद पाय अपने घर को पधारे
सो तब श्री यसोदाजी आरती करि कें नित्य की भांति सेन भो
ग आरोगाय पोढ़ाये ॥ माघ सुदी ७ को दिन फेर सषान जम
क स्वामिनीजी श्री यसोदाजी के घर पधारी ॥ सो श्री ठाकुर
जी को पधराय के घर श्री यमुना के तीर खेलिवे को पधारे सो
तब श्री ललिताजी ने कह्यो ॥ जो यह भलो श्री यमुनाजी को घा
ट हे ॥ यहां ठौर श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी को पक्व स्थो चढोय

भाव ८७

यह सुनि के श्री स्वांमिनी जी अत्यंत प्रसंन होय सेन ही में सब सषीन
सों कह्यो ॥ जो सब मारग रोको ॥ सो सषीन ने जिन ने मारग है सो स
ब रोके सो तब ललिता ने कूं ठे हीं आइ के श्री ठाकुर जी सों कह्यो
जो श्री स्वांमिनी जी घर कों पधारत हैं ॥ सो तब श्री ठाकुर जी ने ल
लिता सों कह्यो ॥ जो ऐसो मेरो कहा अपराध है ॥ सो आप घर कों
पधारत हैं ॥ सो तब ललिता ने कही ॥ जो तिहारे हाथ की पिचका
री मांगत हैं ॥ सो तुम चालि के दे आवो ॥ तब श्री ठाकुर जी ललि
ता के संग पिचकारी देन कों चले हैं ॥ सो जब श्री स्वांमिनी जी
के पास जाय ठाढे भए ॥ सो तब श्री स्वांमिनी जी सों ललिता ने
कही ॥ जो इन की पिचकारी बोहोत सुंदर है सो तुम लेउ ॥ सो तब
श्री स्वांमिनी जी वां हाथ आय के मत गजराज की नांई उठि के श्री
ठाकुर जी के श्री हस्त में पिचकारी छीन ली ॥ सो पकरी ॥ तब श्री ठा
कुर जी छोडे नांहीं ॥ परस्पर दोऊ और सों तकरन लागे सो तब
ललिता ने श्री स्वांमिनी जी सों कही ॥ जो श्री का रानी जी और
अपने बाप और मेरी लाज मति खोईयो ॥ जो पिचकारी मति
छोड़ियो ॥ सो तब इन की और मधुमंगल ने कह्यो ॥ जो भैया
श्री नंदराय जी और जसोदा जी और अपनी मेरी हां
सी मति कराईयो ॥ काहे ते ॥ जो पिचकारी मति छोड़ो तब श्री
ठाकुर जी और श्री स्वांमिनी जी आपु समें परस्पर बलत क
रन लागे ॥ सो श्री ठाकुर जी की फेंट में ते मुरली गिरी सो को
ई ने देखी नहीं ॥ जो एक श्री चंद्रावली जी ने देखी जो मुरली गि
री है ॥ सो तब अपने श्री हस्त को रतन रचित कंकण भूमि
पर गिराय दीयो ॥ पाछे कंकण के मिस कंकण मुरली दोऊ
ले के अपने निकुंज में पधारी ॥ मन में बड़ो आनंद मांन्यो
जो अब मुरली के मिस प्रभु पधारेंगे ॥ सो कुंज रचना करन

लगी फूलन की सिज्या अनेक सांमिग्री फूलन की [illegible]
रा सांमिग्री सिंगार करि हार परसिर राजि के श्री ठाकुर जी को मारग
देखन लागी ॥ और श्री स्वांमिनी जी ने इहां मोड़ इत को दीयो सो
श्री ठाकुर जी के श्री हस्त सो पिचकारी छीन लीनी ॥ तब ललि
तादिक गोपी सब तारी दे के हसी जो नंदनंदन हारे ॥ तब मधु
मंगल बोल्यो ॥ जो भले भैया मेरो नाम राख्यो ॥ सो तब श्री ठाकु
र जी कहे जो भैया मो में जितनो बल हतो ॥ सो तो सब कीनो मे ब
हा करो ॥ जो गोपीन सों तो मे सदाई हार्यो हो ॥ तब सब हसे और
ललिता ने जाइ के श्री बलदेव जी को पकरि के पिछ रके ॥ और सु
ब मोड़्यो ॥ सो तब श्री ठाकुर जी ने श्री स्वांमिनी जी सों कह्यो जो
तुम ने अपनो मन भायो करि लीयो ॥ जो अब हम कों छोड़ो तब
श्री स्वांमिनी जी ने कही ॥ जो मुरली गहने धरो तो छोड़े ॥ सो यह
सुनि के श्री ठाकुर जी अपनी फेंट में देखे तो मुरली नांही है ॥ त
ब सबन सों पूछे जो मेरी मुरली कहां गई ॥ पाछे सबन को न हां
देखे ॥ एक श्री चंद्रावली जी को न होंन देखे ॥ तब श्री ठाकुर
जी अपने मन में विचार कीयो ॥ जो श्री चंद्रावली जी मुरली ले
गई ॥ सो तब श्री ठाकुर जी ने श्री स्वांमिनी जी सों कह्यो ॥ जो मो
को छोड़ो तो मैं मुरली लाय देऊं ॥ एक बन में धरि के आयो
हों ॥ सो मैं हां मे जाऊं तो मिले ॥ और कोई को मिले नाहीं ॥ तब श्री
स्वांमिनी जी ने कही ॥ जो वचन देऊ कब आओगे ॥ तो मैं छो
ड़ों ॥ तब श्री ठाकुर जी ने वचन दीयो ॥ जो मैं अब ही आऊंगो
ऐसे बचन दे के श्री ठाकुर जी श्री चंद्रावली जी कुंज में प
धारे ॥ तब श्री चंद्रावली जी श्री ठाकुर जी को देखि के बोहो
त आदर सन्मान करि सिज्या पर पधराय नाना प्रकार की
सांमिग्री अपने मन की तो थी जी अंगीकार करायनां नाप्र

कारकी रीति विपरीत आदि रस रासादिक कराय सगरे मनोरथ पूर
राकीयो ॥ और यहां सषा सब श्रीठाकुरजी कोउ प्रकार न लागे ॥ सो
श्रीचंद्रावलीजी की कुंज में ऐसी सघन लता नाहे ॥ जो कोई कोपावे
नहीं ॥ सो तब सषान को सब्द श्रीठाकुरजीने सुन्यो ॥ तब श्रीचंद्रा
वलीजी सों कह्यो ॥ जो मोकों कोई पुकारत हें ॥ तब श्रीचंद्रावलीजी
ने कही ॥ जो मेरी निकुंज में काहू की गम्य नांही हे ॥ तुम यहां निर्भय
सो विराजो ॥ ये मेरे यहां के पसु पंछी हंस सारस मोर कोकिलादि
त्यादिक मनुष्य की बोली बोलत हें ॥ याते और संदेह मति करो
यह सुनि के श्रीठाकुरजी हसे ॥ और मन में कहे ॥ जो मेरे राषिबे
के जोरे वचन बनाइ कहत हें ॥ पाछे श्रीचंद्रावलीजी को जोन
ने मनोरथ हतो ॥ सो सब पूरण करि सुरतलीला के श्रीठाकुरजी श्रीचं
द्रावलीजी की चिंता हरि पधारे ॥ सो आपने सषान के यूथ में आ
ये ॥ सो तब श्रीबलदेवजी ने पूछ्यो ॥ जो तुम कहां गये हते तुं
मकों सषा ढूंढत हें ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो दाऊजी मे गोपी
जन के लीये फगुवा लेन गयो हतो ॥ सो तहां बीच में श्रीनंदराय
जी मिले ॥ तिनने खेल की बातें की पूछी सो उन सों मेने सब क
ही ॥ ताते मोकों बोहोत अबेर लागी हें ॥ पाछे सुबल को फगुवा
लेन घर पठायो ॥ सो सुबल देखे तो मंदिर के आगे श्रीयसो
दाजी ठाढी हें ॥ सो तहां श्रीयसोदाजी ने सुबल सों पूछी ॥ सो तब
सुबल ने सगरी खेल की बात कही ॥ सो तब श्रीयसोदाजी प
रम आनंद पाय नाना प्रकार की सामग्री सब बीसो लिवाय
के आप पधारी हें ॥ तब मारग में जसोदाजी सुबल सों पूछे
जो तुम मेरे कन्हैया कों आछी भांति राषीयो ॥ सो तब सुबल ने
कही ॥ जो मे अपने प्रान ते अधिक रक्षा करत हो ॥ तुम्हारो पु
त्र हीने वन में व्रज में प्रसंन रहे नहें ॥ तब हरिने गोपीजन श्री

यसोदाजी को आवत देषि श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी कों छोडि
मुख में गुलाल लग्यो हतो ॥ सो अंचल सों पोंछि बागा पाग सब औ
रहि पहराये ॥ और सब न्यारे ठाढे होइ रही ॥ इतने में श्रीय
सोदाजी श्रीठाकुरजी के निकट आइ आपनी गोद में ले मुख चुंब
न करि अति ही प्रेम सों सन्मान कीयो ॥ पाछे आपने हस्त सों सा
म्ग्री श्रीठाकुरजी को आरोगाये ॥ सो तब सगरी सषा गोपस
षा आइ के कहे ॥ जो श्रीयसोदाजी तुमारे पुत्र को बोहोत ढीठ केनो
हीहें ॥ सो तब श्रीयसोदाजी गोपीन के ऊपर अप्रसंन्न होइ
मेवा मिठाई नाना प्रकार के आभूषण वस्त्र पहराये ॥ सो ये गो
पीन के वचन सुनि श्रीयसोदाजी सों रह्यो न गयो ॥ और कह्यो जो
हे श्रीयसोदाजी आव ही तुम आई हो ॥ तब हम कों और श्रीकृष्ण
कों छोडे हें ॥ नहीं तो देखो बधे हते ॥ सो तब यह सुनि के श्रीय
सोदाजी ने गोपीन पे कोप कीयो ॥ सो तब श्रीठाकुरजी श्रीय
सोदाजी सों कहे ॥ जो तुम गोपीन पर कोप न करत हो ॥ दाऊ
जी तो भाभी ने ढीठ रके हे ॥ और मुष मांड्यो हें ॥ तातें दाऊजी को
लाज लगी हे ॥ सो भाभी सों तो कछू चलत नांही हें ॥ काहे ते वेरा
जा कीवे टी हे ॥ और गोपीन पर कोप कीयो हें ॥ जो पीतो मोको
बोहोत आछी भांति राषत हे ॥ सो तब श्रीयसोदाजी श्रीठाकु
रजी को मुष चुंबन करि कही ॥ जो पुत्र सांचो हे दाऊजी तो
ढीठो हें ॥ यह सुनि के माता पुत्र को सनेह देषि श्रीबलदेवजी ने
हसि दीयो ॥ सो यह कुलाहल सुनि श्रीनंदरायजी ने सुन्यो जो
श्रीयसोदाजी खेल में पधारी हें ॥ सो श्रीनंदरायजी सोर सोंभ
गये ॥ तो आप हू खेल में पधारे ॥ तब हरिने श्रीठाकुरजीने दे
षि के तारी बजाय के कहे ॥ जो बाबा जू आवत हे ॥ सो श्रीयसोदा
जी तो वस्तरि को घूंघट करि बेठी ॥ श्रीनंदरायजीने श्रीठाकुरजी

कोमुखारविंद देष्यो॥ सो देह की सुधि न रही॥ सो श्री यसोदाजी के पा
सजाय॥ श्री यसोदाजी की गोद में ते श्रीठाकुरजी को उठाय मुष चुं
बन कीये॥ सो तब श्रीठाकुरजी कहे॥ जो या श्रम में याजीने सकल
गोपीन को वस्त्र आभूषण दीये है॥ सो तब श्री नंदरायजी प्रसं
न होइ के कहे॥ जो तुम कों दाऊजी सष आपो पी सबन को पहराये प
रंगो पीन को दूसरो फगुवा दीये॥ वस्त्र आभूषण में वा मिठाई
पाछे व्रज के बालक रहे नर राहने॥ सो जिनको जेसो मनोर्थ हतो
सो तेसो पहराये॥ पाछे श्री नंदरायजी श्रीठाकुरजी को गोद में
ले श्री वलदेवजी को अंगुरी सो लगाइ लीये॥ सषी सब व्रज की गो
न गावन लागी॥ मधुमंगल नृत्य करन लाग्यो॥ दोऊ दिस ने बाजे
बाजत हें॥ मानो परमानंद आछु ही आइ के सबन के हृदय में रहे
खेलत हें॥ सो तब श्री नंदरायजी की अोर के श्री यसोदाजी के
अोर के मन में यह आई॥ जो याही भांति हमारे कन्हैया को ब्याह
होइ तो आछो हें॥ पाछे विचारी जो अब ही हाल हमारो कन्हैया
बालक हे॥ कछु समुझ नाही हे॥ सुष में इ यही सुगंध आवत हे॥ रव
क बड़ो होर कछु समुझे तो समर्इ करीये॥ या प्रकार श्री नंदराय
जी श्री यसोदाजी मनोर्थ करत श्री वलदेवजी श्री रेवतीजी सब
सषा समाज सहित घर को चले॥ पाछे मंदिर में पधराय के सिंघा
सन पर श्रीठाकुरजी श्री स्वांमिनीजी को पधराये॥ एक सिं
घासन पर श्री वलदेवजी श्री रेवतीजी को पधराये॥ नाना प्र
कार की सांमिग्री आरोगायसे न कराये॥ या भांति होरी वसंत खे
लत हें॥ कवहु होरी में श्रीठाकुरजी यह लीला करत हें॥ जो गोपी
न के घर अर्द्ध रात्र समय छिपि के पधारत हें॥ सो तहां व्रज भक्त
परम चतुर हें॥ सो गुरुजन को में पधरि दीवाकु उठाय न्यारे घर में
सेन करि श्रीठाकुरजी के मिलन को स्मरण करत हे॥ सो ता ने श्री
ठाकुरजी भक्तन के मिलना र्थ पिछवारे ने घर में आइ किवाड़ खोले
सो पहलो दिन भक्त बनाइ राषत भये॥ जो फला नेठिकाने के चौध
रीह वगहरने खोलि के आईयो॥ सो श्रीठाकुरजी किवाउ खोले षो
लि के पाछे किवाड़ लगाइ भक्त के निकट पधारे॥ सो भक्त भरी नि द्रा मे
पोढे हें॥ सो तब श्रीठाकुरजी भक्त के पाऊं को अंगुठा मरोरि जगावत
हें॥ सो भक्त निद्रा ते चोंकि उठि बेठे॥ अोर बोहि मधुर वचन बोले जो
यह कोन हें॥ सो तब श्रीठाकुरजी कहे॥ जो तुम पहो पर हो यह तो मे
ही हो॥ कोई जागेगो पहु श्रीठाकुरजी की मधुर वांनी सुनि के अब
रस में बोहोत मधुर लागी॥ अंग अंग सीतल हो पगयो॥ श्रीठाकु
रजी को अपनी गोद में बेठारि हृदय सो लगाइ नाना प्रकार की
लीला करि तापनिवारण कीयो॥ तबै बेरो होन लाग्यो॥ तब श्री
ठाकुरजी भक्तन के मंदिर ने श्री यसोदाजी के घर पिछवारे ने आ
इ के सिज्या मंदिर में पोढे॥ कोई मैं को ठौर या प्रकार खेलत हे॥ सो
वो होत लीला करत हे॥ अथ अन्नकूट भेद को भावना॥ जो सुद्ध वां
मरा को भेष धरत हें॥ सुद्ध चंदन को बड़ो तिलक करत हें॥ तुल
सी की माला यज्ञोपवीत पहरि के उत्तम आसन पर चढ़ि
नीउ परना पहरि बड़ी माला हाथ में लेर जमे के उद्दे पन को
पधारत हे॥ सो वृषभांनजी के घर पधारे॥ आगे यह रीत हती
जो ब्रांमण को आगे पोरी पर कोई रोक न हतो॥ कहुं चल्यो
जाऊ॥ सो कीरतिजी की पोरी छोड़ि के जहां श्री स्वांमिनीजी स
षीन सहित अनेक मनोर्थ विचारि श्रीठाकुरजी के मिलन
को विचार करत हती॥ सो तहां आप पधिश्रम में पधारि के पधा
रे॥ सो वि-प्र भेष देष श्री स्वांमिनीजी सषीन सहित उठ्यांम
न करि ऊंचो आसन बिछाय॥ सो तापर बेठाय धूप दीप नैवे
द्य सो पूजन कीयो॥ नवलालि ता बोली जो विप्रजी तुम्हारो भेष

तोवोहोतसुंदरहेकस्यगुराहतुम्हारेमेहें॥ पोथीमालावड़ीवडीली
तेहो॥ तवश्रीठाकुरजीकहे॥ जोमेरेमेसबगुराहे॥ तुमकहोसोई
सिद्धिकरिदेई॥ सोतवललितानेकही॥ जोराकदोयगुराहतोअपने
कहो॥ सोतवश्रीठाकुरजीबोले॥ जोएकतोमोमेयहगुराहे॥ जो
जावस्तुकोदुखहोइ॥ सोवाहीकोमिलाइदेऊ॥ औरजाकोजहां
जाइवेकोमननहोइ॥ सोतहांताकोएकक्षणमेपोहोचाइदेऊ
औरकोईजानेनांही॥ सोतवऔरतीयोकालकीवातवताइदेऊ
तवश्रीस्वांमिनीजीवोलती॥ जोहमकोतीयोकालकीवातवता
इदेऊ॥ तवश्रीस्वांमिनीजीवोलती जोआगेहमकहांहते॥ अब
हमकहांकरतहें॥ औरआगेकहाहोइगो॥ सोतुमयहवातव
तावोसांचेसगुरातीहोतो॥ तवश्रीठाकुरजीनेकही॥ जोपहलेतो
तुमसगरीश्रीनंदरायजीकेपुत्रसोमिलीहो॥ औरअववाही
सोमेरेकेमिलनकोसगरीउपायकरतहो॥ सोआगेवहीकृस्न
तुमकोमिलेगो॥ सोयहसुनिकेश्रीस्वांमिनीजीलजितभईऔ
रमनमेवोहोतप्रसंनहोयविप्रकोनिकटआयकेंवरनपकर
केंफेरपूछतभई॥ हेपंडिततुमवड़ेज्ञांनीहो॥ कहोहमारीप्रीततो
श्रीनंदरायजीकेपुत्रसोलगीहे॥ परंतुवहकाहेकोपरतोवोहोत
सुनीयतहे॥ कछुवाकीहूप्रीतिहमपरहे॥ सोकहो॥ तवश्रीठाकु
रजीकहे॥ जोवानंदकुमारकीप्रीतितुमसोतोहोतनहे॥ सदांसेके
तहीचाहतहें॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीनानाप्रकारकेवस्त्रआभ
भूषणआयइरायसोविप्रजीआरोगायपकरिपूछी॥ जोअववहीकृस्न
कवमिलेंगे॥ तवकही॥ जोसंध्यामंदिरमेचलोअववहीमिलाय
देऊ॥ सोतवसंध्यामंदिरमेजायवांसरामेषडनारिश्रीआनंदक
रिनानाप्रकारकीलीलाकरिसगरेमनकोआनंददीयेया
प्रकारश्रीठाकुरजीवृजमेलीलाकरतहे॥ अथमनिहारिनलीलालिख्यते॥ जोकवहश्रीस्वांमिनीजीकेहाथमेचुरीपुरानीहोयजा
तहें॥ तोमनिहारिनकोभेषधरिनानाप्रकारकेरंगकीचुरीलेकेश्री
वर्सानपुराकीगलीनमेपुकारतहें॥ तवजेतवड़ारीव्रजमेरहे
सोतिनकोचुरीपहरावतहें॥ सोमोलवोहोतसस्तेकरिनोहोकर
तहें॥ श्रीस्वांमिनीजीकीसखीसुनिकेकीरतिरानीसोंकहेतहें
जोचुरीवारीआयीहे॥ सोतुम्हारीवेटीकीचुरीपुरानीभईहे॥ सोपहरा
वोगी॥ तवकीरतिजीकहतहेंवुलायलावो॥ तववहमनिहारजाय
केलेआईलेचुरीश्रीस्वांमिनीजीलायकेदिखाई॥ सोतवकीरति
जीअपनीगोदमेलेपहरावनलागी॥ तवश्रीस्वांमिनीजीकोश्री
ठाकुरजीजांने॥ जोमेरेहस्तस्पर्शसेमनकीओरहोइसाहोइ
गी॥ औरश्रीकीरतिजीपासहे॥ सोयहकेसेवनेगी॥ सोतवश्री
स्वांमिनीजीवालभावकरिकही॥ जोमैयामेयहचुरीनपहरो
गीमेरेहाथदूखेंगे॥ ऐसेकहिरुदनकरनलागी॥ तातेहेल
लितातूमैयाकोसमुझाय॥ सोतवललिताजीनेकीरतिजीसोंक
ही॥ जोयहतुम्हारेपाससुरीनपहरेगी॥ सोतवश्रीकीरतिजी
नेकही॥ जोहेललितातूपासवेठिकेंपहराय लीजो॥ कोईका
वेनहीं॥ मेघरमेकारजकरनजांतहों॥ सोतवश्रीकीरतिजीतो
अपनेगृहकारजकोगई॥ औरललिताजीहारकेकमाड़लगा
इश्रीस्वांमिनीजीकोलेकेवेठी॥ सोतवश्रीठाकुरजीचुरीपहरा
वनलागे॥ औरअपनेकभावहस्तमेकरनलागे॥ सोतवकांमकी
उत्पत्तिभई॥ तवश्रीस्वांमिनीजीनेललितासोंकही॥ जोयहचुरी
पहरावतहे॥ सोनंदकुमारहें॥ ताकिवाड़खोलिकेवाहिरवेठि
सोतवललिताकिवाड़लगाइवाहिरआई॥ सोतवदोऊस्वरू
पभांतिभांतिकीलीलाकरिभांतिभांतिकीचुरीपहराईपाछे
विदाहोइघरकोपधारे॥ अथनाइनलीला॥ कवहूंकाजरवे

दीलगाईलहगासाईबोलीपहरायनाइनकोभेषधारिनहनीकोंक
सीलेकेमहावरलेवृषभांनपुराकोआई॥ वाहीकुंरीकोनांईश्री
स्वांमिनीजीकेकेशसुधारिकेंमहावरचरणमेलगाइकेनाना
प्रकारकोविहारकीऐ॥ इत्यादिकभावनांकरीहैं॥ अथदांनली
लाकोभावना॥ कवहूदांनकेमिसतेंधर्मधारीश्रीगिरराजके
परसषानसाहितआइवेठतहैं॥ कवहूसांकरीषोरइत्यादिठि
कांनेव्रजभक्तहूदांनकेमिसकरिकेसुधमधुरमिष्टानगोरस
लेकेअनेकभावसहितवाहजोरीकरे॥ कमलीलागांनकरप
धारतहे॥ सोतवसांकरीषोरमेसगरीआयथसी॥ तवधार
स्योओरनेश्रीठाकुरजीअमेठमाफेटावांधे॥ सषानसहित
पीतांवरपहरिवेजेंतीमालाचरणारविंदमधुरमोरचंद्रका
धरे॥ मकराकृतकुंडलकपोलनपरझलकतहे॥ श्रीहस्तमे
लकुटीमुरलीएमारगमेलाकड़ीओड़ीकरिश्रीस्वांमिनीजी
श्रीचंद्रावलीजीआदिसवकोरोके॥ श्रीमुखसोकह्योजोहमा
रोदांनमारिकेसदांनिकसिगईहो॥ सोआजसगरेदिनकोले
इगे॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीनेकही॥ जोतुंमकिनपरदांन
पहस्योहैं॥ तवश्रीठाकुरजीकहे॥ जोश्रीनंदरायजीसवन
केराजाहे॥ सोहमकोसगरेव्रजकोराजदीयोहैं॥ यहसुनिके
सगरीहसी॥ कहीजोवहीनंदजोहमारेवनमेघासफोररत
वारीकोराषेहे॥ कंसकेडरनेंदयसोराह आयहमारेपिताकी
वांहसोवसायेहे॥ ताहीकेतुंमपूतहो॥ ओरकुलकीरीतिहसो
ताकोपालनकरीये॥ जोतनकवड़ाईपायकेमाथेचढे॥ तातेदां
होतदिसाईसोमनिवोलो॥ तवश्रीठाकुरजीकहे॥ जोसुधेदां
नदेकेपाछेजायपुकारियो॥ यहांवनमेवोलेगीतोसवकेरूप
भूषणवस्त्रभलीभांतिसोलूटिलेइगे॥ ओरजोवहकंसव

तावतिहो॥ सोतोवहआपुहीमरिरह्योहैं॥ दसपांचदिनओर
जीवेगो॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीनेहासिकेकही॥ जोअवसुनि
केशकोगारीदेतहे॥ ओरअर्द्धरात्रकेमाजेडोलेहैं॥ इततोव
नदिखावतहो॥ तोमहावनतेभाजिकेयहांछिपेगिरराज
कीकंदरामें॥ ओरअवऐसीवड़ाईकरतहो॥ तुंमवेहीहो
जोतनकदहीमांषनकेलीयेघरघरमेंभषेहोइचोरीकर
तफिरतहो॥ ऐसोतुम्हारीवडाईहे॥ तवश्रीचंद्रावलीजीवो
ली॥ जोअवजांनदेऊ॥ हमकहांकिरानोमाललेकेजांतहैं
सोतुंमदांनमांगतहो॥ तवश्रीठाकुरजीवोले॥ जोतुम्हारेपास
मालइतनोहे॥ इतनोकहूंनहीहे॥ कोईकेपासश्रीफल॥ कोईके
पाससुपारी॥ कोईकेनारीयल॥ कोईकेदाड़म॥ कोईकेपासको
ईप्रकारकेरतनमेवाफलकमलइत्यादिकसवहमारेलाय
कहैं॥ सोहमलेकेजांनदेइगे॥ सोसेतवश्रीस्वांमिनीजीवोली
जोतुमवोहोतढीटहो॥ इवोलतहो॥ हमारेआभूषणकोअ
रमनराषतहो॥ सोहमारेएकनगकोमोलहैं॥ सवगायअ
रनंदालयकोवैभवराकठोरकरोगे॥ तोहूपूरोनाहीहोयगो
तातेजेसेतुम्हारेमावापजोरीतिसोचलेहे॥ सोताहीरीतितुम
हूचलो॥ ओरजोतुंमभूषेमरेहोतोवीनतीकरिकेमांगो॥ हम
कहे॥ सोकरोतोतुंमकोथोरोसोदहीदेइ॥ सोतवश्रीठाकुर
जीकहे॥ जोमोकोभूषवोहोनलाग्योहें॥ तुंमकहोसोकरेसो
तवललितानेकही॥ जोहमारीप्यारीजूकेआगेनीतननाचनट
कीनांईनाचो॥ तवहमतुमकोदेई॥ तवश्रीठाकुरजीअनेक
तोनतरंगसोनिर्तकरिकेंमोहितकीऐ॥ कवहूलोटिकेदहीदू
धपीवतहे॥ तवश्रीस्वांमिनीजीओरश्रीचंद्रावलीजीसाहे
तनानाप्रकारकीसांमिग्रीआरोगायकेंसंगसगरेसषनको

दूधकोभोजनदेतहे। औरनीचेकहीसगरेजलकेपासजाय आरोग्यो॥ सोत
वसगरेसषाहूनी आरोगनजोंनहें॥ इहांश्रीठाकुरजीसगरीस्वांमिनी
नकेसंग॥ नानाप्रकारकीविहारलीलाकरत। जागे इत्यादिभाववसंतनको
विचारनो॥ **अथपनघटलीलालिष्यते॥** जोकबहूजमुनातट
केपनघटकबहूकूआकेपनघटपरजाइकेंकाहूकीईडुरीषो
रतहे॥ काहूकीन्हांनडोरीषोरतहें॥ चोलीवस्त्रादिकचोरतहेंको
ईकीगागरिकोंकरोनेफोरतहे॥ काऊकीगागरिभरिकेउठाय
देतहें॥ औरकांनमेमधुरवचनकहेतहे॥ जोहोरीआईहुको
ईव्रजभक्तकेलीयेआपुश्रीयमुनाजीमेपैठिकेकहेतहे॥ जोको
रीभट्टसीनबोहोतहे॥ तुजनतकोपरिश्रमप्रानिकरे॥ सोकोगा
गरिदेमेभरिदेऊंगो॥ याप्रकारगागरिभरिअंगपरसकरेहेंऔ
रकोईव्रजभक्तनकेआगेहोईकांकरीवीनिडारतहे॥ तिरछे
कटाक्षचलाइकेमनहरिलेतहें॥ काहूकीचलनाइलेकेअंचल
वारतहें॥ काहूकीवलनारलेकेचालनदेंतगाइचुंबनकरतहें
सोतहांकोईभक्तनमेहे॥ सोतोप्रसंनहोतहे॥ श्रीठाकुरजीको
पकरिभलीभांतिअपलिनकरिसर्वांगपरसतहे॥ तनकोना
पमिटावतहें॥ औरकोईभक्तनज्यामांनहोइगुरुजननकेडर
ते॥ अन्यंनडरपतहें॥ बोलततनहीहे॥ तबश्रीठाकुरजीअनसंत
हूंसीकरतहें॥ मरीगागरिढोरतहें॥ पाछेतेचोलीकेबंदतोर
तहें॥ कछुकांनमेवचनकहेतहें॥ तबमनमेतोप्रसंनसुषी
होतहें॥ ऊपरतेमोहचलायरिसआयकेंवाकेवचनबोलतहें
जो॥ हमश्रीनंदरायजीसोंश्रीयसोदाजीसोंकहिदेइगीहम
सोंहांसीमसकरीमांनिकीयाकरो॥ याप्रकारअनेकवाकेवच
नसुनतहें॥ केकहेतहांतिनभक्तनकेपाछेश्रीठाकुरजीके
होनपारिकेंअनेकवाकेवचनसुनिकेंमनमेप्रसंनहोतहेके

वहूश्रीस्वांमिनीजीसोकहेतहें॥ जोतुमकोमेरीमेयानेबुलाईहे
सुंदरआभूषणवस्त्रदेइगी॥ याप्रकारमधुरायकेललितादिस
षीसहितश्रीयसोदाजीकेघरपधारतहें॥ सोतहांमारगमेंअने
कहास्यविनोदकरतजांनहें॥ काहेतेहोरीकेदिनहे॥ सोतातेकछ
कानिलज्जानाहें॥ कहूंकुंजमेबेठिकेंनानाप्रकारकीविहारली
लाकरतहें॥ सबनकेमनकोहरतहें॥ याप्रकारसगरेव्रजभ
क्तनकोहोरीमेसुषदेतहें॥ रात्रिदिनयहीघरघररसहें॥ पाछेज
सोदाजीघरएकसिंघासनपरश्रीठाकुरजीश्रीस्वांमिनीजी
कोपधरारे॥ एकसिंघासनपरश्रीबलदेवजीश्रीरेवतीजीको
पधराये॥ नानाप्रकारकीसांमिग्रीसेतभोगआदिआरोगाय
सबगोपगोपीनकोभोजनकरायसबगोपगोपीनकोविहा
करनलागे॥ सोतबगोपीजननेश्रीनंदयसोदाजीसोकह्यो जो
श्रीवृषभांनजीनेबीनतीकरिकह्योहे॥ जोकालिहोरीडांडोरोप
नोहें॥ सोकृपाकरिकेतुमपधारोगे॥ औरहमहूआवेंगे॥ सोतब
श्रीनंदरायजीनेकह्यो॥ जोहमअवस्यआवेंगे॥ सोयाप्रकारगो
पीजनविदाभई॥ पाछेश्रीनंदरायजीश्रीयसोदाजीसोकहेजो
कन्हैयाकोश्रमबोहोतभयोहे॥ सोतातेअबसेनकराईयेश्री
रयहांश्रीकीरतिजीनेअनसखरीकरिसेनभोगआरोगायसिज्या
परपोढाये॥ पाछेप्रातःकालभयो॥ सोरमयोतबश्रीयसोदा
जीश्रीठाकुरजीजीकेजगायवेकेअनेकजतनकीये॥ **अथ**
होरीडांडेकीभावना॥ परश्रीठाकुरजीजागेनांही॥ पाछेकहेजो
आजडांडोरोपनोहें॥ सोदेषियेकोनजीतेकोनहारे॥ तातेवेगि
उठोइतनीसुनिकेंचोंकिउठे॥ औरकहे॥ जोमैयामेरीपिचका
रीकहांहें॥ आजवेगिक्योंजगायो॥ सोयापदकोभावजांननो
रागरामकली॥ जागिकह्योजननीसोंमोहनआजकहांमोयवे

जिजगायोसोकारजकेहीयेसबसोहन ॥१॥ तबजसुमतिकह्योआ
जमुररसादिनपुन्योसुखकीरासि ॥ डोंडेरोफननंदजाइगेसबली
रोब्रजवासी ॥२॥ उतबृषभांनइतनंदराईहोडपरेगीभारीइत
प्यारोउतप्यारीकोदलकोजीतेगोहारी ॥३॥ तातेंबिनमोहनब
नहाउसोकहिलीजे ॥ ओरगोपलेउरखवारीगोपीसबबसकी
जे ॥४॥ यहसुनिरवकिउठेगिरवरधरतबमेपीउरन्हवावे हे
खेआजखेलहोरीकोमांखनमोयखवावे ॥५॥ तबजसुमतिओ
रगोपालललकोउबटिन्हवायोप्रीति ॥ करनसिंगारपरमरु
चिकारीब्रजवासीनकेमीत ॥६॥ यहसबबातजानिब्रजबनिता
चलीसिंगारसिंगारी ॥ मनहरबिनसोमिनआनिसुंदरकोटिको
मवलिहारी ॥७॥ सबमिलरागकडोरहैआईजसुमतिगृहकेद्वार
भीतरजाइलालनमुखनिरख्योहरखेलोचनचारु ॥८॥ सेननमे
सबभेदकह्योतबमुसिकायमोहनमनलीयो ॥ रसिकप्रीत
मजानतअंतरगतिमनभायोसबकीयो ॥९॥ सोयहभाववि
चारनो ॥ सोतबश्रीयसोदाजीश्रीठाकुरजीकोमंगलभोगआ
रोगायस्नानकरायसिंगारकरपलनाकुलावनलागी ॥ इतने
मेसबगोपीग्वालब्रजभक्तश्रीयसोदाजीकेघरआये ॥ सोतब
श्रीस्वांमिनीजीनेसेननमेहीकह्यो ॥ जोअबतुमपालनेमेंईखेलोगे
केहोरीखेलोगे ॥ सोयहसुनतहीश्रीठाकुरजीश्रीयसोदाजी
सोकह्यो ॥ जोमेयाराजभोगकबआरोगावेगी ॥ तबवाहीसम
यश्रीयसोदाजीश्रीरोहिणीजीराजभोगथारमेसाजिलेआई
सखीनसहितश्रीस्वांमिनीजीआछीभांतिआरोगायपाछेबी
रादीरे ॥ तबश्रीनंदरायजीश्रीठाकुरजीकोगोदमेउठायलेके
श्रीबलदेवजीकोआंगुरीसोलगाइलीयेरे ॥ उपनंदसनंदिकनोनं
दवधगोपआओरअपनेकधेरोहितब्रांसराकोलेकेआगेवेरधु

निहोतचले ॥ सोयाप्रकारसोश्रीनंदरायजीपधारे ॥ ओरश्रीयसोदा
जीगोपीनकोसमूथमेसबपेलीहोई श्रीस्वांमिनीजीकोगोदमेलीये
वात्सल्यभावमेमगनहोयहोरीकोडोंडेरोफनगांमकेखेडेआयेउ
नतेश्रीवृषभांनजीश्रीकीरतिजीआछेबसनआभूषणपहरि
केंगोपब्रांसराकेसमूथमेश्रीवृषभांनजीपधारे ॥ ओरकीरति
जूगोपीनकेसमूथमेबासराकेदधुनिकरतजातहैं ॥ होरीकेसाथ
लेसबहोरीपासआये ॥ सोतामसमयहेडओरकेबांसराय
कबडेलेवेकोकाष्ठहतो ॥ सोताकेहोरीकेमध्यमेंठाडोकीयो सोता
केऊपरध्वजाबांधीहे ॥ जोआपनीजीतहारजानिवेकेलीयेसोत
हांब्रांसराकोवेदपढाय श्रीनंदरायजीश्रीवृषभांनजीउछिके
प्राप्तिनाकरिचोवाचंदनअरगजाछिरकिकेंअबीरगुलालसो
छिरकिकेंपाछेश्रीनंदरायजीवृषभांनजीमिले ॥ पाछेश्रीयसो
दाजीश्रीकीरतिजीअन्योन्यप्रीतिसोपरस्परमिली ॥ सोकेसीसो
भाभईहै ॥ मानोआनंदओरप्रेमदोऊआपुसमेमिलिकेंहे ॥ ओर
श्रीनंदरायजीकेघरगोपओरश्रीवृषभांनजीकेघरकेगोपमि
ले ॥ पाछेब्रजभक्तकुमारिकाओरगोपीमिलननलागी सोसब
नकोमिलनदेषिकेंश्रीस्वांमिनीजीओरश्रीचंद्रावलीजीसखी
नसहितरोमांचहोइआई ॥ जोहमश्रीठाकुरजीसोमिलेगे ॥ सो
ताहीसमयश्रीठाकुरजीनेजिननीगोपीहती ॥ सोतिनमेस
बीकोस्वरूपधारिकेसबसोमिले ॥ सबनकोतापहरिकेंगोपा
छेश्रीललिताजीनेश्रीयसोदाजीकेआगेश्रीठाकुरजीकोपो
रेसोछिरकिकेश्रीयसोदाजीसोबीनतीकरी ॥ जोश्रीयसोदा
जीश्रीठाकुरजीकोमेरीगोदमेदेउ ॥ नोतुमकोछिरको ॥ सोतब
श्रीयसोदाजीनेश्रीठाकुरजीकोललिताजीकीगोदमेदीएसो
ताहीसमयश्रीस्वांमिनीजीनेसखीनकोआज्ञादीनी ॥ जोश्रीय

सोदाजी ओर श्रीनंदरायजी ओर श्रीवलदेवजी आदि सवन को छि
रको॥ सो तव गोपीन वदोरि के श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी श्री
वलदेवजीमें वंधी जे गोप हते॥ सो तिन सवन को छिरकें सो श्री
ठाकुरजी ने जांन्यो॥ जो ये सव मेरी मैया की हांसी करेंगी॥ यह जां
निके मधुमंगल श्रीदामा आदि सवन सो कहे॥ जो तुम जाइके
श्रीवृषभांनजी को ओर श्रीकीरतिजी की गांठि जोरो॥ सो तव स
षाउने सो श्रीवृषभांनजी ओर कीरतिजी को घेरि के गांठि जोरे यह
सषीनने श्रीनंदरायजी ओर श्रीवृषभांनजी यसोदाजी की गांठि
जोरी॥ तव श्रीनंदरायजी ओर श्रीयसोदाजी मन में रंच कलजित
भरे॥ पाछे प्रसंन भये॥ जो नारायन ने हम को कन्हैया सो पुत्र दीयो
तव हम को रंच नो दुख भयो है॥ ताते अपने परम भाग्य मांनो सो
तव श्रीस्वांमिनीजी ने श्रीठाकुरजी सो कह्यो॥ जो तुम्हारे पिता श्री
नंदरायजी ओर श्रीयसोदाजी वडे निलज हे॥ सो यह हांसव के आ
गे गांठि जोरी हें॥ सो तव श्रीठाकुरजी कहे॥ जो हम तो इस गांम के
जमिंदार जारी व हे॥ परंतु वृषभांनजी तो व्रज में वडे राजा कहा
वते हे॥ सो आज निलज होय गांठि जोरी हें॥ ओर हमारे संग के स
षान सो हांसी मसकरी करत हें॥ पाछे श्रीस्वांमिनीजी देषिके
लजा पाय सषीन सो कही॥ जो यह तो उचित हे॥ जो श्रीनंदरायजी
जी ओर श्रीयसोदाजी की गांठि जोरी हे॥ सो यामें तो हांसी परी
नाहि परंतु श्रीयसोदाजी के ओर मेरा पिता की गांठि जो
री तो वरा वर हांसी हे॥ सो तव सषी हती सो श्रीयसोदाजी
के पाछे चली॥ सो यह भेद श्रीठाकुरजी ने जांन्यो॥ जो मेरी मैया
की हांसी करेंगी॥ यह जांनिके अपने सखन सो समुझाय के क
ही॥ जो अव एसे करो॥ जो मेरा पिता ओर कीरतिरानी की गांठि
जोरो॥ सो तव सषा श्रीकीरतिजी को लेन चले॥ ओर सषी हती

सो श्रीयसोदाजी को लेन चली॥ सो इन ने मेस षान ने श्रीवृषभांन
जी के पास जाय इन ने गुलाल उडायो॥ सो अंधकार होय गयो सो
अपनो परायो कछु सूझि न परे॥ सो तव मधुमंगल कीरतिरा
नी को पकरि होरी डांडे के पास जाय के ठाढी करी॥ सो तहां श्री
यसोदाजी को भेष वनाइ मधुमंगल श्रीनंदरायजी सो कह्यो
जो तुम को श्रीकृष्णजी वुलावत हें॥ सो वेगि होरी डांडे के पास चलो
सो कहे ने॥ जो श्रीयसोदाजी तुम्हारे ऊपर कोप कीयो है॥ ओर
कहेत हे॥ जो मे तो मेरे कन्हैया को लेके न्यारी रहोंगी॥ यह सुनके
श्रीनंदरायजी कहे॥ जो भैया कन्हैया को तो मेरा षोगो॥ वह तो
तनक मांषन के लीये वांधत हे॥ उषे न मेरे घर सो आज हो
न्यारी होउ॥ सो या प्रकार श्रीनंदरायजी नाना प्रकार के वचन
कहेन लागे॥ सो तव मधुमंगल ने श्रीनंदरायजी के कांन में क
ह्यो॥ जो अव व्रज में तुम्हारो नांम नांही भयो॥ सगरे व्रजवासी
यह जानत हें॥ जो श्रीनंदरायजी सो श्रीयसोदाजी को परस्प
र स्नेह हें॥ कवहु विरोध की वात नहीं भइ नांही हें॥ ताते हो तो तुम्हा
रे घर को षांवरा हो॥ सो तुम्हारो भलो चाहत हे॥ तुम्हारो मन
तो होय सो वात तुम सो कहीये॥ श्रीयसोदाजी होरी डांडे के पा
स वेठी हे॥ सो उहां उन को कछु वोलियो मति॥ ओर काजर के मु
जाप करि के अपने घर को ले चलो पाछे हम तुम घर में वो
इके घर में समुझाय लेइंगे॥ ताते यहां कछु वोलियो मति यह
वात मधुमंगल की सुनिके श्रीनंदरायजी वोहोत साहस क
रिके कहे॥ जो मधुमंगल तुम परम चतुर हो॥ ओर हमारे घर के
हो॥ सो ताते जेसे तुम कहेगो सो तेसे करोंगो॥ या प्रकार मधु
मंगल ओर श्रीनंदरायजी होरी डांडे के पास आये॥ तव की
रति हती॥ सो पाछे फेरिके श्रीनंदरायजी कहा घजो रे जोरहुं

जो आज श्रीनंद
मानि आवो॥ पाछे कीरति जीने मनमे संदेह कस्यो॥ सो तब मधुमं
रायजी बावरे हे गए हे कहा॥ जो मेरे निकट आवत हे॥ सो तब मधुमं
गलने श्रीनंदरायजी सो कह्यो॥ जो देखो जसोदाजी तुम को हा पकि
राय के कहे नहे॥ जो तुम यहां मति आवो मेन्यारी रहोंगी॥ सो तब श्री
नंदरायजी अपोर हवे गे चले॥ सो तब कीरति जी चास्यो ओरे चाह
रि लपेटि वेठि गई॥ इतने मे श्रीनंदरायजी श्री कीरति जी की उ
जापकरिके उठाय लीयो॥ सो तब कीरति जी इराधिके उजा घूंघट
वनलागी॥ तब श्रीनंदरायजी श्री कीरति जी की हो नो घुंघट
करिकें उठाय के हा ठी करि कही॥ जो कहा निहारी वरावर हम
मेवलनां ही हें॥ या प्रकार श्रीनंदरायजी श्री कीरति जी को सेच
केकें ही हे॥ ओर श्रीनंदरायजी डर के मारे कांपत हें॥ ओर मनमें
कहे तहे॥ जो आज श्रीनंदरायजी बावरे होइ गए हे कहा मेरे पा
छे क्यो परत हे॥ ओर यहां श्री यसोदा जी ओर श्री वृषभांनजी
की खेचिके मिलाइ के गांठि जोरी हें॥ सो वृषभांनजी तो पतरे स
दा अंग हें॥ ओर श्री यसोदा जी भारी वोहोत पुष्टि हें॥ ओर वलदेव
वोहोत हे॥ सो न्यारे पो श्री यसोदा जी चले सो न्यारो न्यारो श्री वृषभांन
जी आप ही ने चले आवे॥ या प्रकार श्री वृषभांनजी को ओर श्री
यसोदा जी को श्री स्वांमिनी जी को देखिके श्री ठाकुरजी सो कह्या
जो तुम सपनी मे याहा सो कहा॥ जो मेरा पेनाइ वरो विचारो॥ सो
ताके पाछे क्यो परी हें॥ रंचक अपनी मैया को वरजो तो सही उ
नको रंच कहु लाज नांही॥ या भांति सो कही॥ तब श्रीठाकुरजी
हसिके कहे॥ जो हो री इनके पास अपनी मैया को तुम हू देखो
सो तब श्री यसोदाजीने हू देख्यो॥ ओर श्री स्वांमिनी जीने हू
देख्यो॥ सो तब श्री यसोदा जी प्रसंन होइ श्री वृषभांनजी को भु
जापकरि होरी हुं डांडे के पास ले गई॥ तब मधुमंगल सषाने

कीरति जी ओर श्रीनंदरायजी की गांठि जोरि दई॥ सो तब श्रीनंद
रायजी श्री यसोदाजी को वृषभांनजी के निकट देखे॥ सो तब
श्रीनंदरायजी मधुमंगल सो कहे॥ जो श्री यसोदा जी तो श्री वृ
षभांनजी के निकट हें॥ तुम मो को भुलाइ के किन के पास लाये हे
ओर कोन की स्त्री सो गांठि जोरी हे॥ सो तब मधुमंगल ने कही जो
सुनो श्रीनंदरायजी श्री यसोदाजी को पकरि के सषीनने श्री वृ
षभांनजी सो गांठि जोरी॥ तब मे जानी॥ जो मे रे श्रीनंदजसोदा
जी की हांसी होइगी॥ तब मे इतनो छल करिके श्री वृषभांन
जी की वहू कीरति जी हे॥ सो तिन सो गांठि जोरी हे॥ तब मधुमं
गल ने कही का हेते जो मे तुम्हारे घर को वोहोत खातो॥ ताते तुम्हा
रे घर को भलो मोको कीयो चहीये॥ यह सुनिके श्रीनंदरायजी
मधुमंगल ऊपर वोहोत प्रसंन भए॥ पाछे श्रीनंदरायजी प्रेम
मे मगन होइ श्री वृषभांनजी सो हाथ जोरि के वीनती करी॥ जो
आज हे री कोदिन हें॥ सो मेरो अपराध क्षमा करीये॥ ताते आ
ज पल लोक रो॥ जो यह मेरे पुत्र कन्हैया को माता हें सो ताको तु
म आपने घर ले जाउ॥ ओर कीरति हें जो वे हमारे घर पठा
य देउ॥ सो तब यह सुनिके सब व्रजवासी हसे॥ सो तब वृष
भांनजी हू होरी के षेल मे मगन होइ के कहे॥ जो वोहोत अछी
वात हे॥ हम इन श्री कृष्ण को माता के संग श्री कृष्ण को राखेंगे
सो तब श्रीनंदरायजी हू प्रेमानंद पाय के कहे॥ जो श्री की
रति जी की बेटी श्री राधा हें॥ सो तिनको हम राखेंगे॥ यह सुनि
के श्री वृषभांनजी कहे॥ जो वोहोत आछी कही॥ ओर कीर
तजी यह सुनके साची मांनि इराधिके कही॥ जो इहां ऐसो
मोर में श्रीनंदरायजी ने मेरी भुजा मरोरी हें॥ सो मे इनके घर
में केसे रहोंगी॥ या भांति मनमे डराधिकें लाज छोड़ि के कही

॥भाव॰॥
॥६६॥

जो मे श्री नंदराय जी के घर मे कबहूं नांही रहोंगी ॥ मेरी भुजा अ
वही मरोरी हें ॥ यह सुनि के सब ब्रजबासी हसे ॥ सो तब श्री नंदरा
यजी हसि के कीरति जी सो कहे ॥ जो तुम डरपो मति तुम को ऽपर
मे ऽआछी भांति सो राखेंगे ॥ यह सुनि के कीरति जी ने लाज पाय के
फेरि कही ॥ जो ऽब मे श्री नंदराय जी सो कोंन भांति बचोंगी ॥ सो त
ब श्री यसोदा जी ने कीरति जी सो कही ॥ जो मे तो श्री वृषभांन
जी सो नांही डरपो ॥ तुम क्यो श्री नंदराय जी सो डरपत हो ॥ तब श्री
कीरति जी ने कही ॥ जो तुम काहे को डरपो मेरी राधा के पिता मेरें
च कहू बल नांही हें ॥ ऽत्यंत सूक्षम अंग हें ॥ ताते मेरी राधा को पि
ता तुम ने डरपत हें ॥ सो ताते तुम डरपत नांही ॥ ऽोर मेरो अं
ग ऽत्यंत सूक्षम हे ॥ सो मे डरपत हो ॥ जो यानि कहू श्री नंदराय
जी मेरो प्रांराखि लेई ॥ जो ऽब ही मेरी भुजा मरोरी हे सो ताते मे श्री
नंदराय जी के घर कबहू न जाऊंगी ॥ यह सुनि के सब ब्रजबासी
हसे ॥ ऽोर श्री नंदराय जी हसे ॥ ऽोर कीरति जी को भुजा पकरे
हते सो छोडि करी ॥ सो तब कीरति जी भुजा छुडाय के दूरि जाय
ठाढी भई ॥ सो तब सब ऽत्यंत ही हसे ॥ सो या प्रकार होरी डांडे रो
पन को खेल भयो ॥ डांडे रोप्यो ॥ सो ऽलोकिक ख्याल को सूचन
कहे ॥ पाछे ललिता जी ने श्री रेवती जी श्री बलदेव जी की बहू
रंच क दूरि ठाढी हुती ॥ सो वह होरी को कौतुक देष के हसत
हुती ॥ सो तहां ललिता ने जाय के श्री रेवती जी सो कही जो तु
म सौं को श्री यसोदा जी बुलावत हें ॥ ऽोर कहे न हे जो देषो
श्री बलदेव जी की बहू मो को पा लागन करन हूं नांही आई हे
जो ऐसी निठुर निलज होय दूरि ठाढी हें ॥ जो यह राजा की बेटी
हे ॥ सो या के हृदय में ऽभिमांन हें ॥ या प्रकार ललिता ने श्री रेव
ती जी सो कही ॥ तब श्री रेवती जी ने कही जो मो को ऽभिमांन

तो नांही हें ॥ परंतु यही डरपत हो ॥ जो जे से श्री नंदराय जी ॥ ऽोर श्री य
सोदा जी की गांठि जोरी हें ॥ सो ने से को ऊ मेरी हू गांठि जोरे तो मे कहा
करो ॥ मो को तो लाज वो होन ही लगत हें ॥ सो तब ललिता ने कही जो
तुम या बात को सोच मति करो ॥ ऐसो सामर्थ कोन की हे ॥ जो तुम सो
हांसी करेंगो ॥ ये तो ब्रजवासी ऽब ही रहे ॥ सो ऽपु सम हे हांसी करत
हें ॥ ऽोर तुम तो बडे राजा की बेटी हो ॥ हमारे श्री बलदेव जी की ब
हू हो ॥ सो श्री बलदेव जी के क्रोध को सब जानत हें ॥ ताते तुम सो
हांसी कोई न करेगो ॥ ऽोर मे तो तुम्हारे संग हे ॥ सो हांसी काहे को कर
न देऊंगी ॥ या भांति ललिता ने कही ॥ तब रेवती जी बाहरि आ
इ के ललिता के संग चली ॥ ऽोर मधुमंगल हतो ॥ ऽोर बडे सब उप
नंद हें ॥ सो तिन के मन मे कही ॥ जो तुम्हारे घर की डोकरी भाभा
हे सो तुम को ढूंढत फिरत हें ॥ तुम्हारे लोरे क ए सामिग्री लाई
हें ॥ सो सब बन मे सगरे ई ढूंढ्यो ॥ सो यह विचारि के आई है
जो उपनंद वह हहे ॥ सो उन को भूष लागी होइगी ॥ सो तुम को वे
हो न ढूंढ्यो ॥ ताते वा डोकरी को कोहोत ऐसो भयो हें ॥ सो वन मे
ललिता को मिली ॥ सो ललिता यहां लिवाय लाई हें ॥ ताते ऽब
इन की दूरि तुम चलो तो आछो ॥ तब उपनंद ने कही ॥ जो बेटा
मो को तो भूष वो होन लागी हें ॥ ताते मो को कछू सूझत नांही
हें ॥ जो मे कोन प्रकार सो चलो ॥ तब मधुमंगल ने कही जो च
लो मे लिकार ले चलो ॥ सो तब मधुमंगल को कांधो पकरि के ऊ
पनंद चले ॥ तब मधुमंगल समुझावत हें ॥ जो सुनो बाबा ऽबा
डोकरी के पास सामिग्री हे ॥ सो मे मांगि के सो मोदी को दोनो ना
हो ॥ ताते मे तुम को डोकरी को हाथ पकराय देऊगो ॥ सो बाबा की का
षमे ने तुम सामिग्री लीजो ॥ सो तब उपनंद ने कही जो तू मो को
वा डोकरी सो मिलाय दीजो ॥ मे डोकरी सो सामिग्री ले लेऊंगो ॥ ए

॥ भाव ॥
॥ ६७ ॥

सीड़ेकरीमेकहासामर्थहै ॥ जोसांमिन्नीनदेइगी ॥ सोयाप्रकारम
धुमंगलसपाश्रीरेवतीजीकेपासउपनंदकोलेआयो ॥ सोत
वघूंघटमाखिकेंरेदेषिकेउपनंदनेकही ॥ जोअरीबावरीइ
करीनेरेस्वेतनतोबारहोइगयोहे ॥ हांनटूटिगयोहे ॥ जोइनेरोस्तनतो
कद्रोघूंघटमारनोछोड्यो नांही ॥ मोकोअपवोहोतलागीहे ॥ ता
नेमोकोसांमिन्नीदे ॥ जोअबनकहावइ वेटीकौनांईलाजकर
नहें ॥ सोतवश्रीरेवतीजीअपनेमनमेडरपी ॥ जोअबहकोनमे
रेनिकटवेठ्यनहें ॥ सोतवमधुमंगलनेकही ॥ जोडोकरीवनमें
वोहोतभ्रमीहें ॥ सोताते याकेसरीरकोसुधिनाही ॥ सोताते या
केपछोमानि ॥ याकीकांखमेसांमिन्नीहे सोलेउं ॥ सोतव
उपनंदनेकही ॥ जोबेटातूयाकोहाथमोकोपकराइदे ॥ तबल
लितानेश्रीरेवतीजीकोहाथउपनंदकोपकरायदीयो ॥ और
कही ॥ जोउपनंदजीसीतसोडोकरीअमकारिमांदीहोइगईहे
हाथअपाछोगाढोपकरीयो ॥ सोतबउपनंदनेवोहोतहीऽ
गाढोहाथपकर्यो ॥ सोतवश्रीरेवतीजीनेकही ॥ जोऐसोक
ठिनहाथकोनकोहे ॥ सोतवरंचकघूंघटयेनेदेष्योसोदेखेतो
उपनंदकीदाढीस्वेतहे दिखिकेकही ॥ जोयहकोनहे ॥ पाछेललिता
सोश्रीरेवतीजीनेकही ॥ जोललितानेमोसोछलकीयोमोको
बोहोतदुःखदीयो मेरीलाजखोई ॥ सोतवललितानेकहीजो
चिंतामतिकरो ॥ होरीकेदिनहें ॥ सोतजापायकेछुडायवेको
बोहोतेरोवलकरो ॥ परंतुउपनंदनेबोहोतगाढोहाथपकर्यो
सोछूटेनांही ॥ औरउपनंदजोकहो ॥ जोवावरीडोकरीनेरीडब
रावरमोमेवलनहीहें ॥ सोतहाथछुडावनदे ॥ तवललिताने
उपनंदकेऊपरनाटकेंश्रीरेवतीजीसोगांठजोरी ॥ सोतव
उपनंदसांमिन्नीकेलीयेकांखमेहाथडारनलाग्यो ॥ तवगोपी

ग्वालसवश्रीठाकुरजीश्रीस्वामिनीजीसहितहसे ॥ पाछेश्रीठाकुर
जीश्रीबलदेवजीसोकहे ॥ जोदाऊजीतुमअपनोवहूकोवरजो ॥ जो
उपनंदविचारोबूढोडोकरासोताकेपाछेपरीहे ॥ सोउपनंदहह
सोकरतहे सोयहतुम्हारीहांसीहोतहे ॥ तबयहसुनिकेश्रीबल
देवजीउपनंदकेपासआयलाजकेमारेअपनीवहूसोतोक
छबोलेनांही ॥ औरक्रोधकरिउपनंदसोकहे ॥ जोउपनंदतुमस
वनमेवड़ेवडोकहावतहें ॥ तातेतोकोछोडनहोतहीतोमारनो
जोघराईवहूवेटीसोहांसीक्योंकरीहे ॥ याप्रकारश्रीबलदेवजी
नेउपनंदकोडरपायो ॥ सोतवउपनंदमारेडरकेकांपनलग्यो
औरकह्यो जोश्रीबलदेवजीतुममेरेऊपरक्रोधक्योंकर
तहो ॥ जोयहतोमेरीडोकरीहे ॥ सोआजनजांनेयाकोकहाभ
योहें ॥ सोतवललितानेश्रीबलदेवजीसोकह्यो ॥ जोतुमउपनंद
केऊपरक्रोधक्योंकरतहो ॥ जोयहडोकरीतोउपनंदकीव
हूहे ॥ जोउपनंदकोअपवोहोतलागीहे ॥ सोतातेइनकेपास
सांमिन्नीमांगतहें ॥ इतनेमेमधुमंगलनेश्रीकृष्णसोकह्यो
जोमेजांनतहो ॥ तुमसोश्रीकृष्णनेकहीहोयगी ॥ सोदाऊजी
तुमश्रीकृष्णकेवचनकोमलोविस्वासकरतहो ॥ वहतो
लराईकरावतहें ॥ तातेयहडोकरीतोउपनंदकीवहूहे ॥ तुम
उपनंदसोक्रोधक्योंकरतहो ॥ याप्रकारमधुमंगलने
श्रीबलदेवजीसोकह्यो ॥ जोबावाजतुममेरो अपराध
क्षमाकरीयो ॥ जोमेजान्योनहीजोडोकरीतुम्हारीवहूहे
श्रीकृष्णसोतुमसोंलराईकराईकरावतहें ॥ यहश्रीब
लदेवजीकेयहवचनसुनिकेसवव्रजवासीहसे ॥ औरश्री
रेवतीजीललितासोरिसायकेकही ॥ जोतेमेरीलाजखोई
हें ॥ पाछेउपनंदश्रीरेवतीजीकोपासंआयसोदाजीकेपा

॥भाव॥
॥८४॥

सलेगयो॥ औरकह्यो॥ जो श्रीयसोदाजी तुम मेरो डुकरीको समुझा
वो॥ जेम्हो को तो मुष वोहोत लाग्यो है॥ और यह म्हो को सांमिन्नो नांहीदेत
है॥ सोतव यह सुनि श्रीयसोदाजी घूंघट खोलि देखे तो श्रीरेवती
जीहैं॥ सोतव रेवतीजीने लाजित ह्वेय श्रीयसोदाजी सोकही॥ जो या
उपनंदने मोको वोहोत दुःख दीयो है॥ सोतव श्रीयसोदाजीने
उपनंद सोकह्यो॥ जो तुम सवनतें वड़े॥ ऐसे चतुर होइके सव
रे होइ ऐसे हो कहा॥ यह तो श्रीवलदेवजीकी वहू है॥ यह सुनि
के उपनंद लज्या पायके कह्यों॥ जो मैं जांन्यो नाहो॥ मोको मधुमं
गलकूं ठेई इननीमेरी हांसी कराई॥ सोतव श्रीठाकुरजी श्री
वलदेवजी सो कही॥ जो तुम मेरो कह्यो नांही मांन्यो उलटो मो
कोदूं तो कीयो जो देखो तुम्हारी वहू निकसी के नाही॥ तव श्रीव
लदेवजी रंचक रुखे होय क्रोधमे वोले॥ जो श्रीकृष्ण अपनेया
समयपो सोवोले मामि॥ याप्रकार श्रीवलदेवजी काहे के पाछें
श्रीदामाकी गोदमे मांथो धरिके पोटे॥ और अपनो मुषकमल
उपरनासों ढांपि लीयो॥ इतनेमे मधुमंगल सषा हूं सो श्री
नंदरायजी के घर गयो॥ सो तहां रोहिणीजी सगरी सांमिग्री
सिद्धि करि श्रीयसोदाजीको मारग जोवत हती॥ जो अव श्री
ठाकुरजी सांहि न पधारे तो आरोगाईये॥ सो मधुमंगलने आ
इके कही॥ जो तुमको श्रीयसोदाजी वेगि वुलावत है॥ आज
उन्यापनसे नभोगपर्यंत तहांही होइगो॥ ताते वेगी चलो या
प्रकार मधुमंगलने कह्यो॥ तव रोहिणीने कही॥ जो मैं तो सव
सांमिग्री सिद्धि करि राषी हैं॥ अव कैसे करो॥ तव मधुमंगल
ने कही॥ जो एक वड़ी सी गांठ वांधिके मोको देउ सो मे लेचलो
गो तुम मेरे संग चलो॥ सो रोहिणीजी एक वड़ी गांठ वांधि म
धुमंगल सो कही॥ जो यह गांठ वोहुत भारी है सो कोन प्रका

रखलेगो॥ सोतव मधुमंगलने श्रीकृष्णको स्मरण करिकें वलकरिके
गांठ मांथे पे उठाई के श्रीरोहिणीजी सों कह्यो॥ जो वेगि चलो श्रीय
सोदाजी उहां वेठी हैं॥ यह सुनि के श्रीरोहिणीजी आभूषन सावर
पहरिकें॥ ऊपर ते चादरि ओढि आछो घूंघट मारिकें॥ इतनेमे य
रके वाहिर खड़ी हावनमेंसें केन कोनि कढत न व आई॥ तव श्रीस्वांमि
नीजीने देखि के ललिता और श्रीचंद्रावलीजी सो कही॥ जो तुम
परम चतुर हो॥ सो श्रीरोहिणीजी आवत हैं॥ सो इनहूंकी हा
सीकरीचहीये॥ सोतव यह श्रीस्वांमिनीजीकी आज्ञा मानिके श्री
ललिताजी श्रीचंद्रावलीजीने हरिने श्रीरोहिणीजीको घेरि
अबीर गुलाल की अधाधुरी करि दीनी॥ इतनेही में कीरतिनेश्री
ललिताजी सो कही॥ जो मेरी सषी होइ के मो कों श्रीनंदरायजी
सोनांही वचावत हो॥ सो तुम मोको एकांत ठोर वताइ दे पाछें व
लन आईयो॥ मोको श्रीनंदरायजीसो डर लग्यो है॥ और मो
को श्रम वोहोत भयो है॥ सो तव यह सुनिके ललिताने श्रीकीर
तिजी सो कही॥ जो तुम मेरो निकुंज मंदिर है॥ सो तहां चलो जो इ
हां ऐसी सघन लता है॥ सो कोई आइ सकत नांही॥ सोतवकी
रतिजी ललिताजी के पायन परन लागी॥ और कह्यो॥ जो वेगि
मोको वहां ले चलि॥ सोतव ललिताने श्रीचंद्रावलीजी और
विसाखाजी सो कही॥ जो तुम श्रीरोहिणीजीको घेरे रहीयो मै
श्रीकीरतिजीको एकांत मे वेठाइके आवत हों॥ सो ललिताजी
ऐसे कहिके श्रीकीरतिजीको अपने निकुंजमे ले जायकें
कही॥ जो तुम श्रीयसोदाजीको भेष धरि यहां पोढि रहो॥ सो
मेरी सषी देखतो यह जांने॥ जो श्रीयसोदाजी पोढी है॥ याप्र
कार ललिताने कही॥ तव श्रीकीरतिजीने श्रीयसोदाजीको
भेष धरयो॥ पाछें ललिता अपनी सिज्या विछाइ ता पर पधरा

॥भाव॥
॥८९॥

प सांमिग्री आरोगाय सेन करातें॥ सो नव सोवत हो अमन हती
सो नेंद आइ गई॥ पाछे ललिता होरी खेल मे आई॥ सोय हमेद
श्रीठाकुरजीने पायो॥ जो श्रीकीरतिजी ललिताजी कौनि कुंज
मे पोढे हें॥ सो तब श्रीठाकुरजी श्रीनंदरायजी सो कहे॥ जो बावा तु
मको अम मब होन भयो होइगो॥ तातें तुम चलो जोर कहुं त होरखेला
कुं॥ तहां तुम निर्भयता सो वेठो॥ सो तब श्रीनंदरायजी श्रीठाकुर
जी सो कहे॥ जो बेटा तुमको ले चलि॥ याप्रकार श्रीनंदरायजीको
संग ले श्रीठाकुरजी ललिताकी कुंज गहनी॥ तहां केलाकी कदम
खंडी में आए॥ तहां नाना प्रकार के सघन लता हें॥ फलफूलेन
केकरें बन के रास मंडल अनेक हें॥ नाना प्रकार के पक्षी सब्द
करत हें॥ सो ताके भीतर निकुंज मंदिर हें॥ सो तहां श्रीठाकुर
जी श्रीनंदरायजी को ले जाइ पिता पुत्र नाना प्रकार के पक्षीन
द्व करत हें॥ सो ताके भीतर निकुंज मंदिर हें॥ सो तहां श्रीठाकु
रजी को ले जाय पिता पुत्र नाना प्रकार की सांमिग्री आरोगे
सो तब श्रीनंदरायजी देखे तो तहां सेज उपर बिछाउ सो बने हें
सो तब श्रीनंदरायजीने श्रीठाकुरजी सो पूछ्यो॥ जो यह से
ज पर कोन सोवत हें॥ तब श्रीठाकुरजी कहे॥ जो मे याको
अमवो हो तभयो हें॥ सो सांमिग्री आरोगाय पोढे हें॥ सोत
ब श्रीनंदरायजी मुख चुंबन करिके कह्यो॥ जो तुम भले ठोरला
ये॥ सो तब श्रीठाकुरजी श्रीनंदरायजी सो कहे॥ जो तुमारो
मन होय तो सेन करीयो॥ तुमारो मन होइ तो वेठे रहीयो इ
हां कोई जांनत नांही॥ जो तुम निरभयता सो वेठो॥ मे अब
होरी के खेल मे जात हो॥ तब श्रीनंदरायजीने जांन्यो जो बाल
कको मन षेल मे वो होत रहेत हें॥ यह जांनिके श्रीनंदराय
जी श्रीठाकुरजी सो कहे॥ जो भले बेटा तुम खेल मे जाउ पर

होर काऊ को मति बतैयो॥ याप्रकार तुरत हो श्रीठाकुरजी षेल
मे आए हें॥ काहे ते होरी षेल के मुख्य श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमि
नीजी हें॥ जो दोउ न मे ते काउ एक होर ठोर पधारे तो षेल
आछी भांति बने नांही॥ ताते श्रीठाकुरजी वेगि ही खेल मे प
धारे॥ तब ललिताजीने जांन्यो जो कुंज मे श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमि
नीजी पधारे हें श्रीनंदरायजी सहित॥ सो श्रीठाकुरजी तो यहां
आये॥ और श्रीनंदरायजी तो यहां नांही आये॥ सो कहा कार
न हे॥ तब ललिता आपनी निकुंज मे फेर चली॥ सो तब श्रीठाकु
रजी ने सेन मे ऐं कह्यो॥ जो तुम आपनी निकुंज मे फिरि क्यों जात हें जो
वहां जाय के तुम मेरे षेल मति बिगारियो॥ सो तब ललिताने क
ह्यो॥ जो मे तुमारो खेल और रम्य करि आउंगी॥ मे तुमारो भ्रम न
ना होइगो सोई करोंगी॥ तुमारो आग्याकार रही हों॥ और यसं
श्रीनंदरायजी सो सांमिग्री आरोगि जलपान करि सिज्या कीनि
करत जाय देखे तो वहां कोई नही हें॥ रंचक मेह सेन करि लेऊ
पाछे श्रीनंदरायजी जहां श्रीकीरतिजी सिज्या पर सेन कीये
हते॥ सो तहां श्रीयसोदाजी जानि॥ श्रीनंदरायजी इहां कसो
रसेन कीयो॥ सो श्रीनंदरायजी श्रमन हते ताते सेन करत
होतनि निंद्रा आय गई॥ इतने श्रीललिताजी तहां आइ देखे तो
श्रीनंदरायजी और श्रीकीरतिजी एक सिज्या पर सेन
कीये हें॥ सो तब ललिताजी हसती॥ सो श्रीकीरतिजी के केस को
जूरा खोलि श्रीनंदरायजी की चुटीया खोलि दोउ मिलाइ
के आछी गांठ पार कीडोरी सो बांधि पाछे श्रीकीरति जी की
साडी ले श्रीनंदरायजी के उपरना सो गांठि बांधि याप्रकार
दोउन को एकबार करि उठायके होरी खेल मे आई॥ सो तब श्री
ठाकुरजी सेन मे ललिता सो पूछे॥ जो तुम मेरो खेल बिगार